॥ श्रीः ॥

बालतन्त्रम् ।

(नानाविधौषधोपचारप्रयोगसंदर्भितम्)

विद्वद्वरकल्याणवैद्यविरचितम् ।

रोहतकजिलान्तर्गतबेरीनिवासिपण्डितवर-

नन्दकुमारराजवैद्यविरचितया,

भाषाटीकाया समेतम् ।
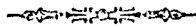
तदेतत्

क्षेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९५७, शके १८२२.

अथ बालतंत्रस्थविषयानुक्रमणिका ।

अनुक्रमणिका।

इति बालतंत्रस्थविषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीः ॥

अथ बालतन्त्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।

विघ्नव्रततिविध्वंसकारिणं दुःखहारिणम् ॥ कल्याणोऽहं नमस्कुर्वे विघ्नेशं ग्रंथसिद्धये ॥ १ ॥ प्रयोगसारप्रमुखागमेषु प्रोक्तेषु शास्त्रेषु च सुश्रुताद्यैः ॥ यदुक्तमेकत्र नियुक्तमस्मिन् ग्रंथे मया तत्खलु बालतंत्रे॥२॥अष्टौ दोषास्तु नारीणां नवमः पुरुषस्य च ॥ रक्तात्पित्तात्तथावाताच्छ्लेष्मणः संनिपातकात् ॥३॥ ग्रहदोषविकारेण देवतानां प्रकोपनात् ॥ अभिचारकृताच्चैव रेतोहीनः पुमांस्तथा ॥ ४ ॥ काकवंध्या मृतवत्सा गर्भस्राव्यस्तु याः स्त्रियः ॥ आदिवंध्याश्च गर्यंते दोषैरेभिर्नचान्यथा ॥ ५ ॥

दोहा—इष्ट देवके चरणको, नुतके वारंवार ॥
बालतंत्र भाषा करूं, संस्कृतके अनुसार ॥ १ ॥
जिले रोहतक वेरीपुरी, है गोहमरोग्राम ॥
पंडितनंदकमारजी, वैद्य हमारो नाम ॥ २ ॥

वार्तिक भाषा—विघ्नोंके विस्तारोंके नाश करनेवाले दुःखोंके हरनेवाले एतादृश विघ्नोंके ईश गणेशजी महाराजको ग्रंथकी

आदिमें कल्याण नामक मैं वैद्य नमस्कार करताहूं किसवास्ते ग्रथकी सिद्धिके वास्ते अर्थात् निर्विघ्नतासे समाप्तिके वास्ते ॥ ॥ १ ॥ सुश्रुतादिक मुनियोंके कहे हुए प्रयोगसारसे आदि लेके बहुत तंत्र हैं उन्होंमें जो सार सुश्रुतादिकोंने कहाहै सोई सार इस बालतंत्रग्रंथम हम नियोजना करते हैं ॥ २ ॥ स्त्रियोंके आठ दोपहोते हैं और नवमा दोप पुरुपके होता है रक्तसे १ पित्तसे २ वातसे ३ कफसे ४ संनिपातसे ५ ग्रहके दोपसे ६ देवता ओंके कोपसे ७ अभिचारसे अर्थात् गुरु वृद्ध देवताओंके शापसे ८ ऐसे आठ प्रकारसे स्त्रियोंके विकार होते हैं और पुरु-पके वीर्यहीनताका एक दोप होता है-ऐसे नव विकारोंसे संतानका अवरोध होताहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ अब स्त्रियोंके वंध्यापनके तीन भेद और कहते हैं प्रथम काकवंध्या १ जिस स्त्रीके एक संतान होकर फिर नहीं हो. उसको काकवंध्या कहते हैं दूसरी मृतवत्सा २ जिसके संतानहो होके मरजावैं उसको मृतवत्सा कहते हैं. तीसरी गर्भस्रावी ३ जिस स्त्रीके गर्भ स्थित हो हो कर स्रवजावे गर्भ पूरा न होय. उसको गर्भस्रावी कहते हैं. ऐसी तीन प्रकारकी वंध्या आठ प्रकारकी वंध्या ओंसे न्यारी हैं. और एक आदिवंध्या जिसके गर्भमात्रभी स्थित नहो. ये सब वंध्या अपने उदरके दोपसे होतीहैं और कारणसे नहीं होतीहैं ॥ ५ ॥

पुष्पंतु जायते यस्याः फलंचापि न विद्यते ॥ तस्या दोपविकारांश्च ज्ञात्वा कर्म्म समारभेत् ॥६॥ यस्याः पित्तहतं पुष्पं प्राज्ञस्तदुपलक्षयेत् ॥ पक्वजंबूफल[illegible] ॥

कारं कृष्णं स्रवति शोणितम् ॥७॥ कटिशूलं भवे-
त्तस्या उदरं परिदह्यते ॥ प्रदरं च करोत्युष्णमेतत्पि-
त्तस्य लक्षणम् ॥८॥ प्रत्यौषधं प्रवक्ष्यामि येन गर्भोऽ
भिजायते॥ उत्पलं तगरं कुष्ठं यष्टीमधुकचंदनम् ॥
एतानि समभागानि छागीक्षीरेण पेषयेत् ॥९॥ पिबे
न्नारी त्रिरात्रं वा यावत्स्रवति शोणितम्॥ततो योन्यां
विशुद्धायामिमांदद्यान्महौषधीम् ॥ १० ॥ लक्ष्मणां
क्षारसंयुक्तां नस्ये पाने प्रदापयेत् ॥ तेन सा लभते
पुत्रं रूपवंतं महाकविम् ॥ ११ ॥

भाषा–जिस स्त्रीके फूल आवे फल नहीं लगे अर्थात् ऋतु-
मती होवे. गर्भाधान नहींहो उसका आर्तव दूषित होताहै. प्रथम
उसके विकारोंको देखके पश्चात् चिकित्सा करनी चाहिये ॥
॥ ६ ॥ जिस स्त्रीका फूल पित्तसे दूषितहै उसका आर्तव वैद्यने
देखना चाहिये. जैसा पका हुवा जामुनका फल होताहै ऐसा काला
रुधिर ऋतुकालमें योनिद्वारा स्रवै ॥ ७ ॥ और कटीमें शूल हो.
पेटमें जलनहो हाथ पैर गरम रहें रुधिर गर्म गिरे इतने लक्षण
पित्तदूषित आर्तवके हैं ॥ ८ ॥ अब इसकी औषध कहते हैं,
जिस्से यह विकार शांतहो. और गर्भ स्थितहो.—कमलगट्टा, तगर.
कूठ, मुलहटी, सफेदचंदन, ये द्रव्य सब समान लेके कूटकर
बकरीके दूधमें पीसके कपड़ासे छानके तीन दिन ऋतुकालमें
स्त्री पान कर या जितने दिन आर्तव जारी रहे उतने दिन पर्य्यंत
करे. इस्से योनि शुद्ध होजानेसे पीछे इस महौषधी

को दे ॥ ९ ॥ १० ॥ लक्ष्मणा जड़ीको गौके दूधमें पीसके छानके सूंघे और पीवे दिन १२पर्य्यंत ऐसे करनेसे स्त्री रूपवाला और गुणवाला पुत्रको उदय करै ॥ ११ ॥

यस्यावातहतंपुष्पंफलंतस्यानविद्यते ॥ अतिसूक्ष्मतरंरक्तंकुसुंभोदकसन्निभम् ॥ १२ ॥ कटिशूलं भवेत्तस्यायोनिशूलंतथाज्वरम् ॥ १३ ॥ सहकारस्यमूलंचमूलंव्याघ्रीभवंतथा ॥ बृहतीजंबुमूलेच क्षीरेणालोड्यसापिवेत्॥१४॥ सप्ताहंपंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणां क्षीरसंयुताम्॥१५॥ नस्येपानेचदातव्यंतेनसालभते सुतम् ॥ यस्याः श्लेष्महतं पुष्पं तस्यानापि भवेत्फलम् ॥ १६ ॥ बहुलंपिच्छिलंरक्तंनातिरक्तं वहेत्तदा ॥ नाभिमंडलमूलेतुशूलंभवतिदारुणम् ॥ १७ ॥ अर्कमूलंप्रियंगुंचकुसुमंनागकेसरम् ॥ बलाचातिबलाचैवछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥ १८ ॥ त्रिफलात्रिकटुंचैवचित्रकंसमभागिकम् ॥ अजाक्षीरेणसंपिष्टाचालोड्ययुवतीपिबेत् ॥ १९ ॥ त्रिरात्रं पंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणांनसिदापयेत् ॥ २० ॥

भाषा–जिस स्त्रीके वायुपीडित फूल आवै उसके फल नहीं लगे अर्थात् गर्भ धारण नहीं करै अब उसके लक्षण कहते हैं खून बहुत सूक्ष्म स्रवै रक्त कुसुंभके रंग सदृश आवे ॥ १३ ॥

और कटिमें शूल रहै अर्थात् दर्द रहै और योनिमें शूल रहै ज्वर रहे इतने लक्षण वायुपीडित ऋतु आनेके हैं- ॥ १३ ॥ अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं । आंबकी जड़की छाल दोनों कटेलियोंकी जड़ जामुनक जड़की छाल यह सम मात्रा लेकर गौके दूधमांह पीसकर वह स्त्री पीवै ॥ १४ ॥ पांच दिन तथा सात दिन यावत् रक्त स्रवै तावत् पीवै पीछे योनि शुद्धहो- नेसे लक्ष्मणा जड़ी दूधके साथ पीवे और सूंघे यह उपाय ॥ १५॥ करनेसे वह स्त्री रूपवान् गुणवान् पुत्रको प्राप्तहो ॥ और जिस स्त्रीके कफ विकारसे पीडित फूल आवे उसकेभी फल नहीं लगता है॥ १६॥अब उसके लक्षण कहते हैं रक्त चिकणा और घणा पड़े और बहुत लाल नहीं अर्थात् प्याजी रक्त पडे और नाभिके विषय शूल दारुण रहे इतने लक्षण कफपीडित ऋतु आनेमें होते हैं ॥ १७ ॥ अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं, आककी जड़, महदी, लोंग, नागकेसर, खरटीकी जड़, गंगेरणकी छाल, यह सब औषपधी सममात्रा लेके बकरीके दूधमें घोटके वह स्त्री पीवे ॥ १८ ॥ अथवा हरड़, बहेड़ा, आँवला, सूंठ, मिरच, चीता, यह सब ओषधी सममात्रा लेके बकरीके दूधमें पीसके घोल छानके पीवे. ॥ १९ ॥ तीनदिन ३ तथा पांचदिन ५ जितने खून स्रवे उतने दिन पीवे, फेर योनि शुद्ध होनेसे लक्ष्मणा जडी बकरीके दूधमें घोटके पीवे और सूंघे उस स्त्रीके गर्भहो रूपवान् गुणवान् पुत्रहो ॥ २० ॥

संनिपातहतं पुष्पं ज्वरस्तीव्रश्च जायते ॥ शोणितं

तुभवेत्कृष्णंचात्युष्णंपिच्छिलंबहु ॥२१॥ कुक्षिदेशे तथायोन्यांकट्यांशूलंचजायते॥गात्रभङ्गोभवेत्तस्या बहुनिद्राचजायते ॥ २२ ॥ गंधर्वहस्तमूलंच सह-कारंत्रिवृत्तकम् ॥ उत्पलंतगरंकुष्टंयष्टीमधुकचंद-नम्॥ २३ ॥अजाक्षीरेणपिष्टंतुसप्तरात्रंततःपिबेत् ॥ रजोहात्पंचरात्रंचयावत्स्रवतिशोणितम् ॥ २४ ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांश्वेतार्कक्षुद्रिणींतथा ॥ लक्ष्म-णांवंध्यककोर्टीश्वेतांचगिरिकर्णिकाम् ॥२५ ॥ गवां क्षीरेणसंपिष्यनसिपानंप्रदापयेत् ॥ दक्षिणेलभतेपुत्रं वामेपुत्रींनसंशयः ॥ २६ ॥

भाषा-जिस स्त्रीके सन्निपातदोषसे दूषित ऋतु आवे उसके लक्षण कहतेहैं वह स्त्री ऋतुमती हो जब बड़ा तीव्र ज्वर होय रक्त काला आवे और बहुत गर्म और चिकना आवे ॥ २१ ॥ और कूखमें योनिमें कटिमें शूल हो अर्थात् पीडाहो और हडफोड़ रहै नींद जादा आवे यह लक्षण त्रिदोष विकार करके ऋतु आनेमें होते हैं ॥ २२ ॥ अब उसका जतन कहतेहैं, अरंडकी छाल, आंमकी छाल, निसोत, कमलगट्टा, तगर, कूठ, मुलहटी सफेद चंदन ॥ २३ ॥ यह सब समान औषधी लेकर, बकरीके दूधमें पीसके सातदिन ७ पीवे अथवा जिस रोज ऋतुमती हो, उस रोजसे ५ पांच रोजतक पीवे, अव्वल यह मतहै जहांतक खून गिरे तहांतक पीवै ॥ २४ ॥ फिर योनि शुद्ध होनेपर, सफेद आंककी जड़ छोटी खटाईकी जड, लक्ष्मणा जड़ी, बांझक-

कौड़ी, सफेद फूलकी विष्णुकांता ॥ २५ ॥ यह सब समान औषधी लेके गौके दूधमें घोट छानकर नासिका करके वैद्य प्यावै दाहिनिनासिका करके पीवे तो पुत्र होवे और बामीतरफकी नासिकासे पीवे तो पुत्री होय इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ २६ ॥

पूर्वोक्तदोषहीनायाग्रहदोषोनसंशयः ॥ जन्मपत्रींस-मालोक्यग्रहपूजांसमाचरेत् ॥ २७ ॥ व्रतंतयाप्र-कर्तव्यंमध्यमस्यग्रहस्यच ॥ विकारेणयदावंध्या स्फुटंचिह्नंतदाभवेत् ॥ रोगनाशेभवेद्गर्भोनात्रकार्या विचारणा ॥ २८ ॥ देवताकोपवंध्यायास्तस्याश्चि ह्नंवदाम्यहम् ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यामावेशोवेदना तथा ॥ २९ ॥ गोत्रदेवींसमाराध्यदुर्गामंत्रंततोजपे-त् ॥ गणनाथंसमभ्यर्च्यपुत्रंसालभतेध्रुवम् ॥ ३० ॥ कृत्याकृतंयदादोषंशरीरेवेदनाभवेत् ॥ दुर्गामंत्रंज-पेन्नारीततोगर्भोभवेद्ध्रुवम् ॥ ३१ ॥ अन्यद्वंध्याष्टकं वक्ष्येसर्वतंत्रेषुगोपितम् ॥ त्रिपक्षीशुभ्रतीसज्ञात्रिसु खीव्याघ्रिणीवकी ॥ ३२ ॥ कमलीव्यक्तिनीचैवता-सांचिह्नंवदाम्यहम् ॥ त्रिपक्षीनामयावंध्यात्रिपक्षेषु-ष्पिताभवेत् ॥ ३३ ॥

भाषा–पूर्व कहे हुए दोष रक्त, वायु, पित्त, कफ, सन्निपात इन दोषोंके लक्षणों करके रहित स्त्रीहो और गर्भधारण न करे उसके ग्रहदोष होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं. तब उसकी या उसके पतिकी जन्मपत्रिका देखकर अवरोधक ग्रहका जप पूजन

दान हवन करावे तब सन्तान होवे ॥ और जो मध्यम ग्रहहो उसका व्रत उस स्त्रीने करना चाहिये ॥ २७ ॥ और जिस विकार करके वंध्या होती है उस विकारके लक्षण प्रकट होते हैं फिर उस विकारकी चिकित्सा करनेसे रोग निवृत्त होनेसे गर्भ स्थित होजाता है इसमें कुछ जादा विचार नहीं है ॥ २८ ॥ और जो स्त्री देवताके कोपसे वांझ हुई हो तिसके लक्षण कहतेहैं अष्टमीने या चतुर्दशीने उसके शरीरमें वेदना हो या इन तिथियोंने ऋतुमती हो पीडा हो ॥ २९ ॥ तो उस स्त्रीने गोत्रदेवीका आराधन करना चाहिये दुर्गापाठ कराना चाहिये गणेशजीका व्रत संकटा चतुर्थीकाव्रतविधान करे तब वह स्त्री पुत्रको प्राप्त हो निश्चय करके इसमें सन्देह नहीं ॥ ३० ॥ और कीसी स्त्रीनें स्त्रीपर कुछ करा दिया हो उसका जतन यह है ६ छः मास पर्यंत दुर्गा पाठ करावे और देवीके प्रक्षालनके जलसे माथा नाभी कुचा धोवो तो दोष मिटे और गुरुदेवके शापसे संतान नहीं होगा तो गुरुदेवकी पूजा भक्तिकर आशीर्वाद लेना और मनोवांछित भोजन वस्त्र दान दीजे तो सन्तान होय और जीवे इतने लक्षण उपाय आठ प्रकारकी वन्ध्याके कहे हैं ॥ ३१ ॥ अब औरभी आठ प्रकारकी वंध्या कहते हैं जो सर्व तन्त्रोंमें गुप्त हैं अब उनके नामभेद लक्षण जतन जुदे २ कहते हैं त्रिपक्षी १ शुभ्रती २ सज्या ३ त्रिमुखी ४ व्याघ्रिणी ५ वक्री ६ कमली ७ व्यक्तिनी ८ यह आठ प्रकारकी वंध्या हैं अब इन्होंके न्यारे न्यारे लक्षण कहत हैं जो स्त्री तीन पक्षमें ऋतुमती हो उसको त्रिपक्षी कहतेहैं॥ ३२॥ ३३

द्वेजीरकेश्वेतवचाककौंटचाश्वफलंसमम्॥ तण्डुलो-
दकसंपिष्टंचोत्थितासूर्यसन्मुखी ॥ ३४ ॥ त्रिदिनंच
पिबेन्नारीदुग्धभक्तंचभोजनम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नार्याः
सत्यमेतन्नसंशयः ॥ ३५ ॥ शुभ्रतीनामयावंध्याचि-
ह्नंतस्यावदाम्यहम् ॥ गात्रेसंकोचतेनित्यंदेहेचैववि-
वर्णता ॥ ३६ ॥ गर्भस्तस्यानजायेतसज्जावंध्याच
कथ्यते॥अप्रमाणैश्चदिवसैस्तस्याःपुष्पंप्रजायते॥३७॥

भाषा–अब त्रिपक्षीकी चिकित्सा लिखते हैं स्याहजीरा, सफेदजीरा, खुरासानीवच, ककौड़ाका फल यह औषधी सर्व समान लेके चावलोंके पानीसे पीसके प्रभात समय स्नान कर सूर्यके सामने खड़ी होके दिन ३ तांई पीवे और दूध चावल भोजन करे तो उस स्त्रीके अवश्य गर्भ रहे. यह सत्य वार्ता है इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अब शुभ्रती नामक वंध्याके लक्षण कहते हैं गात्र सकुचारहै और देहका रूप रंग विवर्ण हो जावे ॥ ३६ ॥ शुभ्रती नामक वंध्याके गर्भ स्थित नहीं होवेहै इस ग्रन्थकी यह आम्नाय है और तंत्रोंमें शुभ्रती वंध्याका इलाज लिखाहै सो यहांभी लिखते हैं नागकेशर टंक ३ हाऊबेर टंक ३ मोरशिखा टंक ३ मिसरी टंक १८ यह औषधी पीस कपड़छानकर पुड़ी टंक३तीनकी बनावे प्रातःकाल स्नानकर सूर्य सन्मुख खड़ी होय एक वर्णी गायके दूधसे पुड़िया लेवे चावल दूधका भोजन करे और वस्तुका त्यागकरे शुभ्रती वंध्याके संतान हो ॥ अब सज्जानामक वंध्याके लक्षण कहते हैं ! सज्जा व-

ध्याके ऋतु अप्रमाणित दिनोंमें आवे है कभी ऋतु देरमें आवे कभी ऋतु जलदी आवे उस स्त्रीको सज्ञा वन्ध्या कहतेहैं ॥ ३७ ॥

जीरेवचांसमंगांचगृह्णीयाच्छुभवासरे ॥ कर्कोटींशृं-खलाकारींपिष्ट्वातंडुलवारिणा ॥ दिनत्रयंयतानारी सूर्यस्यसम्मुखीपिवेत् ॥ २८ ॥ सदुग्धंपष्टि-कान्नंचभक्षयेद्दिनसप्तकम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नाम्न्यांस्त्रि-मुखीनामकथ्यते ॥ ३९ ॥ तस्याश्चिह्नंप्रवक्ष्या-मिमैथुनेसलिलंस्रवेत् ॥ भोजनेमैथुनेलोल्यंगर्भस्त-स्यानविद्यते ॥ ४० ॥ व्याघ्रिण्याउत्तरेकालेऽपत्य-मेकंप्रजायते ॥ त्रिपक्षयुक्तंप्रदातव्यमौषधंपुत्रदा-यकम् ॥ ४१ ॥ वक्ष्यसृक्स्रवतेश्वेतंदशमेऽष्टमके-दिने ॥ असाध्यासासुसाध्यावाऔषधंनैवकारयेत् ॥ ४२ ॥

भाषा—अब सज्ञा वंध्याकी चिकित्सा कहतेहैं स्याह-जीरा, सफेदजीरा, खुरासानीवच मँजीठ, ककोड़ी, हडजोड़ी, यह दवा शुभदिन सब समानलेके चावलोंके जलमें बारीक पीस छानकर प्रातःकाल स्नानकर सूर्यसामाने खड़ीहो दिन ३ तीनतक जतनसे नारी पीवे ॥ ३८ ॥ दूध सांठी चावल दिन ७ भोजनकरे इससे सज्ञानाम वंध्याके गर्भ रहे संतान होवे अब त्रिमुखी नाम वंध्याको कहतेहैं ॥ ३९ ॥ त्रिमुखी वंध्याके लक्षण कहतेहैं मैथुन समयमें भोग करते योनिसे जलस्रवै और भोजनसे और मैथुनसे तृप्त नहो, भोजन मैथुनमें चित्त बहुत राखै, यह लक्षण त्रिमुखीवंध्याके हैं उसके गर्भ स्थित नहीं

होताहै ॥ ४० ॥ अब व्याघ्रिणी वंध्याके लक्षण कहतेहैं जिस स्त्रीके एक संतान अवस्था चढ़कर हो दूसरी होवे नहीं उसको व्याघ्रिणी वंध्या कहतेहैं अब उसकी चिकित्सा यहहै कि जो त्रिपक्षी वंध्याकी औषधी कहीहैं सोई पुत्रकी देनेवाली औषधी देनी चाहियें ॥ ४१ ॥ अब वकी नाम वंध्याका लक्षण कहतेहैं वकी वंध्याके सफेदखून धातुसदृश आठवें दशमें दिन गिरे उसको वकी वंध्या कहतेहैं यह असाध्य होतीहै इस वंध्याकी औषधी वैद्य न करे ॥ ४२ ॥

सलिलंस्रवतेयोन्याःकमलिन्यानिरंतरम् ॥ असाध्या साचविज्ञेयाऔषधंनैवकारयेत् ॥ ४३ ॥ व्यक्तिनी नामवंध्यायाःप्रमेहोभवतिस्फुटम् ॥ रक्तापामार्ग- जंबीजंशर्करामर्द्दकीफलम् ॥ ४४ ॥ औषधीर- त्नमालांचगोदुग्धेनप्रपेषयेत् ॥ त्रिसप्तदिवसंपीत्वा प्रमेहंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४६ ॥ कृष्णागुरुंकेसरञ्च ककौटींसफलांतथा ॥ द्वेजीरकेसवत्सागोक्षीरेणा- लोडयसापिबेत् ॥ ४६ ॥ दिनत्रयंदुग्धषष्टिभो- जनंगर्भधारकम् ॥ लक्षणानिपरिज्ञायह्यौषधींका- रयेत्सुधीः ॥ ४७ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृतबालतंत्रे षोडशवंध्याप्रती- कारो नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

भाषा—अब कमलिनी वंध्याके लक्षण कहतेहैं कमलिनी वंध्याकी योनिसे निरंतर पानी झराकरे उस स्त्रीका वंध्यात्व

असाध्य होताहै उसकी औषधी वैद्यकरे नहीं उसके संतानहोनी असंभवहै ॥ ४३ ॥ अब व्यक्तिनी वंध्याके लक्षण कहतेहैं । व्यक्तिनी वंध्याको प्रकटतासे प्रमेह होताहै श्वेतधातु नित्य गिरतीरहै सिद्धान्त यह वार्ताहै कि स्त्रियोंके प्रमेह होता नहींहै और यहां प्रमेह लिखा इसका यह तात्पर्यहै सोमनामक प्रदर होजाताहै अब इसका जतन यह है कि लाल चिरचिराके बीज मिसरी आँवला रतनजोत यह औषध सर्वसमान लेके गौके दूधमें पीसके छानके दिन २१ तक पीवे तो व्यक्तिनीका प्रमेह निश्चयकरके दूर होजावे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ फिर प्रमेह दूर होनेपर काला अगर, केसर, ककोड़ा, मोरशिखा, स्याहजीरा, सफेदजीरा यह सब समान औषधी लेके बच्छावाली गौके दूधमें पीस छानकर दिन तीन ३ पीवे ॥ ४६ ॥ तीन दिन यह गर्भधारण करनेवाली औषधीका सेवनकरे और दूध चावलका भोजनकरे, अवश्य गर्भ रहै, संतानहो, इस बालतंत्र ग्रंथमें सोलह प्रकारकी वंध्या कहीहैं तिन्होंके लक्षण देखके विचारके वैद्यवर औषधीकरे तिससे यशको प्राप्तहो ॥ ४७ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां प्रथमः पटलः॥१॥

पूर्वोक्तचिह्नहीनानांप्रतीकारंवदाम्यहम् ॥ द्रेजीरकेश्वेतवचावटपिप्पलवंदकौ ॥१॥ शृगालकंटरोमाणिकर्कोटीफलमूलके॥सहस्रमूलींसवत्सागोक्षीरे-

णाथदिनत्रयम् ॥ २ ॥ सूर्यस्यसम्मुखंपीत्वाक्षरिष-
ष्टिकभोजनात् ॥ गर्भोभवतिवंध्यायाध्रुवमस्मिन्नसं-
शयः॥३॥पुष्येवाशततारायांशंखपुष्पींसमाहरेत् ॥
पिष्ट्वातद्रसमादायऋतुस्नाताचतात्पिबेत् ॥ वंध्या
गर्भंदधात्याशुनात्रकार्याविचारणा ॥ ४ ॥ श्वेतकु-
लित्थसंभूतंमूलंनागबलोद्भवम्।अपराजितामृतुस्ना-
तागोदुग्धेनसमंपिबेत् ॥ दिनत्रयंतथासतगर्भोभव-
तिनान्यथा ॥ ५ ॥ अश्वगंधाभवंमूलंगोघृतेनसम-
न्वितम् ॥ ऋतुस्नातापिबेन्नारीत्रिदिनैर्गर्भधारकम् ॥६॥

भाषा—अब पूर्वपटलमें कही हुई जो वंध्याहैं उन्होंके लक्षणों-
करके रहित वंध्याओंका और प्रतीकार कहतेहैं. सफेदजीरा,
स्याहजीरा, खुरासानी वच,बड़की डाढी, पीपलकी डाढ़ी, स्याल-
केगलेका केश, ककोड़ीकी जड़ और फल, शतावर, यह सब
दवा समान लेके कूट कपड़छानके ६ मासे बच्छावाली गौके
दूधकी साथ दिन ३ तक लेवे ॥ १ ॥ २ ॥ स्नानकर सूर्यके
सन्मुख ऊभी होय पीवे और दूध चावलका भोजन करे तो
वंध्या स्त्रीके गर्भ स्थित हो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ३ ॥ पुन-
रुपायः । पुष्यनक्षत्रमें अथवा शतभिषानक्षत्रमें धोलफूलीको
पंचांगसमेत लावे, पीसके उसका रस निकालके ऋतुमती स्त्री
स्नान करके पीवे तो वह वंध्या शीघ्र गर्भको धारण करे । इस-
में कुछ संदेह नहीं ॥ ४ ॥ पुनरुपायः १ और तंत्रको लिखतेहैं.
मोरशिखाजड़ीको प्रथम दिन संध्याको नोत आवे. अगले दिन

प्रातःकाल ऐसा योगहो पुष्यनक्षत्र आदित्यवार अथवा हस्त नक्षत्र आदित्यवार ऐसे योगके दिन उपाड लावे फिर पीसकर एकवर्णी गौके दूधके साथ ऋतुस्नानकर सूर्य सन्मुख खड़ी होके थाले केशां आलेकपडां यह औषधी लेवे दुग्ध चावलका भोजनकरे वंध्याके गर्भ रहे संतान हो॥पुनरुपायः॥ सफेद कुलथी गंगेरणकी जड़की छाल, अपराजिताकी जड यह सब समान औषधी ऋतुस्नान करके कपिला गौके दूधकी साथ पीवे दिन तीनतक तथा दिन सात ७ तक तो वंध्या स्त्रीके गर्भरहे संतान- हो ॥ ५ ॥ पुनरुपायः ॥ असगंध नगौरी कूट कपड़छान करके गौके घीमें मिलाय ऋतुस्नानकर दिन ३ चाटे तो वंध्यास्त्रीको गर्भरहे संतान होवे ॥ ६ ॥

सुश्वेतकंटकीमूलंतन्मयूरशिखाभवम् ॥ त्र्यहंगोपय-
सानारीपिवेद्गर्भोभवेद्ध्रुवम्॥७॥बीजपूरस्यबीजानि
गोदुग्धेनचपेपयेत् । पिवेद्गर्भोभवेन्नार्यास्त्रिदिनंपाष्टि-
कादनात् ॥ ८ ॥ मेषीदुग्धीभवंमूलंगोदुग्धेनचसं-
पिवेत् ॥ ऋतुत्रयेततोगर्भोभवत्येवनसंशयः ॥ ९ ॥
त्रिफलापिप्पलीद्राक्षालोध्रंजीर्णोगुडस्तथा ॥
वर्तिःकृतायोनिमध्येक्षिप्तागर्भकरीमता ॥ १० ॥
पिप्पलीदेवतादारुलाक्षागुग्गुलुनिर्मिता ॥
वर्तिकायोनिमध्येतुक्षिप्ताशोधनकारिणी ॥ ११ ॥
शुंठीमुस्ताहरिद्रेद्वेवलाहिंगुमिसीपुरम् ॥
एषांवर्तिःकृता योनौक्षिप्ताशोधनगर्भकृत् ॥ १२ ॥

भाषा–सफेद कटेलीकी जड़ मोरशिखाकी जड़ इन औष-धियोंका चूर्णकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री दिन ३ पीवे तो निश्चय गर्भ रहे और संतानहो ॥ ७ ॥ पुनरुपायः ॥ विजौराके बीजोंने गौके दूधमें पीसे. फिर दूधमें छानके दिन ३ वंध्या स्त्री पीवे. और सांठी चावलका भोजन करे गर्भ स्थितहो संतानहो ॥ ॥ ८ ॥ पुनरुपायः ॥ मेंढासिंगी और दूधीकी जड़ ये औषधी कूट कपड़छानकरके गौके दूधसे दिन ३ वंध्यास्त्री ऋतुमतीहो उस समय पीवे तो गर्भस्थितहो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ९ ॥ अब गर्भ धारण करनेवाली वत्तियोंको कहतेहैं. हरड़े बडी, बहेड़ा, आंवला, पीपल, मुनक्कादाख, लोद, पुराना गुड़ इन औषधियोंको कूट कपडछान करके फिर जलमें पीसके कपड़ाके दवा लगाके वत्ती ३ अँगूठा समान मोटी आठ अंगुल लंबी वनाके ऋतु सम-यमें योनिमें रक्खे योनि शुद्ध हो कोठ शुद्धहो स्त्री गर्भधारण करे संतानहो ॥ १० ॥ अन्या वर्तिः ॥ पीपल, देवदार, लाख, गुग्गुल इन दवाइयोंकी वत्ती करके अंगुल ८ की योनिमें रक्खे तो योनि शुद्ध हो. गर्भधारण करे. संतानहो ॥ ११ ॥ अन्या वर्तिः ॥ सूंठ, नागरमोथा, हलदी,दारुहलदी, खरैंटी,हींग,सौंफ, गूगल य औषधी सब समान लेके बडी बारीक पीसके कपड़ापर लगायके वत्ती बनायके योनिमें रक्खे तो योनि शुद्धहो गर्भस्थितहो ॥ १२ ॥

गंधकंशंखचूर्णञ्चसमात्रांमनःशिलाम् ॥ जलेनसह संपिष्यनिक्षिपेद्योनिमंडले ॥ १३ ॥ वेदनाशोफकं-डूश्चहरत्येवनसंशयः ॥ १४ ॥ बलासिताढ्यातिब-

लामधूकंवटस्यशुंगंगजकेसरञ्च ॥ एतन्मधुक्षीरघृ-
तैर्निपीतंवन्ध्यापिपुत्रंनियतं प्रसूते ॥ १५ ॥ एरंड
धात्रीफलमातुलुंगबीजानिमूलंसितकंटकार्याः ॥
दिनत्रयंक्षीरयुतंप्रपीतमेतत्सुखंगर्भवरंप्रधत्ते॥१६॥
अश्वगन्धाकषायेणपयःसिद्धंघृतान्वितम् ॥ प्रातः
पीत्वाऋतुस्नाताधत्तेगर्भंनसंशयः ॥ १७ ॥ पुष्यो-
द्धृतंसद्विधिलक्ष्मणायामूलंतथान्यत्सहदेविकायाः ॥
घृतान्वितंकन्यकयाप्रपिष्टंदुग्धेनपीतंप्रकरोतिगर्भम् १८

भाषा--योनिलेप कहते हैं आँवलासारंगधक, शंखका चूना दोनोंकी बराबर मनशिल इन तीनों दवाइयोंको जलमें पीसके योनिके बीचमें रखदे अर्थात् लेप करनेसे योनिकी पीड़ा मिटे सोजा दूरहो खुजली योनिकी दूरहो इसमें कुछ सन्देह नहीं॥ १३॥ ॥ १४ ॥ पुनर्वन्ध्योपायः ॥ खरैंटी, मिसरी, सहदेई, मुलैठी, बड़की डाढ़ी, नागकेशर यह औषधी सर्व समान लेके कूट कपड़ छानकर. दूधमें सहद और घी मिलाके दवाखाके ऊपरसे यह दूध पीवे वंध्या स्त्री नेमकरके इस दवाको दिन सात करे तो अवश्य पुत्रको उत्पन्न करे ॥ १५ ॥ पुनरुपायः ॥ अरंडकी गिरी, आंवला, बिजौराके बीज, सफ़ेद कटेलीकी जड़ यह सब दवाई कूट कपडछानकर ऋतुस्नान किये पीछे वन्ध्या स्त्री दिन ३ गौके दूधके साथ पीवे तो सुखपूर्वक गर्भको धारण करे ॥ १६ ॥ पुनरुपायः॥असगंधका कषाय करके सिद्ध किया हुवा दूधको घृत डालके ऋतुस्नाता वन्ध्या स्त्री प्रातःकाल पीवे तो गर्भको धारण

करे इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ १७ ॥ पुनरुपायः ॥ पुष्यनक्षत्रमें विधिपूर्वक लक्ष्मणा जड़ीकी जड़ लावे और सहदेईकी जड़ लावे फिर गौके घृतमें कन्याके पास पिसवाके गोली बांधकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री पीवे तो गर्भ रहै ॥ १८ ॥

पत्रमेकं पलाशस्यगर्भिणीपयसान्वितम्॥ पीत्वापुत्रमवाप्नोतिवीर्यवंतंनसंशयः ॥ १९ ॥ कुरंटमूलं धातक्याःकुसुमानिवटांकुराः॥ नीलोत्पलंपयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम् ॥ २० ॥ संयोज्यकर्षंवृषभस्यमूलंतैलंप्रपीतंकुडवप्रमाणम् ॥ स्त्रियापयोभक्तभुजा दिनांतेसुतंप्रदत्तेनियतंप्रशस्तम् ॥ २१ ॥ पुत्रसंजीविकामूलंशिवलिङ्गीफलान्वितम् ॥ पुष्योद्धृतं पयोन्मिश्रंपीतंगर्भप्रदंध्रुवम्॥ २२॥पुत्रसंजीविकामूलंविष्णुक्रांतेशलिंगिका ॥ पीत्वापुत्रमवाप्नोतिनकन्याजायतेस्फुटम् ॥ २३ ॥ रसःप्रपीतःसितकंटकार्यामूलस्यपुष्पंत्रिदिनंजलेन ॥ मयूरमूलस्यचनासिकायादत्तेसुतंदक्षिणसंपुटेन ॥ २४ ॥

भाषा—पुत्र होनेका उपाय ॥ गर्भवती स्त्री पुनर्वसुनक्षत्रके दिन सन्ध्यासमयमें पलाश वृक्षको नोत आवे प्रभात समय सूर्योदयमें जाके पलाश वृक्षके पत्ते ३०० तीनसो तोड़ लावे छायामें सुकाले फिर एक पत्ता रोज प्रातःकाल पीसके गौके दूधके साथ जितने संतान हो इतने पीवे तो बड़ा पराक्रमी पुत्रको प्राप्त हो इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ १९ ॥ गर्भरहनेका

और उपाय कहते हैं-कुरंडकी जड़, धायके फूल, बड़की गोभ, नीलोफर, यह औषध कूट कपड़छान कर गौके दूधके साथ पीवे तो निश्चय करके गर्भको पैदा करे इसमें सन्देह नहीं॥ २०॥ ॥ पुनरुपायः ॥ वांसाकी जड़ एक कर्ष १६ मासे मीठा तेलमें मिलाके पीवे और सन्ध्यासमयमें दूधभातका भोजन करे तो वंध्यास्त्री श्रेष्ठ पुत्रको पैदा करे ॥ २१ ॥ पुनरुपायः ॥ जीयापोताकी जड़, शिवलिङ्गीका फल, पुष्यनक्षत्रमें लावे फिर गौके दूधके साथ यह औषधी पीई हुई निश्चय करके गर्भको पैदा करती है इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ २२ ॥ जीयापोताकी जड, विष्णुक्रांता, शिवलिंगी यह औषधी ऋतुस्नान किये पीछे गौके दूधके साथ पीवे तो गर्भधारण करे पुत्र हो कन्या नहीं उत्पन्न हो ॥ २३ ॥ अन्योपायः॥ सपेद कटालीकी जडका रस दाहिनि नासिका करके पीवे अथवा सफ़ेद कटेहलीका फूल जलमें पीसकर दाहनी नासिका करके पीवे अथवा मोरशिखा की जड़का रस दाहनी नासिकाकरके पीवे दिन ३ तो यह औषधी पुत्रको उत्पन्न करती है इसमें सन्देह नहीं ॥ २४ ॥

मंजिष्ठामधुकंकुष्टंत्रिफलाशर्करावचा ॥ अजमोदा हरिद्रेद्वेहिंगुतिक्तकरोहिणी ॥ २५ ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ॥ जीवकर्षभकौमेदे रेणुकाबृहतीद्वयम् ॥ २६ ॥ उत्पलंचंदनंद्राक्षाप द्मकंदेवदारुच ॥ एभिरक्षमितैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाच येत् ॥ २७ ॥ चतुर्गुणेनपयसायुक्तंतन्मृदुनाग्निना॥

एतत्सर्पिर्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यंप्रवर्तते ॥ २८ ॥ पुत्रान्संजनयेच्छ्रेष्ठाञ्छ्रीयुक्तान्प्रियदर्शनान् ॥ वंध्या चलभतेगर्भंनात्रकार्याविचारणा ॥ २९ ॥ याचैवाऽस्थिरगर्भास्याद्यावाजनयतेमृतम् ॥ स्वल्पायुषं प्रसूतेवायाचकन्याःप्रसूयते ॥ ३० ॥ कल्याणेयोगुणःप्रोक्तोगुणःसौप्यत्रवैभवेत् ॥ हितमेतत्कुमाराणां सर्वग्रहविशोषणम् ॥ ३१ ॥ सिद्धकल्याणकंनाम घृतमेतन्महद्वरम् ॥ वीर्यमस्यशतंवारंदृष्टाचकथितंमया ॥ ३२ ॥

भाषा–मजीठ १ मुलहटी, कूट, हरड़े, बहेड़ा, आँवला, मिसरी, वच, अजमोद, हलदी, दारुहलदी, हींग, कुटकी ॥ २५ ॥ काकोली, क्षीरकाकोली, असगंध, गौरी, जीवक, ऋषभ, मेदा, महामेदा, रेणुकबीज, खड़ीकटेहलीकी जड, पसरकटालीकी जड ॥ २६ ॥ कमलगट्टा, सपेद चंदनका बुरादा, मुनक्का, दाख, पदमाख, देवदार, यह सब दवाई एक एक तोला लेके सेरभर घीको पकावे ॥ २७ ॥ चारसेर गौका दूध डालके दवाइयोंका कल्क करके मंद मंद अग्निसे पकावे फिर सब दूध जलजावे औषधी सिकजावे जब अग्निसे उतारले, ठंढा होनेसे घृत छानके शुद्धपात्रमें रखदे, यह घृत एकतोला रोज पुरुष पीवे तो स्त्रियोंमें नित्य प्रवर्त रहे बलहीन नहीं हो ॥ २८ ॥ इस घृतके प्रतापसे पुरुष बडे सुंदर और श्रेष्ठ और लक्ष्मीयुक्त पुत्रोंको उत्पन्न करे और बांझ स्त्री गर्भको धारणकरे, इसमें कुछ विचार नहीं यह

निश्चयहै ॥ २९ ॥ जो स्त्री गर्भधारण न करे अथवा जो स्त्री मरी संतानको पैदा करती हो, अथवा स्वल्प आयुवाली संतान-को पैदा करतीहो अथवा जो स्त्री कन्याको पैदा करनेवाली हो, उन्होंको यह घृत हितकारीहै ॥ ३० ॥ जो कल्याण घृतमें गुण कहेहैं वही गुण इसकेभी हैं और वालकोंकोभी यह हितहै, सर्व वालग्रहोंको दूर करनेवालाहै ॥ ३१ ॥ यह सिद्धकल्याण नाम करके वड़ा श्रेष्ठ घृतहै, सौवार इस घृतका गुण देखकर कल्याण वैद्यने कहा है ॥ ३२ ॥ इति सिद्धकल्याणकं घृतम् ॥

गुडपलावलेहंचकृत्वातंडुलवारिणा ॥ लीढ्वागर्भंन धत्तेस्त्रीसुरतैकरताभवेत् ॥ ३३ ॥ आरनालपरिपे षितंत्र्यहंवाणिपुष्पसहितं तुकामिनी॥सत्पुराणगुड-मुष्टिसेविनीगर्भमेवधरतेकदापिन ॥ ३४ ॥ पीतंज्यो तिष्मतीपत्रंराजिकोग्रासनंत्र्यहम् ॥ शीतेनपयसा पिष्टंकुसुमंजनयेद्ध्रुवम् ॥ ३५ ॥ शुंठीगुडेनसंपिष्टा भक्षयेद्दिनसप्तकम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नार्याःसत्यंसत्यं मयोदितम् ॥ ३६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते वालतंत्रे साधारणवंध्यौष-धकथनंनाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

भाषा--जो स्त्री गर्भधारण किया नहीं चाहतीहै उसका उपाय कहतेहैं, पुराना गुड तोले ४ चारको लेके चावलोंका पानी करके अवलेह वनावे७ दिन उसको चाटे उतनाही अंदाज हररोज चाटे तो वह स्त्री गर्भधारण न करे चाहिये नित्य विषयमें रत

और जैसा आचार और जैसी चेष्टाओंकरके युक्त स्त्री पुरुष भोग करेंगे तो उनके पुत्रभी वैसाही आहार और वैसाही आचार और वैसीही चेष्टावाला होगा ॥ ४ ॥ रजकी जाजती गर्भमे होनेसे लडकी होतीहै और वीर्यकी अधिकता होनेसे लडका होताहै. और रज वीर्य दोनों समानहों तब नपुंसक अर्थात् हीजडा होताहै ॥ ५॥ और रजमें वीर्य पड़े या बे समयमें पडे. तो वह वीर्य निष्फल होजाताहै गर्भस्थित नहीं हो. और पुरुष धातुहीन हो या नपुंसक हो तब स्त्री गर्भधारण नहींकरे॥ ६॥ बुद्धिमान् ऐसे बिचारकेवास्ते वाजीकरण प्रयोगोंको इस मंत्रसे मंत्रित करके सेवन करना चाहिये॥ ७॥मंत्रका उद्धार करतेहैं।प्रथम ओंकार उसके पीछे कामबीज क्लीं यह उसके पीछे देवकीसुत यह पद उसके पीछे गोविंद यह पद और तिसके पीछे वासुदेव पद देना चाहिये ॥ ८ ॥ और उसके अगाडी जगत्पते यह पद उच्चारण करना चाहिये और अगाडी देहि मे तनयं यह पद और इस्से अगाडी देव यह पद, इस्से अगाडी त्वामहं शरणं गतः यह पद देना चाहिये. बस मंत्र होगया.॥अब समस्त मंत्रका स्वरूप लिखतेहैं ॥ " ॐ क्लीं देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं देव त्वामहं शरणं गतः"यह मंत्रहै इस करके मंत्रित करदेने चाहिये ॥ ९ ॥

अष्टोत्तरशतंजप्त्वाऔषधंचप्रदापयेत् ॥ औषधी ग्रहणेमंत्राः कथ्यंतेचमयाशुभाः ॥ १० ॥ गत्वौ-षधीसमीपंतुमूलेकृत्वासमंबुधः ॥ कीलकंखादिरं

ग्राह्यंमंत्रेणानेनमंत्रितम् ॥ ११ ॥ हुंनारायणायस्वाहा प्रणवादिर्नवाक्षरः ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वावक्ष्यमाणेनसंखनेत् ॥ १२ ॥ प्रणवोभुवनेशानीयेनत्वांखनतेततः ॥ ब्रह्मायेनतुरुद्रोथकेशवश्वपदंततः ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहंखनयिष्यामिसिद्धिंदेहिमहौषधि ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणचोद्धरेदौषधींबुधः ॥ १४ ॥ सर्वार्थसाधनीस्वाहाप्रणवादिर्नवाक्षरः ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणप्राशनंकारयेत्सुधीः ॥ १५ ॥

भाषा—एकसो आठ १०८ मंत्र पढकर औषधी देना चाहिये. औषधीके ग्रहण करनेमें शुभ मंत्रोंको कहतेहैं ॥ १० ॥ प्रथम औषधीके पास जाके उसकी जडके समीप चारों तरफ समान स्थल करलेना चाहिये फिर खैरवृक्षके काठकी एक खूंटी बनवावे. इस मंत्रसे मंत्रित करे. और पूजन करके नालाकी डोरी बांधै ॥ ११ ॥ ॐ हुं नारायणाय स्वाहा. इस नव ९ अक्षरका मंत्रसे खदिर कीलकको मंत्रित करके उत्तरकी तरफ मुख करके अगाडी मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधीकी जडको खोदना चाहिये ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं येन त्वां खनते ब्रह्मा येन रुद्रोऽथ केशवः ॥ तेनाहं खनयिष्यामि सिद्धिं देहि महौषधि ॥ इस मंत्रसे उस औषधीकी जमीन खोदना चाहिये. और अगाडी मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधी पाडनी चाहिये ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॐ सर्वार्थसाधनी स्वाहा इस नवाक्षरके मंत्रको १०८ बार जपके औषधी पाड-

लेनी चाहिये ॥ फिर अगाडी जो मंत्र कहेंगे. उस मंत्रसे औषधी खानी चाहिये ॥ १५ ॥

ॐकुमारजननीयेस्वाहामंत्रोदशाक्षरः ॥ लक्ष्मणा-संग्रहःकार्य्यः प्रवृत्तेचोत्तरायणे ॥ संपूर्णमासपक्षेतु माग्रह्णीयान्महौषधीन् ॥ १६ ॥ चिह्नंतस्याः प्र-वक्ष्यामिज्ञायतेचभिषग्जनैः ॥ रक्तबिंदुयुतैःपत्रै-र्वर्तुलाकृतिभिर्युता ॥ १७ ॥ पुरुषाकारसंयुक्तै-र्लक्ष्मणासानिगद्यते॥ आत्मच्छायांपरित्यज्यगृह्णी-यात्पुण्यभेसुधीः ॥ १८ ॥ प्रणवोहृदयंप्रोच्यब-लवर्द्धनिचोच्चरेत् ॥ शुक्रवर्द्धनिपुत्रेतिजननीवह्नि-वल्लभा ॥ १९ ॥ विंशत्यर्णेनविधिनानिशिखानं प्रदापयेत् ॥ नाड्यांतुदक्षिणायांतुवायौवहतिदाप-येत् ॥ २० ॥ ऋतुस्नानानंतरंतुवंध्यापिपुत्रमाप्नु-यात् ॥ २१ ॥ मृतवत्सातुयानारीदुर्भगाऋतुव-र्जिता॥यासूतेकन्यकांवंध्यास्नानंतासांविधीयते॥२२॥

भाषा—ॐकुमारजननीये स्वाहा, यह दशाक्षर मंत्रको १०८ वार जपके औषधी खानी चाहिये ॥ अब लक्ष्मणाजडीके ग्रहण करनेकी विधि लिखतेहैं. उत्तरायण सूर्य्यप्रवृत्तहो जब लक्ष्मणा जडीको ग्रहण करना चाहिये. मासांतमें और पक्षांतमें ग्रहण करनी नहीं चाहिये ॥ १६ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं. वैद्यजनोंने जानना चाहिये कि, लक्ष्मणाके पत्तोंपर लालबिंदु होतीहैं और गोल पत्ते होतेहैं ॥ १७ ॥ और पुरुषके आकार

पत्तोंपर हों, उसको लक्ष्मणाजडी कहतेहैं, बुद्धिमान् पुरुष अपनी छायाको बचाके पुष्यनक्षत्रमें जडीको ग्रहण करना चाहिये ॥ १८ ॥ ॐ नमो बलवर्द्धनी शुक्रवर्द्धनी पुत्रजननी स्वाहा ॥ १९ ॥ इस वीस अक्षरके मंत्रसे मंत्रितकरके लक्ष्मणाजडीको खूब बारीक पीसके फंकीलेके दूध गौका ऊपरसे पीवे, या दूधमें पीसके छानके पीवे. रात्रिको दहना स्वर चलता हो उस वेलामें पीना चाहिये किसी पुस्तकमें 'नसिपानं प्रदापयेत्.' ऐसा पाठहै, वहां पर ऐसा अर्थ करना. नासिकासे पीनी चाहिये ॥ २० ॥ ऋतुस्नान किये पीछे स्त्री विधिपूर्वक लक्ष्मणाजडीका सेवनकरें तो वंध्याकेभी पुत्र उत्पन्नहो ॥ २१ ॥ जो स्त्री मृतवत्साहै अर्थात् जिसके बच्चे मरजाते हों और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो. और जिसके कन्या होतीहों अथवा वंध्या हो उन स्त्रियोंको स्नान कराना चाहिये ॥ २२ ॥

अष्टम्यांवाचतुर्दश्यामुपवासपरायणा ॥ ऋतौशु चतुर्थेंह्निप्राप्तेसूर्यदिनेऽथवा ॥ २३ ॥ नद्यास्तुसंगमेकुर्य्यान्महानद्यांविशेषतः ॥ शिवालयेऽथवागोष्ठेविविक्तेवागृहांगणे ॥ २४ ॥ आहूयादौद्विजंशांतंधर्म्मज्ञंसत्यशीलिनम् ॥ स्नानार्थंशास्त्रवेदेचनिपुणंरौद्रकर्म्मणि ॥ २५ ॥ ततस्तुमंडपंकुर्य्याच्चतुरस्रमुदङ्मुखम् ॥ तच्चचंदनमाल्येनगोमयेनानुलेपितम् ॥ २६ ॥ तन्मध्येश्वेतरजसासंपूर्णपद्ममालिखेत् ॥ मध्येऽब्जस्यमहादेवंस्थापयेत्कर्णिको-

परि ॥ २७ ॥ लिखेद्दलेषुनंद्यार्दीश्चतुर्षुविधिपूर्व-
कम् ॥ देवींविनायकंचैवकार्तवीर्यंमहाबलम्॥२८॥
इंद्रादिलोकपालांश्चदलाष्टसुततोलिखेत् ॥ ततःशे-
षदलेष्वेवस्थापयेत्तत्रपार्थिवान् ॥ २९ ॥ दधिदु-
ग्धंघृतंपुष्पंधूपंदीपंयुगानिच ॥ कन्नानांविधिना
दद्यात्पुष्पाणिविविधानिच ॥ ३० ॥

भाषा—अब रुद्रस्नानकी विधि लिखतेहैं. अष्टमीको या चतुर्दशीको या रजस्वलाका रज शुद्ध होनेसे चौथे दिन, अथवा रविवारको वह स्त्री व्रत धारणकरे यह कर्म रजसे शुद्ध होके करे यह समझ लेना ॥ २३ ॥ यह कर्म किस जगे करना चाहिये सो कहतेहैं नदियोंका संगम जहां हो वहां करना चाहिये अथवा गंगाके तटपर या शिवालयमें या गोशालामें या गृहके आँगणमें परंतु अलैधा हो रास्तामें नहीं हो इतनी जगों यह कर्म करना उचितहै ॥ २४ ॥ स्नानकरानेके वास्ते प्रथम ऐसा ब्राह्मणको बुलावे कि जो शांत हो धर्मका जाननेवालाहो, सत्य बोलनेवालाहो और शास्त्रमें वेदमें निपुण हो और शिवके पूजनादिक कर्मोंमें निपुणहो ऐसे ब्राह्मणको स्नान करानेके वास्ते योजनाकरे ॥ २५ ॥ फिर उस जगों चकोरमंडप कराना चाहिये उत्तराभिमुख मंडपका होना चाहिये फिर गोबरसे लिपाके चंदनसे पुष्पोंसे सुगंधित करना चाहिये ॥ २६ ॥ फिर उस मंडपके मध्यमें वालूकी वेदी बनावे वेदीपर गोधूमके चूर्णसे सहस्रदलका कमल लिखना चाहिये उस कमलके बीचमें के-

सरोंमें शिवका स्थापन करना चाहिये ॥ २७ ॥ फिर उसके उपरांत चार दलोंमें चारोंतरफ नंदीश्वरसे आदि लेके लिखने चाहिये, एक तरफ नंदीश्वर, दूसरी तरफ पार्वती, तीसरी तरफ गणेशजी चौथी तरफ कार्तवीर्य यह लिखने चाहिये ॥ २८ ॥ और उनके उपरांत आठदलोंमें इंद्रसे आदि लेके अष्टलोकपाल लिखने चाहिये और शेष रहे दलोंमें पार्थिव बनाके स्थापन करदेने चाहियें ॥ २९ ॥ दही, दूध, घृत, फूल, धूप, दीपक, सुपारी, कमलके अनेक प्रकारके फूल इनोंसे पूजन विधान करे ॥ ३० ॥

चतुःकोणेषुकर्तव्याश्चस्वस्तंभविभूषिताः ॥ अग्निः कार्य्यःशुभेकुण्डेपुष्पपात्रेऽनलेकृते ॥ ३१ ॥ लवणंसर्पिषायुक्तंघृतेनमधुनासह ॥ मानस्तोकेनजुहुयात्कृतेहोमेनवग्रहे ॥ ३२ ॥ द्वितीयस्यात्मकार्यस्यकर्ताचब्राह्मणोभवेत् ॥ रुद्रंयजेन्मृदाकृत्वासितचंदनचर्चितम् ३३ ॥ सितवस्त्रपरीधानंसितमालाविभूषितम् ॥ शोभयेत्कङ्कणैःस्वर्णैःकर्णवेष्टचांगुलीयकैः ॥ ३४ ॥ मंडपस्यसमीपस्थोजपेद्रुद्रंविमत्सरः ॥ यावदेकादशशतंपुनरेवजपेच्छतम् ॥ ३५ ॥ एवंमंगलवत्कार्यंद्वितीयंमंडपंशुभम् ॥ तस्यमध्येतुसानारीश्वेतपुष्पैरलंकृता ॥ ३६ ॥ श्वेतवस्त्रपरीधानाश्वेतगंधानुलेपिता ॥ सुखासनोपविष्टायाआचार्योमहदासनः ॥ ३७ ॥ अभिषिंचेत्ततश्चै-

तामर्कपत्रपुटाम्बुना ॥ चतुःषष्टिऋचाचैवरुद्रेणैका दशेनतु ॥ ३८ ॥ वर्णानामितिऋचांतासांचतुःषष्टि संख्यानामेकादशत्वंपतितानामियंसंख्या ॥

भाषा--चारों कोनोंमें, यज्ञस्तंभ बहुत सुंदर करने चाहिये और बहुत सुन्दर अग्निकुंड करना चाहिये उसमें कांसी फूलके वर्तनसे अग्नि लाके स्थापनकरना चाहिये ॥ ३१ ॥ नमक घृतकी, या घृतसहतकी आहुती देनी चाहिये और प्रथम ग्रहोंकी आहुति देके पीछे हवन करना चाहिये ॥ ३२ ॥ और दूसरा अर्पना कार्यका करनेवाला ब्राह्मण होना चाहिये वह ब्राह्मण मृत्तिकाका रुद्र बनाके सपेद् चन्दनसे पूजन करे ॥ ३३ ॥ सपेद वस्त्र शिवपर चढावे और सपेद फूलोंकी माला चढावे. और रुद्रको सोनाके कंकणोंसे कर्णभूषणोंसें अंगुठीसे शोभित करे ॥ ३४ ॥ मंडपके समीप बैठके मत्सरता, क्रोध, लोभ, काम, मोह सबको दूर करके मन स्थिर कर रुद्रमंत्रका जपकरे उस ब्राह्मणने ११रुद्री करना चाहिये ११रुद्री करके फिर रुद्रका जप करना चाहिये ॥ ३५ ॥ ऐसे मंगलीक कर्म करके दूसरा मंडप बडा सुंदर करना चाहिये उस मंडपके बीचमें उस स्त्रीको सपेद फूलोंकी माला पहनाके सपेद और वस्त्रको पहनाके सपेद चंदनको लगाके सुखपूर्वक आसनके, ऊपर बैठाना चाहिये और आचार्यको ऊंचा आसनके ऊपर बैठाना चाहिये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ फिर आचार्य ब्राह्मण आकके पत्ताका दोना करके उसमें जल

भरकेद४ऋचाका पाठ करके रुद्री महिम्न पडंगका पाठ ११ वार पठन करके उस स्त्रीको अभिषेक करे ॥ ३८ ॥

शतानिसप्तपर्णानांचतुर्भिरधिकानिच॥अच्छिद्राणि चमंत्रेणस्नानार्थेविनिवेशयेत् ॥३९॥ अश्वस्थाना-द्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ वेश्यांगणाच्च-तुःपथाद्गोष्टादानीयवैमृदम् ॥ सर्वौषधींगोरोचनाञ्च नदीतीर्थोदकानिच ॥ ४० ॥ एतत्संक्षिप्यकलशे शिवसंज्ञेसुपूजिते ॥आपादतलकेशांतंकुक्षिदेशेविशे पतः॥४१॥सर्वांगेलेपयेद्भक्त्यासुशीलाकाचिदंगना॥ रुद्रमंत्रंजपन्विप्रःस्नापयेत्कलशैश्चताम् ॥ ४२ ॥ तोयपूर्णाष्टकलशैरश्वत्थदलपूरितैः॥सर्वतोदिक्स्थ तैःपश्चात्स्नापयेत्कलशाक्षतैः ॥ ४३ ॥

भाषा—शातोनके पत्र १०४ विगर छिद्रके लेके रुद्रमंत्र पढके स्नान करानेके कलशमें घालदेने चाहिये ॥ ३९ ॥ अश्वशा-लासे, हाथी खानासे, सर्पकी वँवईसे, नदीयोंके संगमसे,सरोवरसे वेश्याके आंगनसे, चौराहासे, गोशालासे, मृत्तिका ग्रहण करे, और सर्वौषधी गोरोचन, और नदीका या तीर्थका जल यह सब द्रव्य पूजन किया हुवा शिवसंज्ञक कलशमें घालदे. फिर वह स्त्री चरणसे केशोंतक उस जल मृत्तिका औषधीयोंसे सम्पूर्ण अंगको लेपन करे. और कुक्षिदेशको विशेषताकरके लेपन करे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुशीलको धारण करके भक्तिसहित अंगको लेपन करे पीछे ब्राह्मण रुद्रका मंत्र जपता हुवा कल-

शोंके जलसे उस स्त्रीको स्नान करावे ॥ ४२ ॥ जलसे परिपूरित हुये आठ ८ कलश पीपल वृक्षके पत्तोंसे आच्छादित हुये अष्ट दिशाओंमें स्थित हुये ऐसे जो अक्षत कलशे हैं उनसे स्त्रीको स्नान करना चाहिये ॥ ४३ ॥

स्नात्वैवंस्नापकायैवदद्याद्गांकांचनंतथा ॥ हेतुरेवात्र निर्दिष्टोदक्षिणागौःपयस्विनी॥४४॥ब्राह्मणानप्यथान्यांश्चस्वशक्त्यासाधुपूजयेत् ॥ गोवस्त्रकांचनादीनिदत्वासर्वान्क्षमापयेत् ॥ ४५ ॥ कृतेनानेनस्नानेननरोवानायिकापिवा ॥ सुभगाकांतिसंयुक्ताबहुपुत्राचजायते ॥ ४६ ॥ सर्वेष्वपिहिमासेषुब्राह्मणानुमतेशुभम् ॥ तस्मादवश्यंकर्तव्यंपुत्रंस्त्रीसुखमृच्छति ॥४७॥ यास्नानमाचरतिरुद्रमितिप्रसिद्धंश्रद्धान्विताद्विजवरानुमतेनतांगी ॥ दोषान्निहत्यसकलान्स्वशरीरभाजान्भर्तुःप्रियाभवतिपुत्रजनिश्चसास्त्री४८

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भाधानकाले रुद्रस्नानकथनं नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

भाषा—ऐसे विधिपूर्वक स्नान करके वह स्त्री स्नान करानेवाले ब्राह्मणको गौका दान देवे और सुवर्णका दान देना चाहिये इसमें यह हेतुहै, दक्षिणा और दूधवाली गौ देनी चाहिये ॥४४॥ ब्राह्मणोंको साधुवोंको अभ्यागतोंको भोजन करावे, और उनका पूजन करना चाहिये और अपनी शक्तिमाफिक गौ, वस्त्र, सुवर्ण, उनके देके प्रसन्न करैं, और अपराध क्षमा करावे ॥४५॥

इस स्नानके करनेसे पुरुप या स्त्री अच्छी ऐश्वर्यवाली क्रांति-वाली बहुपुत्रवाली होजातीहै ॥ ४६ ॥ सब महीनोंमें ब्राह्म-णके अनुमत होके यह स्नान कर्म्म शुभकारीहै, इसवास्ते अव-श्य करना चाहिये इस्से स्त्री पुत्रको सुखको प्राप्त होजातीहै ॥ ॥ ४७ ॥ जो स्त्री इस प्रसिद्ध रुद्रस्नानको श्रद्धा करके ब्राह्मण-के अनुमत होके करतीहै वह स्त्री शरीरके संपूर्ण दोपोंको नष्ट करके पुत्रकी उत्पत्ति करतीहै जिस्से भर्ताकी बडी प्यारी होजातीहै ॥ ४८ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतवालतंत्रभापाटीकायां चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

गर्भस्थितस्यबालस्यरक्षार्थंकथ्यतेवलिः ॥ औप-धानिविचित्राणिकथ्यंतेमंत्रजापकम् ॥ १ ॥ गर्भि णीगर्भरक्षार्थंमासेतुप्रथमेबलिः ॥ प्रजापतिंसमुद्दिश्य देयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ २ ॥ श्वेतवस्त्रंपायसंचगव्यंक्षीरं तथाघृतम् ॥ श्वेतच्छत्रंचंदनंचसरलंचांगुलीयकम् ॥ ३ ॥ पूर्णकुंभोहेमयुक्तोधूपदीपावयंबलिः ॥ स्थानेगवांदोहनस्यनिःक्षेतव्यःप्रशांतये ॥ ४ ॥ तत्रमंत्रः ॥ एह्येहिभगवन्ब्रह्मन्प्रजाकर्तःप्रजापते ॥ बालायागर्भरक्षार्थंरक्षरक्षकुमारकम् ॥ ५ ॥ यदिच प्रथमेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ नीलोत्पलंसनालंच शृंगाटकंकसेरुकम् ॥ ६ ॥ शीततोयेनसंपिष्टाक्षीरे

णालोड्यतत्पिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविन-
श्यति ॥ ७ ॥ मंजिष्ठंचंदनंकुष्टंतगरंसमभागिकम् ॥
पिष्ट्वाक्षीरेणसंपेयमौषधंसमुदाहृतम् ॥ ८ ॥

इति प्रथममासे गर्भिणीगर्भरक्षा ॥ १ ॥

भाषा—अब गर्भमें स्थित हुये बालककी रक्षाके वास्ते बलि कहतेहैं और अनेक रकमकी औषधी मंत्रजाप भी कहतेहैं ॥ १ ॥ गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते पहिले मासमें प्रजापतिको लक्ष्य करके अर्थात् ब्रह्माकी मूर्ति मृत्तिकाकी बनाके मृत्तिकाके पात्रमें स्थितकरके उसके अगाडी सर्वद्रव्य धरके मंत्रका जाननेवाला पुरुष २१ वार मंत्र पढके बलि देवे ॥ २ ॥ सपेद वस्त्र, खीर, गौका दूध, घृत, सपेद छत्र, सपेद चंदन, रत्नकी जडी अँगूठी ॥ ३ ॥ जलका कलश उसमें सोना डालदेना यत्किंचि-त्, धूप, दीपक यह सर्ववस्तु एक पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके जहां गौ दोहीजातीहै उस स्थानमें रख आवै ॥ ४ ॥ यह पांचवाँ श्लोकहै यह सर्व मंत्रहै इसीको २१ वार जपना चाहि-ये ॥ ५ ॥ और जो पहिले महीनामें गर्भमें कुछ वेदना हो तब नीलोफर, कँवल, ककडी, सिंघाडा, कसेरू ॥ ६ ॥ इनको ठंढे जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे ऐसे करनेसे गर्भ गिरे नहीं और शूल जाती रहै ॥ ७ ॥ अन्य औषधी लिखतेहैं, मंजीठ, लालचंदन, कूट, तगर, यह सब समानलेके दूधमें पीसके दूधहीमें छानके पीवे यह औषधी भी गर्भकी वेदनाकूं दूरकरतीहै ॥ ८ ॥

यह पहलेमासका बलिविधानहै ॥ १ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंद्वितीयेमासिवैबलिः ॥ समुद्दि-
श्याऽश्विनौवैद्यौदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥९॥ दध्यन्नंपा-
यसंलाजापिण्याकंकुसुमानिच ॥ गंधश्चधूपदीपौच
वस्त्रंपूर्णघटस्तथा ॥ १० ॥ हेम्नायुतोऽश्वशालायाः
समीपेनिःक्षिपेद्बलिम् ॥ गोदोहस्थानकेन्यस्यमंत्र-
मेतंपठेत्सुधीः ॥ ११ ॥ मंत्रः ॥ भगवंतौप्रभावं-
तौप्रगृह्णीतंबलिंत्विमम् ॥ सुरूपौदेवभिषजौरक्षतंग-
र्भिणींयुवाम् ॥ १२ ॥ यदिचद्वितीयेमासिगर्भेभ-
वतिवेदना ॥ तगरंकुंकुमंबिल्वंकर्पूरेणसमन्वितम् ॥
॥ १३ ॥ अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पि-
बेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥ १४ ॥
शालूकमुत्पलंनीलंकशेरुशृंगवेरकम् ॥ समंपि-
ष्ट्वोदकेनैवक्षीरेणसहसंपिबेत् ॥ १५ ॥ शृंगाटकं
कशेरुंचजीरकंबिल्वपत्रकम् ॥ खर्जूरंशीततोयेन
पिष्ट्वाक्षीरेणसंपिबेत् ॥ १६ ॥

इति द्वितीयमासे गर्भरक्षा ॥ २ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाकेवास्ते दूसरे मासमें अश्विनीकुमार देवतानके वैद्योंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरुष मंत्रके बलि दे ॥ ९ ॥ दही, भात, खीर, धानकी खील, तिल-खली, फूल, इतरकाफोया, धूप, दीपक, वस्त्र, जलका भरा घट उसमें यत्किंचित् सोना घाल देना चाहिये ॥ १० ॥ यह सर्व वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें एक जगे रखके मंत्र २१ बार पढके

अश्वशालामें या गोशालामें रख आवे और उस जगेभी मन्त्र पढना चाहिये ॥ ११ ॥ यह बारहवाँ श्लोकहै. यह सर्व मंत्रहै. इसीको २१ वार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर वारके बलि देना चाहिये ॥ १२ ॥ और जो दूसरे महीनेमें गर्भमें कुछ वेदना हो तब तगर, केसर, वेलगीरी, कपूर ॥ १३ ॥ यह सर्व समान लेके बकरीके दूधमें पीसे और बकरीके दूधमें छानके पीवे. ऐसा करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल जाता रहै ॥ ॥ १४ ॥ अन्योपायः ॥ सालममिसरी, नीलोफर, कसेरू, अदरख, यह सब समान लेके जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे ॥ १५ ॥ अन्योपायः ॥ सिंघाडा, कशेरू, जीरा सफेद, वेलपत्र, छुहारा यह सर्व समान लेके ठंढेपानीमें पीसके दूधमें छानके पीवे ॥ १६ ॥

यह दूसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ २ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेतृतीयके ॥ रुद्रानेकादशोद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ १७ ॥ घृतमन्नंच लाजाश्वध्वजःश्वेतोथचंदनम् ॥ श्वेतपुष्पाणिवस्त्रं चश्वेतंधूपंप्रदापयेत् ॥ १८ ॥ श्वेतपंकजयुक्तश्च पूर्णकुंभःसकांचनः ॥ इत्येवंप्रथमस्थानेईशान्यां दिशिनिक्षिपेत् ॥ १९ ॥ अयंमंत्रः ॥ महादेवः शिवोरुद्रःशंकरोनीललोहितः ॥ ईशानोविजयोभीमोदेवदेवोजयोद्भवः ॥ २० ॥ कपालीशश्चकथ्यंते तथैकादशमूर्त्तयः ॥ रुद्राएकादशप्रोक्ताःप्रगृह्णीत

वलिंत्विमम् ॥ २१ ॥ युष्माकंतेजसांवृद्ध्यागर्भं रक्षतुगर्भिणीम्॥ यूयंमंत्रावबोधाहिंनित्यंरक्षतगर्भिणीम् ॥ २२॥अथचेत्तृतीयेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ पद्मकंचंदनोशीरंतगरंसमभागिकम् ॥ २३ ॥ शीततोयेनसंपिष्ट्वाअजाक्षीरेणपाययेत् ॥ एवंनपतते गर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥ २४ ॥ उशीरंचंदनंमुस्तापद्मकंपद्मनालकम् ॥ शीततोयेनसंपिष्यक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ २५ ॥

इति तृतीये मासि गर्भरक्षा ॥ ३ ॥

भाषा—गर्भवती स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते तीसरे महीनेके विषय एकादश रुद्रोंके प्रति मंत्रका जाननेवाला बलिको मंत्रित करके दे॥ १७॥घृत,चावल,धानकी,खील,सपेद ध्वजा, सपेद चंदन, सपेद पुष्प, सपेद वस्त्र, धूप ॥ १८ ॥ सपद कमलके फूल और यत्किंचित् सोना, जलका भराहुआ कलशामें घालके यह सब वस्तु एक सहनकमें रखके २१ वार मत्र पढके७ वार स्त्रीके ऊपर वारके गोशालामें ईशान दिशाकी तरफ धरआवे ॥ १९॥ बीसका श्लोक और ईक्कीसका श्लोक और बाईसका श्लोक इन तीन श्लोकोंका मंत्रहै इसको २१ वार पढना चाहिये ॥ २०॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ और जो तीसरे महीनेमें गर्भमें वेदना हो तब पदमाख, सपेदचंदन, खस, तगर, यह सब समान लेके ॥ २३ ॥ ठंढे पानीमें पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे ऐसे करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल शमन होजावे ॥ २४ ॥

और खस, सपेदचंदन, नागरमोथा, पद्माख, कँवलककड़ी, शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपात नहींहो ॥ ॥ २५ ॥ यह तीसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ३ ॥

गर्भिणोगर्भरक्षार्थंबलिंमासेचतुर्थके ॥ उद्दिश्य द्वादशादित्यानैशान्यांदिशियत्नतः ॥ २६ ॥ आरक्तान्नंगुडान्नंचरक्तगंधध्वजेतथा ॥ रक्तपुष्पं धूपदीपौरक्तवस्त्रंसकांचनम् ॥ २७ ॥ कलशः सलिलापूर्णःक्षिपेच्चैवजलाशये॥वक्ष्यमाणेनमंत्रेणमं- त्रिणेतिसमन्वितः ॥ २८ ॥ मंत्रः ॥ यमोवैवस्वत- स्त्वष्टावसुश्चसविताभृगः ॥ विष्णुस्तथामधुर्मित्रः खगःसूर्योथतापनः॥ २९ ॥ आदित्याद्वादशप्रोक्ताः प्रगृह्णीतबलिंत्विमम्॥यूयंवैतेजसांवृद्ध्यानित्यंरक्षत गर्भिणीम् ॥ ३० ॥ शृंगाटंकदलीपत्रंद्राक्षंचदाडिमो- द्भवम् ॥ बीजंतुकदलीकंदंशीततोयेनपेषयेत्॥३१॥ अजाक्षीरेणसंलोड्यपिबेन्नारीसुखाप्तये ॥ उशीरंकद- लीमूलंतथावैमद्मनालकम् ॥ ३२ ॥ शीततोयेनसं पिष्यछागीक्षीरेणसंपिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलं चैवाविनश्यति ॥ ३३ ॥

इति चतुर्थे मासि गर्भरक्षा ॥ ४ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते चौथे महीनेमें द्वादश आदित्योंके प्रति ऐशानी दिशामें जतनसे बलिदान देवे ॥ २६ ॥ मसूरकी दाल, गुड, चावल, लालचंदन, लालध्वजा,

लालफूल, धूप, दीपक, लालकपडा, यत्किञ्चित् सुवर्ण कलशामें गेरके जलसे पूर्णकरके यह सर्व वस्तु एक मिट्टीकी सहनकमें रखके अगाडी जो मंत्र कहेंगे उस मंत्रको २१ वार जपके नदीके या तालावके किनारे ईशान दिशाकी तरफ धर आवे ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ उनतीसका श्लोक और तीसका श्लोक यह दोनोंका मंत्र है इसको २१ वार जपके ७ वार स्त्रीके ऊपर वारके बलि-देना चाहिये ॥ २९ ॥ ३० ॥ और चौथे महीनेमें स्त्रीके वे-दनाहो तब सिंघाडा, केलाके पत्ते, दाख, अनारकी कली, केला-का कंद यह वस्तु शीतल जलसे पीसे ॥ ३१ ॥ फिर बकरीके दूधमें छानके पीनेसे वेदना नष्ट हो सुखकी प्राप्ति हो॥अन्योपायः। खस, केलाकी जड, कमलककडी ॥ ३२ ॥ शीतल जलसे यह द्रव्य पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे, ऐसा करनेसे गर्भ-पात नहीं हो शूल नष्ट होजावे ॥ ३३ ॥

यह चौथे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥ ४ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंपंचमेमासिवैबलिः ॥ विनायकं समुद्दिश्यदेयःसंयतचेतसा ॥ ३४ ॥ विनायकंगो-मयेनकुर्य्यात्पिष्टेनवापुनः ॥ चतुरस्रेशुभेलिप्तेस्था-पयेत्तंगणाधिपम् ॥ ३५ ॥ अभ्यर्च्यगंधपुष्पाद्यैर्ब-लिंतत्पुरतःक्षिपेत् ॥ अन्नंपक्वंतथाऽपक्वंमांसंपक्वम-पक्वकम् ॥ ३६ ॥ पायसंमधुकंद्राक्षागुडक्षीरफला-निच ॥ कदलीफलपिण्डालमधूकानिचमूलकम् ३७ पुरुपंनालिकेरंचकंदमूलानिसर्षपाः ॥ सर्वधान्यानि

लाजाश्चसूपश्चतिलपिष्टकम्॥३८॥इक्षवस्तद्रसश्चै-
वमाध्वीपैष्टीगुडोद्भवा ॥ येषुयानिनिषिद्धानितानि
त्यजवलिंहरेत् ॥ ३९॥ मत्स्यांस्तत्रसमानीयसह-
कारतलेक्षिपेत् ॥ अथवान्यस्यवृक्षस्यमूलेमंत्रेण
मंत्रवित् ॥ ४० ॥ मंत्रः॥ एकदंतोंविकापुत्रस्त्रिने-
त्रोगणनायकः ॥ रक्तांवरधरःश्रीमान्रक्तमाल्यानु-
लेपनः ॥ ४१ ॥ विनायकोगणाध्यक्षःशिवपुत्रोमहा
वलः॥प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम्॥४२॥
वलिप्रदायकंमर्त्यमायुषाचापिवर्द्धय ॥ अलक्ष्मीं
वामयंपापंग्रहंविघ्नंविनाशय ॥ ४३ ॥ वक्रतुंडमहा-
वीर्यमहाभागमहावल ॥ शिरसात्वामहंवंदेसापत्यां
रक्षगर्भिणीम् ॥ ४४ ॥ अथचेत्पञ्चमेमासिगर्भेभव-
तिवेदना ॥नीलोत्पलंमृणालंचपद्मकेसरसंयुतम्४५
अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिवेत्॥ एवंनप-
ततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥ ४६ ॥ नीलोत्पल-
स्यमूलंतुकाकमाचीसनालकम् ॥ शीततोयेनसं-
पिष्यक्षीरेणालोड्यतत्पिवेत् ॥४७॥ पुनर्नवासर्प-
पाश्वबदरीवीजमाहरेत् ॥ शीततोयेनसंपिष्यअजा-
क्षीरेणसंपिवेत् ॥ ४८ ॥

इति पंचममासगर्भरक्षा ॥ ५ ॥

भाषा—गर्भिणिस्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते पांचवे महीनेमें गणेशके प्रति चित्तको रोकके पुरुष वलिदे ॥ ३४ ॥ चकोरस्थल

लीपके उसपे गोवरका या आटाका गणेश बनाके स्थापन कर देना चाहिये ॥ ३५ ॥ फिर उनका गंधपुष्पादिकोंसे पूजन करके उनके अगाडी बलिदान दे ॥ पके हुये मूंगभात और कच्चा मूंगभात पकामांस और कच्चामांस ॥ ३६ ॥ खीर, सहत, दाख, गुड, दूध, फल, केलाकीघड, पिंडालकंद, महुवा, मूली, ॥ ३७ ॥ फालसा, नारियल, कंदमूलफल, सिरसम, सर्वधान्य, धानकी खील, दाल, तिल, पीठी ॥ ३८ ॥ ईख, ईखका रस, मदिरा यह समस्त द्रव्य एकपात्रमें स्थित करना चाहिये जो वस्तु इनमें निषेध हैं वह त्यागकर देना चाहिये ॥ ३९ ॥ और मच्छीभी बलिमें सामिल करनी चाहिये यह बलि २१ वार मंत्रसे मंत्रित करके ७ वार स्त्रीपर वारके गणेशसहित आम्रवृक्षके तले रख आवे आम्रवृक्षका अभाव हो तब और वृक्षके तले रख आवे ॥ ४० ॥ इकतालीसके श्लोकसेलेके चवालीसके श्लोकपर्य्यंत मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ और जो पांचवें महीनेमें गर्भमें पीडा हो तब नीलोफर, कमल ककडी, कमलगट्टा, नागकेशर यह औषधी बकरीके दूधमें पीसके छानके पीवे ऐसा करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल निवृत्त होजावै ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ अन्योपायः ॥ नीलकमलकी जड, काकमाची, कमलककडी, यह औषधी ठंढे जलसे पीसके दूधमें छानके पीवे गर्भपातोपद्रव शांतहो ॥ ४७ ॥ अन्योपायः ॥ सांठीकी जड, सिरसम, बेरकी गीरी यह दवाई शीतल जलसे पीसके बकरीके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपातोपद्रव शांत होजावे ॥ ४८ ॥

यह पांचवेंमहीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ५ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंषष्ठेमासितथाबलिः ॥ वसूनष्टस-
मुद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ४९ ॥ घृतान्नंचहरि-
द्रान्नंतंडुलांश्चैवपायसम् ॥ पीतवर्णप्रसूनानितथा-
नीलोत्पलानिच ॥ ५० ॥ सकांचनंपूर्णकुंभंसद्यो-
नद्यास्तटेक्षिपेत् ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणसावधानोभवे-
त्सुधीः ॥ ५१ ॥ मंत्रः ॥ प्रवासःपावनःसौम्यः
प्रत्यूषःपावकोनलः ॥ धरोध्रुवइतिह्येतेवसवोऽष्टौप्र-
कीर्तिताः ॥ प्रगृह्णंतुबलिंचेमंनित्यंरक्षंतुगर्भिणीम् ॥
॥ ५२ ॥ षष्ठेमासियदास्त्रीणांगर्भेभवतिवेदना ॥
तदावचैलामृद्वीकाचोत्पलंकेसरंपिबेत् ॥ ५३ ॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलमुत्पलंतुसकेसरम् ॥ शीतत्तो-
येनसंपिष्टाक्षीरेणालोड्यतात्पिबेत् ॥ ५४ ॥ रामठं
निंबपत्रंचमहिषीशृंगसर्षपाः॥कापिविष्ठाधूपकंतुदद्या-
देषांमहोत्तमम् ॥ ५५ ॥ गजपिप्पलिकंचैवतथा
नागरमुस्तकम् ॥ भार्ङ्गींचजीरकेद्वेचपद्माक्षंरक्त-
चंदनम् ॥ ५६ ॥ वचाच्छागलदुग्धेनपिबेन्नारीसु-
खाप्तये ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति॥५७॥

इति षष्ठमासगर्भरक्षा ॥ ६ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते छठे महीनेमें अष्टवसुओंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरुष बलिको मंत्रित करके देवे ॥ ४९ ॥ घृतके चूर्माकी पिंडी, चणाकी दाल, चावल, खीर,पीलेरंगके फूल, नीले कमलके फूल ॥५०॥ जलका

कलश उसमें यत्किंचित् सोना घालदेना चाहिये यह सर्व वस्तु एक पात्रमें रखके मंत्रसे मंत्रितकरके सावधान होके नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ॥ ५१ ॥ और जो यह बावनका श्लोकहै यह डेढ श्लोकका मंत्रहै इसीको २१ वार जपके ७ वार वारके बलिको दे आवे ॥५२॥ और छठे महीनेमें गर्भमें पीडा हो तो वच, इलायची छोटी, मुनक्का, नीलोफर, नागकेसर इनको दूधमें पीस छानके पीवे ॥ ५३ ॥ अन्योपायः ॥ पीपल, पीपलामूल, कमलका फूल, कमलकी केसर यह औषधी शीतल जलमें पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपीडा मिटे ॥ ५४ ॥ और धूप लिखतेहैं—हींग, नीमके पत्ते, भैंसके सींगका छिलका, शिरसम, बंदरकी वींट इनको समानलेके गर्भवतीके शरीरको और योनिको धूप देवे तो पेटकी शूल मिटे यह धूप बहुत उत्तमहै ॥ ॥ ५५ ॥ अन्योपायः ॥ गजपीपल, नागरमोथा, भारंगी, सपेद जीरा, स्याहजीरा, पदमाख, लालचंदन ॥ ५६ ॥ वच यह औषधी सर्वसमान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके सुखकी प्राप्तिके वास्ते स्त्री पीवे ऐसा करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल शमन होजावे ॥ ५७ ॥

यह छठे महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ६ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंसप्तमेमासिवैबलिः ॥ स्कंदमुद्दिश्यदातव्यःपूर्वोक्तविधिनैवहि ॥ ५८ ॥ मंत्रः ॥ स्कंदषण्मुखदेवेशशिवप्रीतिविवर्द्धन ॥ प्रगृह्णीष्वबलिं

चेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ५९ ॥ कपित्थंचप्रवालंचलाजाः शक्रयवान्विताः ॥ पिष्ट्वादुग्धेनदातव्यं गर्भिणीसुखहेतवे ॥ ६० ॥ कपित्थंशालुकंलाजाः शक्रंचतोयपेषितम् ॥ क्षीरेणालोडचदातव्यंगर्भिणीसुखहेतवे ॥ ६१ ॥ अश्वत्थवटमूलेचभृंगराजस्तथैवच ॥ सूर्य्यमुख्याःपुनर्नव्यामूलंचरक्तचन्दनम् ॥ ६२ ॥ अजादुग्धेनसंपिष्यछागीदुग्धेनसंपिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भस्तस्याःशूलंविनश्यति ६३

इति सप्तमे मासि गर्भरक्षा ॥ ७ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते सप्तम महीनेमें स्वामिकार्तिकके प्रति बलि देवे जो बलि छठेमहीनेमें जिस विधिसे दई जातीहै उसी विधिसे देनी चाहिये. परंतु मंत्र यह जपना चाहिये ॥ ५८ ॥ यह जो उनसठका श्लोकहै यह समस्त मंत्रहै इसको २१ वार पढके ७ सातवार वारकरके जलके किनारे पुरुष धर आवे ॥ ५९ ॥ और जो सातवें महीनेमें गर्भमें कुछ पीडा हो तो कैथकी गीरी, मूंगाकी शाख, धानकी खील, इंद्रजौ यह सर्व समानलेके पीसके गौके दूधसे पीनेसे गर्भवती स्त्रीको सुखप्राप्तिहो शूल शांतहो ॥ ६० ॥ अन्योपायः ॥ कैथवृक्षके फलकी गीरी, सालममिश्री, धानकी खील, इन्द्रजा यह सर्व समान लेके जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीनेसे गर्भिणी स्त्रीको सुखप्राप्तिहोवे ॥ ६१ ॥ अन्योपायः ॥ पीपलकी जड़, वडकी जड, जलभंगरा, सूर्यमु-

खीकी जड, सोंठाकी जड, लालचंदन ॥ ६२ ॥ यह औषधी सर्व समान लेके बकरीके दूधमें पीसके बकरीके दूधमें छानके गर्भिणी पीवे ऐसे करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल शमनहो जावे ॥ ६३ ॥ यह सातवें महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ७ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेपिचाष्टमे ॥ दुर्गामुद्दिश्य दातव्यःसुखंभवतिनान्यथा ॥ ६४ ॥ पायसंशर्के रालाजास्तृणधान्यौदनोघृतम् ॥ पूपिकाकृशराचैव माहिषंदधिमूलकम् ॥६५॥ माषानिष्पावकाःकंदः श्यामानिकुसुमानिच ॥ नीलोत्पलतिलादीनिपूर्ण कुंभःसकांचनः ॥ ६६ ॥ बलिःक्षिपेन्नदीतीरेमंत्रेणा- नेनमंत्रितः ॥ सलिलेवाक्षिपेन्मंत्रीसुखंभवतिनान्य- था ॥६७॥ मंत्रः॥कात्यायनि महादेविज्येष्ठेविंध्येनि शाप्रिये ॥ दुर्गादेविमहाकालिसिंहशार्दूलवाहिनि ॥ ॥ ६८ ॥ धनुःखड्गधरेदेविदुष्टदैत्यविनाशिनि ॥ नदीशैलप्रियेदेविकुमारिसुभगेशिवे ॥ ६९ ॥ अष्टहस्तेचतुर्वक्रेपिंगलेशुभनासिके ॥ प्रगृह्णीष्वब- लिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ७० ॥ पद्मकंह- स्तिपिप्पल्यउत्पलंपद्मधान्यकम् ॥ शीततोयेन संपिष्ट्वाक्षीरेणालोडयतात्पिबेत् ॥ ७१ ॥ पुनर्नवाच शृंगाटंबेलपत्रंकशेरुकम् ॥ अर्ज्जुनफलपद्माक्षंरक्त- चंदनमेवच ॥ ७२ ॥ छागदुग्धसमंपेयंदिनानिस- प्तकंतथा ॥ एवं नपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥७३॥

इत्यष्टमेमासिगर्भरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते आठवें महीनेमें दुर्गा देवीके प्रति बलि देना चाहिये जिस्से गर्भिणीको सुख प्राप्ति हो और रीति करनेसे आनंदप्राप्ति नहो ॥ ६४ ॥ खीर, खाँड, धानकी खील,तृणधान्यका भात,घृत, पोली, खीचडी,भैंसकी दही, मूली ॥ ६५ ॥ उडदके बाकले, चौले, किसी रकमका कंद, काले रंगके फूल, निलोफर, तिल, जलका कलश उसमें यत्किं-चित्सोना घाल देना चाहिये ॥ ६६ ॥ यह सब एक पात्रमें रखके मंत्रसे मंत्रित करके नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ॥ ६७ ॥ और अड़सठका श्लोक उन्हत्तरका श्लोक सत्तरका श्लोक यह तीन श्लोकोंका मंत्रहै इसको २१ वार जपके ७ सातवार स्त्रीपर वारके बलिको धर आवे ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ और जो आठवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो पदमाख, गजपीपल, कमलका फूल, कमलगट्टाकी गिरी, धनियां, यह सर्व दवाई समान लेके शीतल जलसे पीसके गायके दूधमें छानके पीनेसे गर्भका उपद्रव शांत होवे ॥ ७१ ॥ अन्योपायः ॥ सांठीकी जड, सिंघाडे, बेलपत्र कशेरू, अर्जुनवृक्षका फल, पदमाख, लालचंदन यह सर्व समान लेके कूटके कपडछान करके बकरीके दूधके संग फंकी मासे ६ नित्य दिन ७ सात लेनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल शांत हो जावे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

यह आठवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि कहीहै ॥ ८ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थमासेऽपिनवमेबलिः ॥ देवानांमातृ-

रुद्दिश्यसुखंभवतिनान्यथा ॥ ७४ ॥ दध्यन्नंदधि मुद्गान्नंलाजाश्चकृशरातथा ॥ श्वेतपंकजगंधौचश्वेतानि कुसुमानिच ॥ ७५ ॥ धूपोवस्त्रंहिरण्येनयुतः पूर्णघटस्तथा ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणवलिर्देयोजलाशये ॥ ७६ ॥ मंत्रः ॥ प्रगृह्णीतवलिंचेमंयूयंचदेवमातरः ॥ यूयंरक्षतसंतुष्टाःसापत्यांगर्भिणीमिमाम्॥ ॥ ७७ ॥ एरंडमूलीकाकोलीपालाशंवीजकंतथा ॥ पिष्ट्वाजलेनसंपेयंजीर्णान्नंभक्षयेत्सुखी ॥ ७८ ॥ पलाशवीजंकाकोलीचित्रमूलेनसंयुतम् ॥ उशीरमुदकेपिष्यजीर्णान्नंचैवभोजयेत् ॥ ७९ ॥ नागरंब्रह्मपत्रंचएलांचैवविडंगकम् ॥ जीरकंगजपिप्पल्याछागदुग्धेनतत्पिवेत् ॥ एतद्यत्नेकृतेनारी गर्भपातंनविंदति ॥ ८० ॥

इति नवमे मासि गर्भरक्ष ॥ ९ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाकेवास्ते नौवें महीनेमें देवतानकी माताओंके प्रति वलि दे जिस्से सुख प्राप्तिहो अन्य रीतिसे नहींहो ॥ ७४ ॥ दही, चावल, मूंग, धानकी खील, खीचडी, सफेद कमलके फल, रोली, सपेद सुगंधके फूल ॥७५॥ धूप, वस्त्र, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना घाल देना चाहिये ॥ अगाडी मंत्र लिखेंगे उस मंत्र करके वलि देना चाहिये जलके किनारे ॥ ७६ ॥ यह जो सतत्तरका श्लोकहै यह मंत्रहै इसको २१ वार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर ७ वार वारके

वलि दे ॥ ७७ ॥ और जो नौमे महीनेमें कुछ गर्भमें पीडा हो तो अरंडकी जड़, काकोली, पलासपापड़ा यह सब औषधी समान लेके कूट कपड़छान करके जलके साथ पीनेसे और पुराणा अन्न खानेसे स्त्रीको सुखकी प्राप्तिहो ॥ ७८ ॥ अन्योपायः ॥ पलासका बीज, काकोली, चीताकी जड़, खस, जलमें पीसके पीवे और पुराणा अन्नका भोजन करे ॥ ७९ ॥ अन्योपायः ॥ सूंठ, ढाकके पत्ते, इलायची, वायविंडंग, जीरा सपेद, गजपीपल यह सब दवाई समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे, ऐसे करनेसे नवमें महीनेमें स्त्रीका गर्भपात नहीं हो ॥ ८० ॥

यह नवमें महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ९ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेथदशमेबलिः ॥ उद्दिश्यनिर्ऋतिदेवींदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ८१ ॥ पक्वान्नंकृशरा लाजाःपक्वाऽपक्वाश्चमत्स्यकाः ॥ पक्वापक्वंचपललं सुराचेक्षुरसस्तथा ॥ ८२ ॥ कृष्णंवस्त्रंकृष्णगंधः कृष्णानिकुसुमानिच ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ निक्षिपेद्दक्षिणस्यांवैदिशिनीलपटावृतः ॥ ८३ ॥ मंत्रः ॥ पितृदेविपितृज्येष्ठमहादेविमहाबले ॥ प्रेतासनेदिशावासेनैर्ऋतेशोणितप्रिये ॥ ८४ ॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ८५ ॥ शर्करांचोत्पलंचैवमधुकंमुद्गमेवच ॥शीततोयेनसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ ८६ ॥ मधुकंपद्मकं

चैवउत्पलंचसनालकम् ॥ शीततोयेनसंपिष्यक्षीरेणा लोडचततिपवेत् ॥ ८७ ॥ नागरावचशुंठीचतगरं कुंकुसंतथा॥गोरोचनाचरंभाचअजाक्षीरेणपाययेत् ८८

इति दशमे मासि गर्भरक्षा ॥ १० ॥

भाषा–गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते दशमें महीनेमें निर्ऋति देवीके प्रति मंत्रका जाननेवाला वालिको मंत्रित करके देवे ॥ ८१ ॥ पकाहुवा भात, खिचड़ी, धानकी खील, कच्ची मच्छी, पकीहुई मच्छी,कच्चा मांस,पका मांस, शराव, ऊंखकारस ॥८२॥कालावस्त्र, कस्तूरी, कालेफूल,धूप,दीपक, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सुवर्ण घालदेना चाहिये यह सर्व वस्तु एक पात्रमें घालके नीला वस्त्र ओढके २१ वार मंत्र पढके ७ वार ऊपर वारके दक्षिणदिशामें धर आवे ॥ ८३ ॥ और चौरासीश्लोकसे पचासीके श्लोकतक डेढ श्लोकका मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ और जो दशमें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो मिसरी,कमलके फूल, मुलहटी, मूंग यह सर्व समान लेके शीतल जलसे पीसके गौके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपातका उपद्रव शांत होजावे ॥ ८६ ॥ अन्योपायः ॥ मुलहटी, कमलगट्टा, कमलपुष्प, कमलककड़ी यह सब समान लेके शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे॥८७॥अन्योपायः नागरमोथा, वच, सूंठ, तगर, केसर, गोरोचन, केलाकी जड़ यह सब समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपात

नहीं हो शूल शांत होजावे ॥ ८८ ॥ यह दशवें महीनेकी गर्भरक्षा विधिहै ॥ १० ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेचैकादशेबलिः ॥ वासुदेवंसमुद्दिश्यदेयश्चायंविधिःस्मृतः ॥८९॥ पायसंपूपपैष्ठेच गुञ्जालाजाश्चसक्तवः ॥ श्यामध्वजाश्यागन्धः श्यामानिकुसुमानिच ॥ ९० ॥ धूपदीपौपूर्णकुंभः सनीलोत्पलकांचनः ॥ अश्वत्थस्यतुमूलेवावासुदेवालयेऽथवा ॥ निक्षिपेत्प्रयतोभूत्वातत्रामुंमंत्रमुच्चरेत् ॥९१॥पांचजन्यःप्रभाव्यक्तःकौस्तुभोद्द्योतभास्करः ॥प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम्९२ पद्मोत्पलंचमधुकंनालकेनापिसंयुतम् ॥ शीततोयेनपिष्ट्वातुक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ ९३ ॥ त्रिफलाकर्कटशृंगीत्रिकटुश्चपुनर्नवा ॥ नागरंभृंगराजश्चछागीदुग्धेनसंपिबेत् ॥ ९४ ॥ मंजिष्ठंचंदनोशीरं शृंगाटंचकशेरुकम् ॥ गुडूचीपद्मकंचैवअजादुग्धेन संपिबेत् ॥ ९५ ॥

इत्येकादशे मासि गर्भरक्षा ॥ ११ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीका गर्भकी रक्षाके वास्ते ग्यारहमें महीनेमें वासुदेवके प्रति बलिको दे इस विधिसे॥८९॥खीर, पूड़े,कचौरी, घुंघची, धानकी खील, सत्तू, कालीध्वजा,कस्तूरी,काले सुगन्धीके फूल, ॥ ९० ॥ धूप, दीपक, जलका कलश उसमें नीलोफर सुवर्ण घालदेना चाहिये पीपल वृक्षके तले या नारायणके मंदिरमें

२१ वार मंत्र पढके ७ वार स्त्रीके ऊपर वारके पुरुष जतनसे बलि धर आवे ॥ ९१ ॥ यह वानवेंका जो श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ९२ ॥ और जो ग्यारहवें महीनेमें कुछ गर्भमें पीडा हो तो पद्माख, कमलगट्टा, मुलहटी; कमलकी-नाल यह सर्व समान लेके शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपातका उपद्रव शांत होजावे ॥९३॥ अन्यो-पायः ॥ हरडेकीछाल, वहेडा, आंवला, काकडासींगी, सूंठ, मिरच,पीपल,सांठीकी जड, नागरमोथा, जलभंगरा यह सर्व समान लेके पीसके वकरीके दूधमें छानके पीवे ॥ ९४ ॥ अन्यो-पायः ॥ मंजीठ, चंदन, खस,सिंघाडे,कशेरू, गिलोय, पद्माख यह सव समान लेके पीस छानके वकरीके दूधसे पीनेसे गर्भपात नहीं हो शूल शांत हो ॥ ९५ ॥ यह ग्यारहवें महीनेकी गर्भ-रक्षाविधि है ॥ ११ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेवैद्वादशेबलिः ॥ एकादशो-क्तविधिनादेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ९६ ॥ पद्मशृंगा-टकंचैवउत्पलंतुसनालकम् ॥ शीततोयेनपिष्ट्वातु क्षीरेणालोड्यतत्पिवेत् ॥ ९७ ॥

इति द्वादशे मासि गर्भरक्षा समाप्ता ॥ १२ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भिणीगर्भरक्षाक-थनं नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

भाषा–गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते बारहवें महीनेमें जिस विधिसे ग्यारहवें महीनेमें वलि दई है उसी विधिसे देनी

चाहिये और उसी देवताके प्रति देनी चाहिये और वही मंत्र पढना चाहिये ॥ १६ ॥ और जो बारहवें महीनेमें गर्भमें पीड़ा उत्पन्न हो तो कमलगट्टा, सिंघाड़े, कमलका फूल, कमलनाल यह औषधी सर्व समान लेके शीतल जलसे पीसके गौके दूधमें छानके गर्भवती स्त्री पीवे तो गर्भपातोपद्रव शांत होजावे ॥ १७ ॥ यह बारहवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि कही है ॥ १२ ॥

इति श्रीपण्डितनन्दकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां पञ्चमः पटलः ५॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिसुखप्रसवसिद्धये ॥ स्त्रीणांसुखायकर्तव्याउपायाअतिगोपिताः ॥ १ ॥ करंकीभूतंगोमूर्द्धासूतिकाभवनोपरि ॥ तत्कालनिहितंनार्याःसुखप्रसवकारकम् ॥ २ ॥ करंजपत्रबीजानां कल्केनचभिषग्वरः॥ तैलंपक्त्वाह्यजाक्षीरियोनिंलिंपेत्प्रसूतये ॥ ३ ॥ लेपनमंत्रः ॥ हिमवत्युत्तरेपार्श्वेशर्वरीनामयक्षिणी ॥ तस्यानूपुरशब्देनविशल्याभवगर्भिणीस्वाहा ॥ ४ ॥

भाषा—अब इसके उपरांत स्त्रियोंके सुखसे प्रसव होनेके वास्ते छठा पटल कहतेहैं. स्त्रियोंके सुखके वास्ते अतिगुप्त यह उपाय जनोंने करना चाहिये ॥ १ ॥ गौके या बैलके शिरका करंक बालक उदय करनेवाली स्त्रीकें मकानकी छतपै धर देवे तो उसी समय उस नारीके सुखसे बालक होवै ॥ २ ॥ अन्योपायः ॥ करंजुवाके पत्तोंका और बीजोंका कल्क करके

बकरीके दूधमें तिलोंके तैलको पकाके योनिको उस तेलसे लेपन कर दे तो सुखसे बालक उत्पन्न हो ॥ ३ ॥ और यह चौथा श्लोकहै यह तेल लगानेका मंत्रहै इस श्लोकको पढताजावे ॥ ४ ॥

तत्कालेकंटकासूलमुत्तरस्यांदिशिस्थितम् ॥ उत्पाट्यचैवहस्तेनजलेनसहपेषयेत् ॥ योनौलिस्वा तुसानारीसुखंसूतेनसंशयः ॥ ५ ॥ मूलंधत्तूरकस्यैवगृहीत्वासूर्यसन्मुखम् ॥ धत्तेशिरसियानारी सुखंसूतेनसंशयः ॥ ६ ॥ पश्चिमाभिमुखोमंत्रीगुंजामूलंसमुद्धरेत् ॥ कटौबद्धासुखंसूतेकामिनीनात्रसंशयः ॥ ७ ॥ अपामार्गस्यमूलन्तुतत्कालोत्पाटितंसुधीः ॥ पूर्वाशाभिमुखःपश्चादुदकेपिष्य लेपयेत् ॥ योनौसुखंप्रसूतेसानारीरहितवेदना ॥ ॥ ८ ॥ सर्पकंचुकमादायभस्मकृत्वाविधानवित् ॥ मधुनासहसंपिष्यचांजनेनप्रसूयते ॥ ९ ॥ श्वेतायाःशरपुंखायामूलंगृह्यविधानवित् ॥ कटौबद्धासुखंसूतेनारीनात्रविलम्बितम् ॥ १० ॥ गुग्गुलंसर्पनिर्मोकंचूर्ण्यंधूपंप्रदापयेत् ॥ योनौसासुखेनारीवेदनारहितासती ॥ ११ ॥ इंद्रवारुणिकामूलं निक्षिपेद्योनिमंडले ॥ तेनसासुखेनारीशीघ्रमेवन संशयः ॥ १२ ॥ मूलंचैवसमाहृत्यकलिहार्याःप्रयत्नतः ॥ संपिष्ययोनिसंलिप्यसुखंसूतेतुगर्भिणी ॥ १३ ॥

भाषा—उसी वखत कटालीकी जड उत्तरकी तरफकी हाथसे

उखाडके ल्यावे उसको जलसे पीसके योनिमें लेपनकर देवे तो सुखसे स्त्री बालकको पैदाकरे इसमें संदेह नहीं ॥ ५ ॥ अन्योपायः ॥ सूर्यके सन्मुख होके धतूराकी जडको ग्रहण करे उस जडको शिरपे स्त्री धारण करे तो सुखसे बालकको पैदाकरे इसमें संदेह नहीं ॥ ६ ॥ अन्योपायः ॥ पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके चिरमटीकी जडको उखाडके ल्यावे गूगलकी धूप देके कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांधे तो सुखसे बालक उदयकरे इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥ अन्योपायः ॥ पूर्वको मुख करके ऊंगाकी जडको तात्काल उखाडके ल्याके फिर जलसे पीसके योनिमें लेपकरे तो स्त्री सुखसे बालकको पैदाकरे और कष्ट रहित होजावे ॥ ८ ॥ अन्योपायः ॥ सांपकी कांचलीलाके भस्म बनावे फिर सहतमें पीसके कष्टवाली स्त्रीके नेत्रोंमें आंजे तो सुखसे प्रसूत होजावे ॥ ९ ॥ अन्योपायः ॥ विधानपूर्वक सपेद शरपुंखाकी जडको ग्रहण करके कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांध दे तो बहुत शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको उत्पन्न करे ॥ १० ॥ अन्योपायः ॥ गूगल सांपकी कांचली दोनोंको कूटके कष्टवाली स्त्रीके योनिको धूप देवे तो सुखसे बालक उत्पन्न करे कष्ट निवृत्तहो ॥ ११ ॥ अन्योपायः ॥ इंद्रायणकी जडको योनिमें रक्खे तो शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको पैदाकरे इसमें संदेह नहीं ॥ १२ ॥ अन्योपायः ॥ कलिहारी बूटीकी जड ल्याके उसको पीसके योनिमें लेपकर देवे तो सुखसे कष्टवाली स्त्री संतानको पैदाकरै ॥ १३ ॥

पुष्यार्कैमूलमाहृत्यकनकस्यविधानतः ॥ कटौब-
ध्वासुखंसूतेगर्भिणीनात्रसंशयः ॥ १४ ॥ पत्रकांसिं-
दुवारस्यनिर्गुण्डीपत्रकन्तुवा ॥ जलेनसहसंपिष्य
योनिंलिंपेत्प्रसूतये ॥ १५ ॥ वृषस्यमूलंहिमतो-
यपिष्टंरसोऽथवापर्पटपत्रजातः ॥ नाभेरधोलेपन
तोंऽगनानांसुखेनगर्भप्रसवंकरोति ॥ १६ ॥ लां-
गल्याःपरिलेपःकांजिकयोगेनकाकमाच्यावा ॥
नाभौसहसाकुरुतेगर्भप्रसवंनसंदेहः ॥ १७ ॥ तैले
नापिष्टारुबुकस्यकृष्णंवचांप्रलिप्त्वाखलुनाभिदेशे ॥
सुखप्रसूतिंकुरुतेंऽगनानांप्रपीडितानांबहुभिःप्रमादैः
॥ १८ ॥ मयूरमूलासनशिग्रुपाठाःव्याघ्रीबलालां-
गलिकासमेताः ॥ पिष्टारनालेनविलिप्यनाभौसु-
खेननार्य्याःप्रसवंकरोति ॥ १९ ॥ शालिपर्ण्यो-
भवंमूलंपिष्टंतंडुलवारिणा ॥ नाभिवस्तिभगेलेपा-
त्प्रसूतेप्रमदासुखम् ॥ २० ॥ सर्पकंचुकनृकेश-
सर्षपैस्तिक्ततुंबिकृतवेधनान्वितैः ॥ धूपनात्कुट-
कतैलसंयुतैस्तत्क्षणंखलुसुखंप्रसूयते ॥ २१ ॥
कृत्वादशधाखण्डंगुंजामूलंनिबध्यकटिदेशे ॥ सूत्रै-
स्सप्तभीरक्तैःसुखप्रसूतिंहिभामिनीलभते ॥ २२ ॥
मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ॥ घृतेनस-
हदातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ २३ ॥

भाषा—अन्योपायः ॥ पुष्य नक्षत्रमें जब सूर्य हो तब विधान-

पूर्वक धतूराकी जड लावे. उसको कष्टवाली स्त्री कटिमें बांधे तो सुखसे संतान उदय करे इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ अन्योपायः ॥ संभालुके पत्ते या निर्गुंडीके पत्ते शीतल जलमें पीसके योनिमें लेप करे तो सुखसे संतान उत्पन्नहो ॥ १५ ॥ अन्योपायः ॥ बांसके जडके शीतल जलमें पीसके नाभिके नीचे लेप करनेसे या पित्तपापडाके पत्तोंका रस नाभिके नीचे लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न हो ॥ १६ ॥ अन्योपायः ॥ लांगलीके जडको कांजीके जलमें पीसके नाभिमें लेपकरे अथवा काकमाचीके जडीकूं कांजीमें पीसके नाभिमें लेप करनेसे शीघ्र बालकको उत्पन्न करे इसमें संदेह नहीं ॥ १७ ॥ अन्योपायः ॥ अरंडकी गीरि, पीपल, वच, इन्होंको मीठे तेलमें पीसके नाभिमें लेप करे तो कैसाही कष्टहो सो निवृत्त हो जावे. सुखसे संतान उदयहो ॥ १८ ॥ अन्योपायः ॥ मोरशिखाकी जड, विजयसार, सहिंजनेकी जड, पाठा, कटाली, खरैटी यह सब दवाई समान लेके कांजीसे पीसके नाभिमें लेप करे तो नारीके सुखसे बालक उत्पन्नहो ॥ १९ ॥ अन्योपायः ॥ शालपर्णीकी जडको चावलोंके पानीमें पीसके नाभिपे बस्ति देशपे और भगपे लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न करे ॥ २० ॥ धूपमाह ॥ सांपली कांचली, मनुष्यके माथाके केश, सिरसम, कडवीतुंबी, अमलतास यह औषधी सब समान लेके कडुए तेलमें मरकोयके धूप देवे तो उसी समय सुखसे बालक उत्पन्न होवे ॥ २१ ॥ अन्योपायः ॥ चिरमठीकी जडको लाके दश टुकडे करके फिर सप्ततारकी लालडोरीमें उनको

अलेथा २ बांधके कष्टवाली स्त्रीके कटीमें बांधे तो सुखसे संतान उत्पन्नहो ॥ २२ ॥ अन्योपायः ॥ बिजौराकी जड, मुलहटी, शहद, यह वस्तु जलसे पीसके जलमें छानके गरम करके घी उसमें डालके पीवेतो कष्टवाली स्त्रीको सुखसे संतान हो कष्ट दूरहो ॥ २३ ॥

वालंबलाचांशुमतीबृहत्यौपाठानिशादारुनिशागुडू-
ची ॥ एभिस्सुपिष्टैःखलुगर्भिणीनांतैलंविपक्वंपय-
साप्रशस्तम् ॥ २४ ॥ अभ्यंगकर्णांतरपूरका-
भ्यांसर्वामयानांप्रलयंविधत्ते ॥ गर्भस्यपुष्टिंसवलं
शरीरंकृशानुवृद्धिंरुचिरांरुचिंच ॥ २५ ॥ अश्व-
त्थोत्तरमूलंतंडुलपयसानिघृष्टयापिवति ॥ सद्यो-
भवतिविशल्याविमूढगर्भापिनात्रसंदेहः ॥ २६ ॥
प्रशस्तेरक्षतुदक्षहितस्त्रीभिरलंकृते ॥ प्रसूतांसू-
तिकागारेरक्षामन्त्राभिमंत्रिताम्॥२७॥प्रणवोभुवने-
शानिस्मरश्रीरक्षयुग्मकम् ॥ वह्निजायावधिमंत्रः
प्रोक्तःपंचदशाक्षरैः ॥ २८ ॥ दोरकंरक्तसूत्रेणस्त्री
प्रमाणंतुकारयेत् ॥ सप्तग्रंथिसमायुक्तंसप्ततंतुवि
निर्मितम् ॥२९॥ सूतिकाभवनद्वारेबध्नीयान्मंत्रमं-
त्रितम्॥रक्षामंत्रःसमाख्यातःसर्वासांहितकाम्यया॥३०॥

भाषा—नेत्रवाला, खैरैटी, चांदवेल, कटालीकी जड, पाडर, हलदी, दारुहलदी, गिलोय यह सब दवाई पीसके कल्क बनाके तेलसे चौगुणा दूध डालके कल्क उसमें डालके पकाले यह तेल

गर्भवती स्त्रीको हितकारीहै ॥ २४ ॥ यह तैल मालिस करनेसे कानमें डालनेसे सब रोगोंका नाश करताहै, तथा गर्भकी पुष्टि करताहै, शरीरको बलवान् करताहै, अग्निको बढाताहै, और रुचिको बढाताहै ॥ २५ ॥ पीपल वृक्षकी उत्तरके तर्फकी जड लेके चावलोंके पानीसे पीसके जो गर्भवती स्त्री पीवे तो मूढगर्भवाली हो तोभी तात्काल कष्ट रहित होजावे. सुखसे संतान उत्पन्नहोवे इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ॥ २६ ॥ बहुत श्रेष्ठ प्रसूता स्त्रीका स्थान प्रमाण करे और चतुर हितकारी स्त्रियां उस जगह नियुक्त करनी चाहिये. फिर रक्षामंत्रसे प्रसूता स्त्रीकी रक्षा करनी चाहिये ॥ २७ ॥ ॐह्रींह्रीं स्मरस्मर श्रींश्रीं रक्ष-रक्ष स्वाहा ॥ यह पंचदशाक्षर मंत्र रक्षाविधिवास्ते कहाहै ॥ २८ ॥ लालसूतका डोरा स्त्रीके प्रमाणमाफिक करना चाहिये परंतु सात तारका होना चाहिये फिर उसमें सात ७ गांठ लगाके पूर्वोक्त कहे हुए मंत्रसे १०८ बार मंत्रित करना चाहिये ॥ २९ ॥ सूतिकाके भवनके दरवाजेपे बांध देना चाहिये. सब स्त्रियोंके हितकेवास्ते यह रक्षाविधि कहीहै ॥ ३० ॥

अबलांरुधिरस्रावादबलांसमुपाचरेत् ॥ स्नेहाभ्यंगेनमतिमान्निर्वातस्थानरक्षणैः ॥ ३१ ॥ पैष्टिकीं मागधींवापिमदिरामापिपाययेत् ॥ एवंद्वित्रिदिनंतज्ज्ञैःकर्तव्यास्तुहिताःक्रियाः ॥ ३२ ॥ यवागूंसघृतांवैद्यःकृशराम्वाबलादिकम् ॥ सात्म्यंकालंवयोवीक्ष्यत्रिरात्रंभोजयेत्तथा ॥ ३३ ॥ यवकोलकुलित्थानांजांगलस्यरसोत्तमैः ॥ ओदनंभोजयेत्सात्म्यंकृ-

शानुरक्षयेत्ततः ॥ ३४ ॥ अनेनविधिनादक्षःप्रश-
स्ताभिःसुरक्षिताम् ॥ प्रदक्षागर्भजननेस्त्रियस्तांस-
मुपाचरेत् ॥ ३५ ॥ कोष्णेनपयसास्नेहैःसुस्निग्धां
स्नापयेत्ततः ॥ यथायुक्तिविधानज्ञःपश्चाद्दानानिका
रयेत् ॥ ३६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रेसुखप्रसवोपायकथनोनाम
षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

भाषा—रुधिरके वहनेसे निर्वलहुई स्त्रीका तैलादिकोंसे मर्दन करके वगैर हवाके मकानमें रखनें करके रक्षामंत्र करके उपाच-रण करे अर्थात् बुद्धिमान् वैद्य चिकित्साकरे ॥ ३१ ॥ पैष्टिकी संज्ञक मदिराको और मागधीसंज्ञक मदिराको वैद्य प्रसूता स्त्रीको प्यावे ऐसे प्रसूताकी विधिके जाननेवाले वैद्यने दो तीन रोजतक हितकारी क्रिया करनी चाहिये ॥ ३२ ॥ बलको सात्म्यताको समयको अवस्थाको देखके तीन रात्रि पर्य्यंत घृत सहित यवागूका भोजन करावे अथवा खिचडी घी सहित खवावे ॥ ३३ ॥ जौंका कोलका अथवा कुलित्थके रसके संग अथवा जंगलके पशु पक्षियाक मांसके सोरुवाके संग भात खानेको वैद्य बलमा-फिक देवे अग्निकी रक्षा रक्खै अर्थात् मंदाग्नि नहीं होनेदे ॥ ३४ ॥ इस विधि करके अच्छी श्रेष्ठ हितकारी क्रियाओंसे चतुर वैद्य प्रसूताकी रक्षा करे या बहुत चतुरदाई लोग प्रसूताकी प्रति-क्रिया करे ॥ ३५ ॥ प्रथम तैलादिकोंकी मालिस सर्व शरीरको

कराके पीछे गरम जलसे स्नान करावे फिर युक्तिपूर्वक सर्व विधानका जाननेवाला वैद्य दान पुण्य करावे ॥ ३६ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतन्त्रभाषाटीकायांषष्ठःपटलः ६

अतःपरंप्रवक्ष्यामिबालरक्षांयथाक्रमम् ॥ प्रथमेदिवसेनाम्नीनंदिनीक्रमतेशिशुम् ॥१॥ तद्गृहीतस्यबालस्यज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ गात्रशोषस्तथास्वेदो नाहारेष्वभिनन्दनम् ॥२॥छर्दिर्मूर्च्छाचकंपश्चशोषो दीनस्वरस्तथा ॥ विधानंतत्रवक्ष्यामियेनमुंचतिनंदिनी ॥ ३ ॥ कूलद्वयमृदाकुर्य्यात्पुत्तिकांसुमनोहराम् ॥ शुक्लोदनंशुक्लगंधंतथागंधानुलेपनम् ॥ ४ ॥ शुक्लपुष्पाणिपंचैवध्वजाः पंचप्रदीपकाः ॥ स्वस्तिकापंचपूर्वाह्णेपूर्वस्यांदिशिसंयतः ॥५ ॥ बलिं दद्यादथोराजसर्षपोशीरमेवच ॥ शिवनिर्माल्यमार्जारनृकेशानिंबपत्रकम् ॥ ६ ॥ गव्यंघृतंततोऽनेनधूपयेच्चैवबालकम् ॥ एवंदिनत्रयंकृत्वाचतुर्थेमंत्रवारिणा॥७॥स्नापयेद्बालकंपश्चाद्ब्राह्मणंवापिभिक्षुकम् क्षीरेणभोजयेद्देवंस्वस्थोभवतिबालकः॥ ८ ॥ स्नापनेपूजनेचैवबलिदानेचमार्जने ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेण कर्त्तव्योविधिरुत्तमः ॥ ९ ॥ मंत्रः ॥ प्रणवोभुवनेशानिखंखःस्वाहाषडक्षरः ॥ एवंकृतेनबालस्यसुखं भवतिनान्यथा ॥ १० ॥

इति प्रथमदिवसेबालकस्यग्रहनिवारणविधिःसमाप्तः ॥ १ ॥

भाषा-अब इसके उपरांत क्रमपूर्वक बालरक्षाको कहते हैं पहिलेदिन नंदिनी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है ॥ १ ॥ उस बालकके प्रथम ज्वर हो गात्र सूखे पसीना आवे स्तन लेनहीं ॥२॥ दूधकी छर्दि करे मूर्च्छा हो कंप हो मुखशोप हो क्षीण स्वर हो यह लक्षण नंदिनी देवीकरके ग्रहित बालकके होते हैं, अब जिस विधानसे वह बालकको छोडदे सो विधान कहते हैं ॥३ ॥ नदीके दोनों किनारेकी मट्टी लाके उसकी सुन्दर मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी सपेद भात पकाके रक्खे सपेद फूल सपेद चन्दन घिसके रक्खे कपूर रक्खे ॥ ४ ॥ सपेद चमेलीके फूल पांच ५ सपेद ध्वजा पांच दीवे पांच आटाके दिये यह सब एक जगह रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकपर वारके ४ घडी दिन चढे पूर्व दिशामें धर आवे ॥५॥ ऐसे बलिको दे और बली दिये पीछे राई खस आकके फूल बिल्लीके बाल मनुष्यके शिरके बाल नीमके पत्ते ॥ ६ ॥ गौका घी यह सब द्रव्य एकत्र करके बालकके धूप देवे ऐसे तीन दिन यह विधान करे ॥ ७ ॥ फिर चौथे दिन जलमंत्रित करके बालकको स्नान करावे फिर ब्राह्मणको और अभ्यागतोंको दूधका भोजन करावे ऐसा करनेसे बालक निरोग होजाताहै ॥ ८ ॥ स्नान करानेमें पूजनमें बलिका देनेमें मार्जनमें अगाडी कहेंगे उस मंत्रसे उत्तम विधि करनी चाहिये ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं खं खः स्वाहा ॥ यह छः अक्षरके मंत्रको जपना चाहिये इसीकरके बलि देना चाहिये इसी करके स्नान करना चाहिये ॥ १० ॥

इति प्रथमदिवसे बालग्रहरक्षाविधिः ॥ १ ॥

द्वितीयेदिवसेबालंगृह्णातिचसुनंदना ॥ ततोभवे-
ज्ज्वरःपूर्वंसंकोचोहस्तपादयोः ॥ ११ ॥ दंतान्खाद
तिश्वसिति निमीलयतिचक्षुषी॥ आहारंचनगृह्णाति
दिवारात्रौचरोदति ॥ १२ ॥ अक्षिरोगंछर्दनंचभ
वेद्भीतिपुनः पुनः ॥ कृशत्वंजायतेऽत्यन्तंचिह्नमेत-
त्प्रकीर्तितम् ॥ १३ ॥ तंदुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्मा-
याथपुत्तिकाम् ॥ त्रयोदशध्वजादीपाःस्वस्ति
काधवलोदनम् ॥ १४ ॥ सिद्धान्नंसर्षपंमाषंपक्वाप
क्वंतिलंतथा ॥ मांसंचैतानिसंहृत्यबलिंबालसखा
तये॥१५॥पश्चिमायांचसंध्यायामेवंदद्याद्दिनत्रयम्॥
धूपंमंत्रजपंस्नानंकुर्य्यात्पूर्वक्रमेणवै ॥ १६ ॥
इति द्वितीयदिवसेबालकग्रहनिवारणविधिःसमाप्तः ॥

तृतीयेऽह्निचगृह्णातिघंटालीबालकंग्रही॥तयास्यात्कं
पमुद्वेगंकासंश्वासंचरोदनम् ॥ १७ ॥ गजदन्तञ्च
गोदन्तंतथांजन्यास्तुकोशकम् ॥ अजाक्षीरेणसंपि
ष्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥ १८ ॥ धूपयेन्निंबपत्राणिन
खसर्षपराजिकाः ॥ लेपितोधूपितोबालःसुखमाप्नो
तिनिश्चितम्॥१९॥प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्चका
रयेत्॥एवंकृतेतुसादेवीबालकंमुंचतिस्फुटम्॥२०॥
इतितृतीयदिनेबालकग्रहनिवारणविधिः ॥ २ ॥

भाषा—दूसरे दिन सुनंदना नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै
उसके यह लक्षण होतेहैं प्रथम ज्वर उत्पन्न हो,हाथ पैरोंको सकुचा

रक्खे ॥ ११ ॥ दांतोंको चावे श्वासको जाजती रहै, नेत्रोंको मिचारक्खे स्तन चूखेनहीं, दिनरात्रि रोयाकरे ॥ १२ ॥ नेत्रोंमें रोगहो अर्थात् दूखे दूधकी छर्दि हो और चमके वारवार शरीर दुर्बल होजावे इन लक्षणोंसे सुनंदना देवीका दोष होताहै ॥ १३ ॥ इसका उपाय कहतेहैं—सेरभर चावल पीसके देवीकी मूर्ति वनाके उसको एक सहनकमें रखके १३ ध्वजा पचरंगी १३ दीपक १३ आटाके दीपक धोले चावल पकेहुए ॥ १४ ॥ गेहूंका दलिया सिरसम उड़द वाकले मांस यह संपूर्णवस्तु अगाडी रखके पात्रमें ॥ १५ ॥ २१ वार मंत्र पढके ७ वार वालकपर वारके संध्या समय पश्चिमदिशामें धर आवे ऐसे तीन दिन करनेसे वालकको आनंद होजावै और धूप मंत्र स्नान कराना यह सव प्रथम दिनकी विधिके क्रमसे करै ॥ १६ ॥ इति द्वितीयदिवसे वालग्रहरक्षाविधिः ॥२॥ तीसरे दिन घंटालि नामदेवी वालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम वालकका शरीर कंपे उद्वेगहो खाँसीहो श्वासका हकारा हो और वहुत रोवे इन लक्षणोंसे घंटाली देवीका दोष जानना ॥ १७ ॥ हाथीदांत गौका दांत कुम्हारी जानवरके घरकी मट्टी यह सव वकरीके दूधमें पीसके वालकके शरीरपे लेपकरे ॥ १८ ॥ नींवके पत्ते नख सिरसम राई इनकी धूपदे ऐसे करनेसे वालक निश्चय सुखको प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥ और दूसरे दिनकी वलिविधान करे प्रथम दिनकी रीतिसे स्नान करावे उसी मंत्रका जाप करे

सबकर्म पूर्ववत् करे ऐसे करनेसे घंटाली देवी बालकको छोड देतीहै ॥ २० ॥

इति द्वितीय–तृतीयदिवसे बालग्रहरक्षाविधिः ॥ २ ॥ ३ ॥

चतुर्थेह्निचगृह्णातिकटकोलीग्रहीशिशुम् ॥ तच्चेष्टा ऽरुचिरुद्वेगःफेनोद्गारोदिगीक्षणम् ॥ २१ ॥ गजदन्ताऽहिनिर्मोकराजिकाश्चप्रलेपयेत् ॥ धूपयेत्सर्षपारिष्टकेशैर्मुंचतिसाग्रही ॥ २२ ॥ मंत्रस्नानादिकं सर्वंबलिदानादिकंतथा ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ २३ ॥ इतिचतुर्थेदिनेबालग्रहनिवारणविधिः ॥ पञ्चमेऽहन्यहंकारिग्रहीगृह्णातिबालकम् ॥ तच्चेष्टाज्जृंभणश्वासमुष्टिबंधोर्ध्ववीक्षणम् ॥ ॥ २४ ॥ शिलातालवचालोध्रमेषशृंगैःप्रलेपयेत् ॥ लशुनंनिंवपत्राज्यसिद्धार्थैर्धूपयेत्ततः ॥ २५ ॥ एवं मुंचतिसाबालंबलिदानाद्विशेषतः ॥ अवशिष्टंतुयत्सर्वंपूर्वरीत्याप्रकारयेत् ॥ २६ ॥ इतिपंचमादिनेबालग्रहनिवारणविधिः ॥ ५ ॥ षष्ठेचदिवसेनाम्नाखट्वांगीक्रमतेशिशुम् ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यरोदनमोहनम् ॥ २७ ॥ कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदन्तैर्घृतान्वितैः ॥ धूपयेल्लेपयेच्चापिततोमुञ्चतिसाग्रही॥२८॥

इतिषष्ठदिवसबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ६ ॥

भाषा–चौथे दिन कटकोलीनाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं–स्तन चूखे नहीं उद्वेगहो मुँहमें झाग आवे

डकार ले रोवे दश दिशाओंकी तरफ आंख फेरके देखै ॥ २१ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—हाथीदांत, सांपकी कांचली, राई, यह तीनों बराबर लेके पानीमें पीसके शरीरपर लेप करे सिरसम नींबके पत्ते मनुष्यके माथाके बाल इनकी धूनी देनेसे घंटाली देवीका दोप दूर हो बालक चंगाहो ॥ २२ ॥ और मंत्र जाप स्नान कराना बलिदान यह सब वस्तु पहिले दिनके माफिक करै ॥ २३ ॥ इति चतुर्थदिनग्रहितबालरक्षा विधिः ॥ ४ ॥ पांचवेंदिन अहंकारी देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहतेहैं—जंभाई बहुत आवे श्वासका हकारा हो मुट्ठी बँधी रक्खे ऊपरको देखे यह लक्षण होनेसे अहंकार देवीका दोष कहना ॥ २४ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—मनसिल हरताल बच लोध मेढासिंगी यह औपधी सब समान लेके पानीमें पीसके बालकके लेपन करे और लहसन नींबके पत्ते घी राई इनकी धूनी बालककोदे ॥ २५ ॥ ऐसा करनेसे अहंकारी देवी बालकको छोड देतीहै और शेप रहे बलिदान स्नान मंत्रजपादिक कर्म है सो पहिले दिनकी माफिक करे बालक चंगाहो ॥ २६ ॥ इति पंचमदिनग्रहितबालकरक्षाविधिः ॥ ५ ॥ छठे दिन खट्वांगी देवी बालकको ग्रहण करतीहै इसके लक्षण कहतेहैं-प्रथम बालकके अचैनीरहै और हँसे कदाचित् रोवे मोह हो अर्थात् गफलत रहै स्तन चूखै नहीं इन लक्षणोंसे खट्वांगी देवीका दोप कहना ॥ २७ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—कूट गुग्गुल राई हांथीदांत गौका घी इन द्रव्योंकी बालकको धूपदे और यही

द्रव्य जलमें पीसके बालकको लेपन करे और दान बलिदान मंत्र जाप स्नान यह सब पहिले दिनकी माफिक करे बालक चंगा हो खट्वांगी देवीका दोष दूर हो ॥ २८ ॥

इति षष्ठदिनसग्रहितबालकरक्षाविधिः ॥ ६ ॥

सप्तमेदिवसेनाम्नाहिंसिकाक्रमतेशिशुम् ॥ तच्चेष्टा-जृंभणंश्वासोमुष्टिबंधस्तथैवच ॥ २९ ॥ मेषशृं-गीवचारोध्रंहरितालंमनःशिला ॥ एतत्तुरुचिरंपि-ष्ट्वाततोबालंप्रलेपयेत् ॥ ३० ॥ बलिंदद्यात्तुप्रा-श्रीत्याततोमुंचतिसाग्रही ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथ-मोक्तक्रमेणतु ॥ ३१ ॥ इति सप्तमदिवसगृहीत-बालकरक्षाविधिः ॥ ७ ॥ अष्टमेदिवसेनाम्नाभीष-णीक्रमताशिशुम् ॥ कासतेश्वासतेचैवगात्रंसंकोच-तेभृशम् ॥ ३२ ॥ अपामार्गमुशीरंचपिप्पलीचि-त्रकंतथा ॥ अजामूत्रेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥ ॥ ३३ ॥ गोशृंगनखकेशैस्तुधूपयेद्बालकंततः ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३४ ॥ इत्य-ष्टमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ८ ॥ नवमेदि वसेबालंमेषागृह्णातिवैशिशुम् ॥ तच्चेष्टात्रासनोद्वे-गःस्वमुष्टिद्वयखादनम् ॥ ३५ ॥ वचाचंदनकुष्ठो-ग्रासर्षपास्तत्रलेपयेत् ॥ नखवानररोमभ्यांधूपना-न्मुञ्चतिग्रही ॥ ३६ ॥

इति नवमदिनगृहीतबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

भापा—सातवें दिन हिंसकानाम देवी वालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहतेहैं—जँभाई आवे श्वासहो मूठी खोलेनहीं स्तनपान करे नहीं ॥ २९ ॥ अव इसका उपाय कहतेहैं मेढासींगी वच लोध हरिताल मनसिल यह सव समानलेके पानीसे वारीक पीसके वालकके शरीरको लेपन करे ॥ ३० ॥ और वलिदान मंत्रजप स्नान कराना यह पहिले दिनकी माफिक सव कर्म्म करे वालक चंगाहो हिंसिका देवीका दोप दूर हो ॥ ३१ ॥ इति सप्तमदिवसगृहीत वालरक्षाविधिः ॥ ॥ ७ ॥ आठवेंदिन भीपणी नाम देवी वालकको ग्रहण करती है इसके लक्षण कहतेहैं—कासश्वास हो अंगको संकोच रक्त ज्वर हो आंख खोले नहीं इन लक्षणोंसे भीपणी देवीका दोप जानना ॥ ३२ ॥ अव इसके उपाय कहतेहैं चिरचिरा खस पीपल चित्रक यह सव दवा समानलेकर वकरीके मूत्रमें पीसके वालकके लेपन करे ॥ ३३ ॥ गौका सींग नख मनुष्यके वाल इन्होंकी धूप वालकको देवे और मंत्र जाप स्नान कराना वलिदान देना यह सव कर्म प्रथम दिनकी माफिक करे ॥ वालक चंगाहो भीपणी नाम देवीका दोप दूर हो ॥ ३४ ॥ इत्यष्टमदिवसगृहीत वालरक्षाविधिः ॥ ८ ॥ नवमें दिन मेपा नाम देवी वालकको ग्रहण करतीहै तिसके लक्षण कहतेहैं ॥ प्रथम वालक चमक चमक पडे और अचैनीरहै अपने हाथकी मूठीको काट २ खाय इन लक्षणोंसे मेपा नाम देवीका दोप जानना ॥ ३५ ॥ इसका उपाय कहतेहैं—वच चंदन कूट राई

यह सब दवा समानलेके जलमें पीसके बालकके शरीरको लेपन करे नख बंदरके रोम इन्होंकी धूनी दे और बलिदानादिक सब कर्म पहले दिनकी माफिककरे बालक चंगा हो मेषानाम देवीका दोष दूर हो ॥ ३६ ॥

इति नवमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

दशमेदिवसेनाम्नारोदनाक्रमतेशिशुम् ॥ तच्चेष्टा कासनंचैवरोदनंमुष्टिबंधनम् ॥ ३७ ॥ कुष्ठोग्रा-सर्जसिद्धार्थैर्लिंपेन्निंबेनधूपयेत् ॥ मत्स्यमांससुरा युक्तंनिशायांबलिमाहरेत ॥ ३८ ॥ अपामार्गा-कुरोशीरचंदनक्वाथवारिणा ॥ मंत्रमष्टशतंजप्त्वा त्रिसंध्यंपरिषिंचयेत् ॥ ३९ ॥ एवंकृतेतुसादेवी बालंमुंचतिरोदना ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्च कारयेत् ॥ ४० ॥

इति दशमदिनग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १० ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे दिनग्रहीगृहीत-बालरक्षाकथनं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

भाषा—दशवेंदिन रोदना नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं खांसी हो रोवे बहुत चीह्लीमारे मूठी बँधी रक्खे स्तनपान नहीं करे ॥ ३७ ॥ इन लक्षणोंसे रोदना नाम देवीका दोष जानना अब इसका उपाय कहतेहैं ॥ कूट वच राल राई यह सब दवाई लेके पानीमें पीसके बालकके शरीरको लेपन करे और नींबके पत्तोंकी धूनी दे और

पहिले दिनकी माफिक बलिदान संध्या समयमें देना चाहिये परंतु मत्स्यका मांस, मदिरा यह और बलिमें सामिलकर देना चाहिये ॥ ३८ ॥ ऊंगाके वृक्षके अंकुर, खस, लालचंदन, इन द्रव्योंका क्वाथ बनाके फिर क्वाथ जलको एक सौ आठ वार मंत्रितकरके त्रिकाल बालकको स्नान करावे ॥ ३९ ॥ और मंत्र जपादिक शेष कर्म पहिले दिनकी माफिक करे ऐसे करनेसे रोदना देवीका दोष दूर हो बालक चंगा हो ॥ ४० ॥

इति दशमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ७ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृते बालतंत्रभाषायां सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अथमासगृहीतस्यबालकस्यविमुक्तये ॥ बलिंव-क्ष्यामिसुखदंसर्वतंत्रेषुगोपितम् ॥ १ ॥ प्रथमेमा-सिगृह्णातिकुमारीनामयोगिनी ॥ उद्वेगज्वरशोषा-दिचेष्टितंतत्रजायते ॥२॥ नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यसं-ध्याकालेबलिंहरेत् ॥ नदीतटद्वयकृष्णमृदादेवी-स्वरूपकम् ॥ ३ ॥ कृत्वापूजाप्रकर्तव्यापुष्पधूपा-दिभिस्ततः ॥ वटकामुष्टिकापूपाअग्रभक्तंगुडोद-धि ॥ ४ ॥ चतुर्वर्णपताकाश्चप्रदीपाःपुष्पचंदनम्॥ अपराह्णेऽथवादद्यान्मंत्रेणानेनमंत्रवित् ॥५॥ ॐ नमो भगवतेचरावणायचबालकम् ॥ मुंचयुगंवह्निजाया मंत्रोविंशतिवर्णकः ॥६॥ इतिप्रथममासग्रहगृहीत-बालकरक्षाविधिः ॥ १ ॥ द्वितीयेमासिगृह्णाति

वालकंमुकुटाग्रही ॥ ग्रीवानिवृत्तिर्निष्पंदोवपुषः पीतशीतता ॥ ७ ॥ वक्त्रसंशोषणोद्गारारोचकानितदाश्रयम् ॥ क्षीरान्नंकृशरापूपतिलतंडुलसंयुतम् ॥ ८ ॥ कृष्णपुष्पांशुकालेपैस्तत्रसायैंवलिंहरेत्॥ कुसुंभंलशुनंनिवंसंचूर्ण्यधूपयेच्छिशुम्॥ ॥ ९ ॥ इति द्वितीयमासे बालरक्षा ॥ २ ॥

भाषा—अब दिनरक्षा कहनेके अनंतर महीनोंमें गृहीत हुए वालकोंकी रक्षाकेवास्ते बडे गुप्त सुखके देनेवाले बलिदानादिक प्रयोग कहतेहैं ॥ १ ॥ पहिले महीनेमें कुमारी नाम योगिनी वालकको ग्रहण करतीहै. उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम बालकके उद्वेगहो, ज्वरहो गात्रशोषहो रोवे बहुत स्तनपान करे नहीं इन लक्षणोंसे कुमारी नाम देवीका दोष कहना ॥ २ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं । नैर्ऋत्य दिशामें संध्याकालमें बलिदे. नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टीलाके उसकी देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें स्थापनकरे ॥ ३ ॥ फूल धूप इन्हों करके पूजन करे. बडे मुठीये पूडे भात गुड दही चार रंगकी ४ ध्वजा ४ दीपक फूल चंदन यह सब वस्तु उसी पात्रमें मूर्तिके अगाडी रखके फिर मंत्रका जाननेवाला मंत्र पढके बलिको देवै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते रावणाय बालकं मुंच मुंच स्वाहा इस मंत्रको २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके दे बालक निरोग हो ॥ ६ ॥ इति प्रथममासरक्षा ॥ १ ॥ दूसरे महीनामें बालकके पीडा उत्पन्न होनेसे मुकुटा देवीका दोष जानना इसके लक्षण कहतेहैं--ग्रीवा

ढीली गेरदे अंग कंपै शरीर पीला होजाय शरीर शीतल रहै ।।७।। मुख सूखा रहै स्तन पीवे नहीं डकार बहुत आवें. अब इसका उपाय कहतेहैं मिट्टीकी देवीकी मूर्ति बनाके एक सहन-कमें रखके फिर खीर खिचडी पूडे तिल चावल ।।८।। कालेफूल, कालावस्त्र काली कस्तुरीका घिसाहुवा चंदन यह सब वस्तु देवीके अगाडीधर निवेदन करे फिर प्रथम लिखे हुए मंत्रको २१ वार पढके ७ वार बालकपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ बलिको धर आवे. संध्या समयमें फिर कुंसुंभ लहसन नींबके पत्ते इन्होंका चूर्ण करके बालकको धूपदे बालक निरोगहो ।। ९ ।।

इति द्वितीयमास रक्षा ।। २ ।।

तृतीयेमासिगृह्णातिबालकंगोमुखीग्रही ॥ तच्चेष्टारो-दनंनिद्रावहुमूत्रपुरीषकम् ॥ १० ॥ निमिलयति नेत्राणिगोगंधोमधुकंधवा ॥ प्रियंगुतिलकुल्माषं चतुःपिंडयमोदकैः ॥ ११ ॥ जयाकुसुमसंयुक्तं मध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ धूपयेत्तिलसिद्धार्थैस्ततोमुं-चतिसाग्रही ॥ १२ ॥ इति तृतीयमासे बालरक्षा ॥ ॥ ३ ॥ चतुर्थेमासिगृह्णातिबालकंपिंगलाग्रही ॥ पयःपाना रुचिःश्वैत्यंभुजस्पंदास्यशोषणे ॥ १३ ॥ पूतिगन्धस्तुतच्चेष्टातत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ नमंत्रंनौ-षधंतत्रबलिंतत्रनकारयेत् ॥ १४ ॥ इति चतुर्थे-मासे बालरक्षा ॥ ४ ॥ पंचमेमासिगृह्णातिबालकं वडवाग्रही ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंकासोमुखशोषणरो-

दने ॥ १५ ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिविश्रांतोनपिबे-
त्पयः ॥ ओदनंपोलिकाशाकंमत्स्यमांसानिदाप-
येत्॥१६॥ भक्ष्याणिलप्सिकाचैवस्वस्तिकाःपद्मकं
तथा ॥ दक्षिणांदिशमाश्रित्यमध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥
॥ १७ ॥ इति पंचममासे बालरक्षा ॥ ५ ॥

भाषा--तीसरे महीनेमें गोमुखी नामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै, उसके लक्षण कहतेहैं. बालक बिलक बिलक रोवे नींद बहुत आवे. बारबार मूत्रकरे. बारबार दस्त जावे ॥ १० ॥ नेत्र बंद राखे गौके समान गंध आवे. इसका उपाय लिखतेहैं. महुवाके फूल, धायके फूल, मेहँदी, तिल, बाकले, पिंडी चूर्माकी, ४ मोदक, जयाके फूल इन सब द्रव्योंको एक पात्रमें रखके पूर्व कहा हुवा मंत्र २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्न सयममें जलके किनारे दक्षिण दिशामें धर आवे बालक चंगा हो.तिल राई इनोंकी बालकको धूपदे.गोमुखी देवीका दूषण दूर हो॥ ११ ॥ १२ इति तृतीयमासरक्षा ॥ ३ ॥ चौथे महीनेमें बालकको पीडा उत्पन्नहो उसको पिंगलादेवी ग्रहण करतीहै इसके लक्षण कहते हैं--स्तनपान नहीं करे. शरीर सपेद होजाय.भुजा फरके,मुख सूखा रहे ॥ १३ ॥ शरीरमें दुर्गंध आवे; इन लक्षणोंसे पिंगला देवीका दोष जानना. चतुर्थमासमें चिकित्सा मंत्र औषधी बलिदान यह वस्तु वैद्य नहीं करे ॥ १४ ॥ इति चतुर्थमास विचारः ॥ ४ ॥ पांचवें महीनेमें बालकको वडवादेवी ग्रहण करतीहै. उसके लक्षण कहतेहैं ॥ प्रथम अरुचिहो खांसीहो.

मुख सूखा रहे. रोवे बहुत ॥ १५ ॥ सब शरीरमें तकलीफ रहे. अस-युक्त रहे स्तनपान नहीं करे. अब इसका उपाय कहतेहैं. भात, पूर्णपोली, शाक, मच्छीका मांस, लड्डु, लपसी, आटाके दीवे ५ ध्वजा ५ कमलके सफेद फूल मिट्टीकी देवीकी मूर्ति बनाके सह-नकमें स्थापन करके यह सब वस्तु उसके अगाडी रखदे पूर्व-कथित मंत्र २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्न समयमें दक्षिण दिशामें बलि धर आवे. बालक चंगाहो बडवादेवी-का दोप दूरहो ॥ १६ ॥ १७ ॥ इति पंचममासबालरक्षा॥५॥

षष्ठेमासितुगृह्णातिपद्मानामग्रहीशिशुम् ॥ तद्वेष्टारो-दनंशूलंस्वरभ्रंशस्तथैवच ॥ १८ ॥ शिखीकुक्कुटमे-षाणांमांसमाषोदनंसुरा ॥ कुलित्थंचेतिसंप्रोक्तबलि नाशुंचतिग्रही ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासेबालरक्षा॥६॥
सप्तमेमासिगृह्णातिबालकंपूतनाग्रही ॥ क्षीरंपिबति विसृष्टाकृशोरोदतिछर्दिवान् ॥ २० ॥ कृशराचौद-नंमांसंमत्स्यंक्षीरंसुरासवः ॥ कुल्माषास्तिलचूर्णं-स्रगन्धपुष्पाणिचैवहि ॥ २१ ॥ पूर्वांदिशंसमाश्रि-त्यमध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ अन्यत्सर्वंप्रकर्तव्यंपूर्वो-क्ततत्क्रमेणवै ॥२२॥ इति सप्तमासे बालरक्षा॥७॥
अष्टमेमासिगृह्णातिबालकंचाऽर्जिकाग्रही ॥गात्रभंगो ज्वरोक्षीरुक्प्रलापश्छर्दिरेवच ॥ २३ ॥ उत्तरांदि-

शमाश्रित्यबलिंतस्यैप्रदापयेत् ॥ प्रथमोक्तप्रकारे-
णशेषमन्यत्समापयेत् ॥ २४ ॥

इत्यष्टममासे बालरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा–छठे महीनेमें पद्मानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम रोवे बहुत शूलहो गला बैठ जाय राल बहुत मुखसे पडे ॥ १८ ॥ अब इसका उपाय लिखते हैं. मयूरका मांस मुर्गाका मांस मेंढेका मांस उडदके बाकले भात दारु कुलथी यह सब वस्तु एक सहनकमें देवीकी मूर्तिके अगाडी रखदे मंत्रजाप स्नानविधि बलिदानविधि यह शेष कर्म प्रथम मासके क्रमसे करे ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासरक्षा ॥ ६ ॥ सातवें महीनेमें पूतनानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं. ढीलापनसे दूध पान करे स्तनपान समयमें मुखसे दुग्ध गिरे शरीर कृश होजाय दिन दिन प्रति सूखे रोवे बहुत छर्दि करे ॥ २० ॥ अब इसका उपाय कहते हैं जलके किनारेकी मिट्टी लाके एक मूर्ति बनाके सहनकमें रखके उसके अगाडी खीचडी, भात, मच्छीका मांस, दूध, मदिरा, आसव, बाकले, तिलकुट, सुगंधके फूल सब वस्तु उसी पात्रमें रखदे ॥ २१ ॥ पूर्व मंत्रको २१ वार जपके ७ वार बालकपर वारके मध्याह्न-समयमें पूर्वदिशाकी तरफ धर आवे और सब विधान प्रथम मासकी रीतिके अनुसार करने चाहियें ॥ २२ ॥ इति सप्तममासबालरक्षा ॥७॥ आठवें महीनेमें अर्जिका नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं सर्व शरीरमें हडफोडहो

ज्वरहो नेत्रमें पीडा हो बरडवा करे छर्दि करे ॥ २३ ॥ इसका उपाय प्रथम मासके क्रमसे सब करना चाहिये, परंतु बलिदान उत्तरदिशामें देना चाहिये और मंत्रजाप स्नानादि कर्म सब प्रथममासके अनुसार करने चाहिये ॥२४॥ इत्यष्टममासबालरक्षा॥

नवमेमासिगृह्णातिबालकंकुंभकर्णिका ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंच्छर्दिर्ज्वरःपाताल्गन्धता ॥२५॥ कुल्माषपललक्षीरमत्स्यमांसकृतेनच॥ऐशान्यांदिशिमध्याह्नेबलिनामुंचतिग्रही ॥ २६ ॥ इति नवममासेबालरक्षा ॥९॥ दशमेमासिगृह्णातिबालकंतापसीग्रही ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेषोऽक्षिमीलनम् ॥ २७ ॥ पीतंरक्तंतथामूपंमत्स्यमांससुरासवम् ॥ कुल्माषंतिलपिष्टंचगंधपुष्पाणिचैवहि ॥ २८ ॥ स्वस्तिकाःपाष्टिकंभक्तंदिश्युदीच्यांसमाहरेत् ॥ मध्याह्नसमयेनूनंततोमुंचतिसाग्रही ॥ २९ ॥ इति दशममासेबालरक्षा ॥ १० ॥ मासिचैकादशेनाम्नागृह्णातिसुग्रही शिशुम्॥ तयागृहीतमात्रस्तुसस्वस्थोनप्रजायते ३० नमंत्रंनौषधंतस्यबलिंचापिनदापयेत् ॥ क्रियतेचेद्बलिस्तत्रप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासे बालरक्षा ॥ ११ ॥ द्वादशेमासिगृह्णातिबालकंबालिकाग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनंछर्दिःश्वासस्तृष्णापुनःपुनः ॥ ३२ ॥ दध्यन्नतिलकुल्माषमोदकान्नैर्बलिंहरेत्॥मध्याह्नसमयेप्राच्यांततोमुंचतिसाग्रही ॥३३॥

क्षीरवृक्षकषायेणस्नापयेत्तत्प्रशांतये ॥ प्रथमोक्तप्र-
कारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ २४ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे मासगृहीत-
बालरक्षा नामाऽष्टमः पटलः॥ ८ ॥

भाषा–नौवें महीनेमें कुंभकर्णिका देवी बालकको ग्रहणकर-
ती है ॥ उसके लक्षण कहते हैं. प्रथम स्तनपानमें अरुचिहो,
ज्वर हो, छर्दिहो और जमीन खोदते दफे जैसी सुगंध आती है
वैसी बालकके अंगमें गंध आवे आंख मीची रक्खे ॥ २५ ॥
अब इसका उपाय कहते हैं बाकले मांस दुग्ध मत्स्य मांस इन द्र-
व्योंसहित प्रथम मासकी बलिदे, परंतु मध्याह्न समयमें ऐशान
दिशामें दे और मंत्रजापादिक सब कर्म प्रथम मासकी रीति
माफिक करे बालक चंगा हो कुंभकर्णिका देवीका दोष दूर हो
॥२६॥इति नवममासबाल रक्षा॥९॥दशवें महीनेमें तापसी नाम
देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं. हाथ पैर
देदे मारे, स्तन पीवे नहीं नेत्र मीचे रक्खे, पेट बंद रहे ॥ २७ ॥
अब इसका उपाय कहते हैं. चणाकी दाल, मसूरकी दाल,मछली
कामांस, मदिरा,,बाकले, तिलकुट, सुगंधके फूल ॥२८॥ आटा-
के दीवे ५ सांठी चावलोंका भात यह सब वस्तु एक सहनकमें
मिट्टीकी देवीके आगे रखके मध्याह्न समयमें उत्तर दिशाकी तरफ
बलिदानदे और मंत्र जाप स्नान धूप इत्यादिक कम प्रथम मासके
अनुसार करे बालक चंगा हो तापसी देवीका दोष दूर हो॥ २९॥
इति दशममासबालरक्षा ॥ १० ॥ ग्यारहवें महीनेमें सुग्रहीनाम

देवी वालकको ग्रहण करती है उसका ग्रहण किया वालक अच्छा नहीं होता है ॥ ३० ॥ नतो उस वालककी औषधी है, न मंत्रहै न वलिदानहै कदाचित् वलिदान देनाही हो तो प्रथममासके क्रमसे करदे ॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासवालरक्षा ॥ ११ ॥ बारहवें महीनेमें वालिका नाम देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं रोवे बहुत, छर्दिकरे, श्वासहो, प्यास वारवार लगे ॥ ३२ ॥ इसका उपाय लिखते हैं. दही, चावल, पके तिल, बाकले, लड्डू यह सब वस्तु मिट्टीकी देवीकी मूर्तिके अगाडी पात्रमें रखके मध्याह्नसमयमें पूर्वदिशामें धर आवे ॥ ३३ ॥ दूधवाले वृक्षोंके बक्कलको उबालके वालकको स्नान करावे और बाकी सब मंत्र-जापादिक कर्म प्रथम मासके माफिक करे वालक चंगाहो वालिका देवीका दोष दूर हो ॥ ३४ ॥

इति श्रीपंडितनन्दकुमारकृतवालतंत्रभाषाटीकायामष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

अथवर्षेगृहीतस्यवालकस्यविमुक्तये ॥ वलिंवक्ष्या-मिसुगमंयेनसंपद्यतेसुखम् ॥ १ ॥ प्रथमेवत्सरे वालंग्रहीगृह्णातिनंदिनी॥ अरोचकाक्षिविक्षेपगात्रा-दाहप्ररोदनम् ॥ २ ॥ पतनंचसदाभूमौचेष्टितंत-त्रलक्षयेत् ॥ गुडान्नंदधिकुल्माषपोलिकामत्स्य-कासवम् ॥ ३ ॥ तिलचूर्णांसिपैचैवतिलतैलेन दीपकम् ॥पूर्वांदिशंसमाश्रित्यत्रिरात्रंवलिमाहरेत् ॥४॥

केशगोखुरगोदन्तैर्बालकंधूपयेत्ततः ॥
स्नापयेत्पंचगव्येनतदासामुंचतिग्रही ॥ ५ ॥
इति प्रथमवर्षे बालरक्षा ॥ १ ॥

भाषा--महीनेकी रक्षाविधि कहनेके अनंतर वर्षमें गृहीत हुये बालकके छुटानेके वास्ते सुगम उपाय कहतेहैं जिस्से बालकको सुखप्राप्ति हो ॥ १ ॥ पहिले वर्षके विषय नंदिनी नामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं अरुचिहो, नेत्र बंदरक्खे, शरीरमें दाह हो, जलाकरे, रोवे बहुत ॥ २ ॥ सदा पृथ्वीमें पडारहे अर्थात् शय्या गोदीमें नहीं ठहरे ऐसे लक्षण देखके नंदिनी नाम देवीका दोष कहना । अब इसका उपाय कहतेहैं ॥ गुडके मालपूडे, दही उडदके बाकले, पूर्णपोली, मदिरा ॥ ३ ॥ तिलकुट, मांस, तिलोंके तेलके दीपक ५, ध्वजा पंचरंगकी ५ यह सब वस्तु एक पात्रमें रखके ॐ नमो भगवते रावणाय बालकं मुंच मुंच स्वाहा, इस मंत्रको २१ बार पढके ७ बार बालकके ऊरप वारके पूर्वदिशामें धर आवे तीन रात्रि पर्य्यंत बलिदान दे ॥ ४ ॥ पीछे मनुष्यके शिरके बाल, गौका खुर, गौका दांत इनोंकी धूप बालकको दे पश्चात् पंचगव्यसे बालकको स्नान करावे फिर ब्राह्मणोंको भोजन करावे ऐसे करनेसे नंदिनी देवी बालकको छोड देतीहै बालक चंगाहोताहै ॥ ५ ॥ इति प्रथमवर्षबालरक्षा ॥ १ ॥

द्वितीयेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिरोदिनी ॥ रक्तमूत्रं
ज्वराध्मानंपद्मकेशरवर्णता ॥ ६ ॥ स्फुरतेदक्षि-

णंहस्तंरोदनंचपुनःपुनः ॥ तिलपूपककुल्माषगुडान्नदधिमोदकैः ॥ ७ ॥ सफलंसप्रति छादंप्राच्यां दिशिवलिंहरेत् ॥ धूपयेत्सर्पनिर्मोकराजीभ्यांमुंचतिग्रही ॥ ८ ॥ इति द्वितीयवर्षे बालकरक्षा ॥ ॥ २ ॥ तृतीयेवत्सरेबालंगृह्णातिधनदाग्रही ॥ अवीक्षणमनाहारंज्वरःशोपांगसादने ॥ ९ ॥ स्फुरणं वामपादस्यछर्दनंतत्रचेष्टितम् ॥ दधिमांससुरामत्स्यसक्तान्नतिलपिष्टकैः ॥ १० ॥ प्रतिमयाफलैर्दीपैःसहोदीच्यांवलिंहरेत् ॥ पिच्छैर्मयूरसंभूतैर्धूपितोमुंचतिग्रही ॥ ११ ॥ इति तृतीयवर्षे बालरक्षा ॥ ३ ॥ चतुर्थेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिचंचला ॥ चेष्टितंतत्रविज्ञेयंज्वरःश्वासांगसादने ॥ १२ ॥ तिल कृष्णान्नवासोभिःसार्द्धंतत्रबलिंहरेत् ॥ मेषशृंगस्य धूपेनततोमुंचतिसाग्रही ॥ १३ ॥

इति चतुर्थवर्षेबालरक्षा ॥ ४ ॥

भाषा–दूसरे वर्षमें रोदिनी नाम देवी बाकलको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं–लाल पेशाब आवे ज्वरहो अफराहो कमलकी केसरके माफिक शरीरका वर्ण होजावे ॥ ६ ॥ दहना हाथ फरके बारबार रोवे अब इसका उपाय कहतेहैं–तिल, पूडे, बाकले, गुडका भात, दही, लड्डू ॥ ७ ॥ फल, कसीरकमका यह सब वस्तु एक सहनकमें रखके ऊपर लाल कपडा ढकके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके

ऊपर वारके पूर्वदिशामें वलि धर आवे और सांपकी कांचली राई इन्होंकी धूप बालकको दे और सब कर्म पहिले वर्षकी माफिक करे बालक चंगाहो रोदिनी देवीका दोष दूर हो ॥ ॥ ८ ॥ इति द्वितीयवर्षबालरक्षा ॥ २ ॥ तीसरे वर्षमें धनदानाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं. समीप नहीं देखे, भोजन नहीं करे, ज्वरहो, कंठशोषहो, शरीरमें तकलीफहो ॥ ९ ॥ बामा पैर फरके छर्दिकरे इन लक्षणोंसे धनदादेवीका दोष जानिये इसका उपाय कहतेहैं–दही, मांस, मदिरा, मच्छी, सातनाज, तिलकुट ॥ १० ॥ मिट्टीकी मूर्ति, फल, दीपक ५, ध्वजा ५, यह सब वस्तु सहनकमें रखके २१ बार मंत्रपढके ७ बार बालकपर वारके उत्तर दिशाकी तरफ बलि धर आवे और मोरके पंखोंकी धूप देवे और कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ ११ ॥ इति तृतीयवर्षे बालरक्षा ॥ ३ ॥ चौथे वर्षमें चंचलादेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं– ज्वरहो, श्वासहो, अंग भडके, अचैनीरहै, आंख भारीरहे, रोवे बहुत ॥ १२ ॥ इसका उपाय कहतेहैं–तिल काले, गुड, पूडे, चावल उडद, पोली, दीप ५, ध्वजा ५, राई, सिरसम, मिट्टीकी पींडी यह सर्व वस्तु एक पात्रमें धरके काले कपडेसे ढकके वलि पूर्व दिशामें धर आवे वलि दिन ३ तक करे मेंढाके सींगकी बालकको धूपदे और अन्य कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १३ ॥

इति चतुर्थवर्षे बालरक्षा ॥ ४ ॥

पंचमेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिनर्तकी॥उद्वेजनंमुहुर्मू-
त्रंगात्रस्फुरणसादनम् ॥ १४ ॥ मुखशोषणवैवर्ण्यं
चेष्टितंतत्रलक्षयेत् ॥ मत्स्यमूलकमांसानिपक्वान्नंकृ
शरापयः ॥ १५ ॥ पायसंचसुरामद्यंतिलंचोक्तंवलिं
तथा ॥ सफलंसप्रतिच्छन्नंसत्तरात्रंबलिंहरेत् ॥१६॥
राजिकाकेशगोदंतलशुनैरपिधूपयेत् ॥ त्रिसंध्यंसंनि
धानेनततोमुंचतिसाग्रही ॥ १७ ॥ इतिपंचमवर्षे
बालकरक्षा ॥ ५ ॥ षष्ठेचवत्सरेबालंगृह्णातियमुना
ग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनोद्गारजृंभाशोपांगदाहकम् ॥
॥ १८ ॥ मत्स्यमांसंसक्तुशरंपोलिकापायसंदधि ॥
सुरामोदकसंमिश्रंप्रक्षिपेच्चत्वरेबलिम् ॥ १९ ॥ गोरो
मखुरशृंगैश्चधूपयेन्मुंचतिग्रही ॥स्नानंपंचदलैःकार्यं
सुखंभवतिनान्यथा ॥ २० ॥

इति षष्ठवर्षे बालरक्षा ॥ ६ ॥

भाषा–पांचवें वर्षमें नर्तकीनामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं कूल्हे बहुत वारवार मूत्र करे गात्र फरके गात्रमें पीडा रहे अर्थात् अचैनी रहे ॥ १४ ॥ मुख सूखारहे शरीरका वर्ण विवर्ण हो जावे यह लक्षण देखके नर्तकी देवीका दोष जानना अब इसका उपाय लिखतेहैं मिट्टीकी नर्तकी देवीकी मूर्त्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी यह वस्तु रक्खे मच्छी, मूली, मांस, पक्वान्न, खिचडी, दूध ॥ १५ ॥ खीर, वारुणी मदिरा, तिल और प्रथम

बलिमें लिखी हुई वस्तु आटाके दीवे ५, ध्वजा पंचरंगी ५ शर्बतकी कुल्हिया, पूडे बालके यह सब वस्तु उसी पात्रमें रक्खे फलभी कुछ रखदेना चाहियें और लाल कपडासे ढकके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ धर आवे यह उतारा दिन ७ ताई करे ॥ १६ ॥ राई, मनुष्यके शिरके बाल, गौके दांत, लहसन इनोंकी धूप बालकको ३ वखत दिया करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १७ ॥ इति पंचमवर्षे बालरक्षा ॥ ५ ॥ छठामें यमुना देवी बालकको ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहते हैं रोवे बहुत, डकार बहुत आवें, जँभाई आवें, शरीर सूकता जाय, पेट बंध रहे, अंगमें दाह रहे ॥ ॥ १८ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं मिट्टीकी या आटाकी यमुना देवीकी मूर्त्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी मच्छी का मांस, खिचडी, पूरणपोली, खीर, दही, मदिरा, लड्डू पांच दीपक ५, ध्वजा यह सब रखदे फिर २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके चुराहामें बलि संध्यासमय धर आवे ऐसे ३ दिनतक करे ॥ १९ ॥ गौके रोम खुर सींग इनोकी बालकको धूप दे और पंचवृक्षोंके पत्तोंकरके बालकको स्नान करावे ब्राह्मणभोजन करावे बालक चंगा हो यमुना देवीका दोष दूर हो ॥ २० ॥ इति षष्ठवर्षे बालरक्षा ॥ ६ ॥

सप्तमेवत्सरेऽनंताग्रहीगृह्णातिबालकम् ॥ तयागृही-तमात्रेणत्वंधीभवतिबालकः ॥ २१॥ सीदंतिसर्वगा-त्राणिमुखंचपरिशुष्यति ॥ मूत्रंचस्रवतेनित्यमुद्वेगंच

पुनःपुनः ॥२२॥पायसंकृशरान्नंचतिलपिष्टंसुरासव-
म्॥पक्वान्नमत्स्यमांसानिदधिमूलंचकंदकम् ॥२३॥
सिद्धार्थैर्लशुनैर्धूपंतिलतैलेनदीपकम्॥ स्नापनंपंचग-
व्येनसप्तरात्रंबलिंहरेत् ॥ २४ ॥ इति सप्तमवर्षेवाल-
रक्षा ॥ ७ ॥ अष्टमेवत्सरेवालंगृह्णातिचकुमारिका ॥
तयागृहीतमात्रस्तुज्वरेणपरिदह्यते ॥ २५ ॥ सीदं
तिसर्वगात्राणिकंपयंतिपुनःपुनः ॥ कृशरान्नौदनंचै-
वगंधमाल्यंतथैवच ॥२६॥ मेषशृंगस्यधूपोऽत्रपूर्व-
स्यांदिशिमाहरेत्॥ अयंसिद्धवलिःप्रोक्तोवालकानां
सुखावहः ॥ २७ ॥

इत्यष्टमवर्षे वालरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा–सातवेंवर्षमें अनंता नाम देवी वालकको ग्रहणकरतीहै उसको ग्रहण करने हीसे तत्काल वालक अंधा होजाताहै ॥ २१ ॥ सर्वशरीरमें पीडा हो और दुवला हो जावे मुख सूखा रहे पेशाव वहुत आवे, चित्तको उद्वेग रहै. आलस्य हो अंग तोडे ॥ २२ ॥ अव उपाय लिखतेहैं चूनकी या मिट्टीकी देवीकी मूर्ति वनाके, सहनकमें रक्खे उसके अगाडी खीर, खिचडी, भात, तिलकुट, मदिरा, पक्वान्न, मत्स्यमांस, दही, मूली, किसी रकमका कंद, जौका आटाके ५ दीपक ५ ध्वजा यह सव वस्तु उसीपात्रमें रखके २१ वार मन्त्र पढके ७ वार वालकपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ जलके किनारे धर आवे ॥ २३ ॥ राई तथा लहसनकी वालकको धूपदे और वलिमें तिलोंके तेलका दीपक जलाना चाहिये और पंच-

गव्यसे बालको स्नान करावे बलिविधान किये पीछे ब्राह्मण-भोजन करावे ऐसे बलिविधान ७ दिनतक करना चाहिये बालक चंगाहो अनंतादेवीका दूषण दूर हो ॥ २४ ॥ इति सप्तमवर्षे बालरक्षा ॥ ७ ॥ आठवें वर्षमें कुमारिका नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उस करके ग्रहणहुए बालकके प्रथम ज्वर बहुत वेगसे होय ॥ २५ ॥ सर्व गात्रमें पीडा हो कंपे, वारवार छर्द करे, पेट बंध रहै, यह लक्षणहो अब इसका उपाय कहतेहैं आटाकी या नदीके किनारे की मट्टीकी मूर्ति देवी की बनाके सहनकमें रखके उसके अगाडी खिचडी, चावल,दही, सुगधके फूल, पूडी, पापडी, पूर्णपोली पक्वान्न, ध्वजा ५ दीपक ५ यह सब वस्तु उसके अगाडी रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें बलि रख आवे यह बलिविधान ३ दिन तक करना चाहिये ॥ २६ ॥ मेढासींगी-की बालकके धूपदेनी चाहिये पीछे स्नान और ब्रह्मभोज्य करावे बालक चंगाहो कुमारिकादेवीका दोष दूर होय ॥२७॥

इत्यष्टमवर्षे बालरक्षा ॥ ८ ॥

गृह्णातिनवमेवर्षेकलहंसाग्रहीशिशुम् ॥ तयागृहीत-मात्रेणस्याद्दाहोज्वरताकृशः ॥२८॥ पोलिकापूप-दध्यन्नैःपंचरात्रिंबलिंहरेत् ॥ कुष्ठोग्राराजिलशुनै-र्लेपयेदपिधूपयेत् ॥ २९ ॥ स्नापयेन्निंबक्काथेन बालंमुंचतिसाग्रही॥ इतिनवमवर्षेबालरक्षा ॥ गृह्णा-तिदशमेवर्षेदेवदूतीग्रहीशिशुम् ॥ तच्चेष्टातत्रज्ञात-

व्यानर्त्तनंचप्रधावनम् ॥ ३० ॥ विड्वद्धंवमनंक्री-
डाहसनंस्वगृहेक्षणम् ॥ यामियामीतिवचनंनेत्ररो-
गोंगसादनम् ॥ ३१ ॥ सदापानासनश्रद्धाविधुरा
लापनंतथा ॥ कोद्रवौदनकुल्मापाःपोलिकादधिसो
दकम् ॥ ३२ ॥ प्रणवंमुंचमुंचेतिवियोजयवियो-
जय ॥ आगच्छद्वितयंबालिकेस्वाहेतिप्रकीर्त्ति
तः ॥३३॥ रक्तान्नरक्तपुष्पैश्वत्रिरात्रंबलिमाहरेत् ॥
तिलैश्वजुहुयात्पश्चादष्टोत्तरशतंसुधीः ॥ ३४ ॥

इति दशमवर्षबालरक्षा ॥ १० ॥

भाषा—नौवें वर्षमें कलहंसा नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकके दाहहो ज्वरहो दुबला होजावे अंगमें पीडाहो दस्त मूत्र वारंवार आवे छर्दिकरे हाथपैर भडके ॥ ॥२८॥अब इसका उपाय कहतेहैं—पूर्णपोली, पूडे, दही,भात, चूरमाकी पींडी, खीर, बडे, सुहाली दीवे ५ ध्वजा ५ यह सब वस्तु एक पात्रमें मट्टीकी देवीके अगाडी रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशामें जलके किनारे धर आवे पांचदिनतक यह बलिदान करना चाहिये और कूट, वच, राई, लहसन, इन करके बालकके शरीरको लेपन करे और इनोंहीकी धूप देनी चाहिये ॥ २९ ॥ निंबके पत्तोंके काथसे बालकको स्नान करावे बालक चंगाहो कलहंसा देवीका दोष शांतहो ॥ इति नवमवर्ष बालरक्षा ॥ ९ ॥ दशवें वर्षमें देवदूती नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै, उसके लक्षण कहतेहैं-

बालक नाचे दौडे ॥ ३० ॥ पेटबंधहो वमनकरे अनेकरकमकी क्रीडाकरे हँसे, अपने घरको देखाकरे, जाऊं जाऊं ऐसा वचन कहै, नेत्रोंमें रोगहो, अंगमें पीडाहो ॥ ३१ ॥ सदा खान पानमें श्रद्धा रक्खे विकलताके वचन कहे ज्वरहो अब इसका उपाय कहतेहैं, काली मट्टीकी मूर्ति देवीकी बनाके सहनकमें रखके कूट, अन्न,भात बाकले, पूर्णपोली दही लड्डू मसूरकी डाल, लालफूल दीपक ५ ध्वजा ५ तिलकुट, यह सब वस्तु उसके अगाडी रक्खे ॥ ३२ ॥ फिर ॐ मुंच मुंच वियोजय वियोजय आगच्छ आगच्छ बालिके स्वाहा ॥इस मंत्रको २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें जलके किनारे धरआवे यह विधान ३ दिन करै. चौथे दिन बालको स्नान करावे. तिलोंका हवन करावे १०८ आहुति देनी चाहिये बालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

इति दशमवर्षे बालकरक्षा ॥

वर्षेएकादशेबालंग्रहीगृह्णातिकालिका ॥ तयागृहीतमात्रेणज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ ३५ ॥ कासश्वासाक्षिरोगश्चकाकारवोंगसादनम् ॥ पोलिकागुडकुल्मापशष्कुलीशाकमोदकैः ॥ ३६ ॥ पक्वमत्स्यामिपक्षीरैःसंयुक्तंबलिमाहरेत् ॥ त्रिरात्रंनिंबसिद्धार्थैधूपयेन्मुंचतिग्रही ॥ ३७ ॥ अनुक्तमपियत्कर्म्मप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ तत्सर्वंविधिविदाकार्यंतेनसंपद्यतेसुखम् ॥३८॥ इत्येकादशवर्षेबालरक्षा ॥ ११ ॥

द्वादशेवत्सरेबालंगृह्णातिवायसीग्रही ॥ तच्चेष्टाव-
क्रसंशोषोज्वरोजृंभांगसादनम् ॥ ३९ ॥ रक्तद्र-
व्यैर्वलितत्रहरेन्मुंचतिसाग्रही ॥ स्नापनंपंचगव्येन
धूपोनिंवेनसर्षपैः ॥ ४० ॥ इति द्वादशवर्षेबाल-
रक्षा ॥१२॥ वर्षेत्रयोदशेबालंग्रहीगृह्णातियक्षिणी ॥
तच्चेष्टयाचहृद्रोगंज्वररोदनहासनम् ॥४१॥शाल्यो-
दनसुरामांसमत्स्यकुल्माषपायसैः ॥ दद्यात्स-
कृशरंप्रोक्तैर्मध्याह्नेवलिमाहरेत् ॥ ४२ ॥

इति त्रयोदशवर्षेबालरक्षा ॥ १३ ॥

भाषा—ग्यारहवें वर्षमें कालिकानामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं, प्रथम बालकके ज्वरहो ॥ ३५ ॥ खांसीहो, श्वासहो, नेत्रदूखे, कांकां शब्दकरे, रोवे बहुत, अंगमें पीडाहो अर्थात् अंगको बहुत तोडै ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, पूर्णपोली, गुड, उडदके बाकले, कचोरी, किसीरकमकी शाक, लड्डू ॥ ३६ ॥ पूडी, लपसी, पकाहुवा मच्छीका मांस, दूध, चावल,दीपक५ध्वजा५यह सब वस्तु एक सहनकमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ वृक्षके तले धरआवे और नींवके पत्ते राई इनकी बालकको धूप देनी चाहिये यह बलिविधान तीन दिन तक करना चाहिये ॥ ३७॥और तीन दिन पीछे स्नानकर्म ब्रह्मभोजन पूर्वोक्त प्रकारसे सब कर्म करावे, कालिका देवीका दोष शांतहो बालक चंगाहो ॥ ३८ ॥ इत्येकादशवर्षे बालरक्षा ॥११॥ बारहवें वर्षमें वायसीनाम देवी

बालकका ग्रहण करतीहै, जिसके लक्षण कहतेहैं बालकका मुख सूखा रहे ज्वर हो जँभाई बहुत आवें. अंगमें पीडाहो ॥ ३९ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, नदीके किनारेकी मट्टी लायके देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी, गुड, पूडी, लपसी, बाकले तिलकूट, लड्डू, राखकी पिंडी, सरसम, राई, दीवे ५ ध्वजा ५ यह सब वस्तु धरके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके दक्षिणदिशामें वृक्षतले संध्या समय धर आवे, तीन दिन पर्य्यंत बलि देवे; चौथे दिन पंचगव्यसे बालकको स्नान करावे, निंबके पत्ते सरसम इनोंकी धूप बालकको देनी चाहिये ब्राह्मणोंको भोजन करावे वायसी देवीका दोष शांतहो बालक चंगाहो ॥ ४० ॥ इति द्वादशवर्षे बालरक्षा ॥ १२ ॥ तेरहवें वर्षमें यक्षिणी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै, अब उसके लक्षण कहतेहैं, प्रथम बालकके हृद्रोगहो, ज्वरहो, रोवे बहुत, किसी वखत हँसने लगे ॥४१॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, आटाकी मूर्ति देवीकी बनाके एक सहनकमें धरके उसके अगाडी भात पकाहुवा, शर्बतकी कुल्हिया, मदिरा मांस, मच्छी, बाकली, खीर खिचडी, धूप, दीपक ५ ध्वजा ५ फूल यह सब वस्तु उसी सहनकमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसयम पश्चिमदिशामें वृक्षके तले धर आवे दिन ३ तक बलिकरे पीछे बालकको स्नान ब्रह्मभोज्य पूर्वोक्तक्रमसे करावे बालक चंगाहो यक्षिणी देवीका दोष दूरहो ४२

इति त्रयोदशवर्षे बालरक्षा ॥ १३ ॥

वर्षेचतुर्दशेबालंस्वच्छंदानामतोग्रही ॥ गृह्णातिचेत्तुतत्रस्याच्छोणितस्रवणंसदा ॥४३॥ शूलंचनाभिदेशेस्यात्तत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ श्रमस्तुव्यर्थतांयातितस्मात्तत्रनकारयेत् ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षेबालरक्षा ॥ १४ ॥ ॥ अथ पंचदशेवर्षेगृह्णीतेबालकंकपी ॥ तयाग्रहीतमात्रस्तुभूम्यांपततिनिःस्वनः ॥ ४५ ॥ ज्वरश्चजायतेतीव्रोनिद्रात्यंतंप्रजायते॥ पायसंकृशरामांसंकुल्मापंचसुरासवम् ॥ ४६ ॥ पूपकाःपोलिकाश्चैवपुष्पाणिपांडुराणिच ॥ स्नापनं पंचगव्येनधूपनंवत्सकत्वचा ॥ ४७ ॥ दिनत्रयंप्रदोषेतुबलिंदद्याद्विचक्षणः॥ सुखंभवतितेनाशुनात्रकार्याविचारणा॥४८॥ इतिपंचदशवर्षेबालरक्षा ॥१५॥

भाषा—चादहवें वर्षमें स्वच्छंदा नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालकके मुखसे नासिकासे खून पडे, ज्वरहो ॥ ४३ ॥ नाभिमे शूल हो,तृषा लगे, वमन करे इस वर्षमें चिकित्सा श्रम और बलि विधानका परिश्रम सर्व निष्फल होजाता है इसवास्ते कुछ करना नहीं चाहिये अग्रे दैवेच्छा बलीयसीति ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षे बालरक्षा ॥ १४ ॥ पंद्रहवें वर्षमें बालकको कपीनाम देवी ग्रहण करती हैं उसके लक्षण कहते हैं बालक पृथ्वीमें सोनेकी बहुत इच्छा करे, कूल्हे बहुत या बिलकूल कूल्हे नहीं ॥ ४५ ॥ ज्वर बडा तेजहो, निद्रा बहुत आवे,वमनहो,अंग कंपे,चित्तभ्रमहो अब इसका उ-

पाय लिखते हैं नदीके पूर्व पश्चिमके तरफकी मट्टी लाके देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी एक सराई खीरकी रक्खे खिचडी, मांस, बाकले, मदिरा, आसव ॥ ४६ ॥ पूडे, पूर्णपोली, सिरसम, सपेद फूल, दीपक ५, ध्वजा ५ यह सब उसी पात्रमें रखके मंत्र २१ वार पढके ७वार बालकके ऊपर वारके प्रदोषके वखत वृक्षतले धर आवे बालकको चौथे दिन पंचगव्यसे स्नान करावे कूडालकी छाल, दालचिनी इनकी बालकके धूप देवे ॥ ४७ ॥ यह बलिविधान दिन ३ तीनतक देना चाहिये जिस्से देवीका दोष शांतहो बालक चंगा हो ॥ ४८ ॥इति पंचदशवर्षे बालरक्षा ॥ १५ ॥

षोडशेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिदुर्जया ॥ तयाछर्दिर्ज्वरःकंपोयस्यामीतिवचोवदेत् ॥ ४९ ॥ कुल्माषकृशरापूपतिलपिष्टान्नदीपकैः ॥ दध्नासहबलिंदद्यात्प्राच्यांदिशिदिनत्रयम् ॥ ५० ॥ धूपयेद्गोनखशृंगलशुनैर्मुंचतिग्रही ॥ स्नापयेत्पंचगव्येनतिलतोयेन बालकम् ॥२१॥ इति षोडशवर्षबालग्रहरक्षा॥१६॥

इतिकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रेवर्षग्रहणगृहीतबालरक्षाकथनं नाम नवमःपटलः ॥ ९ ॥

भाषा—सोलहवें वर्षमें दुर्जया नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालक वमन करे ज्वर हो शरीर कंपे नींद आवे मुखसे जाऊं जाऊं ऐसा वचन कहे ॥ ४९ ॥ इसका उपाय लिखते हैं बाकले खिचडी पूडे तिलकूट कचोरी

दही सीरापुरी दीपक ५ ध्वजा ५ पांचरंगकी यह सब एक सह-नकमें धरके २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्व दिशामें वृक्षके तले संध्यासमय धर आवे ऐसे तीन ३ दिनतक यह बलिविधान करना चाहिये ॥ ५० ॥ चौथे दिन बालकको गौका खुर और सींगकी धूप देना चाहिये फिर पंच गव्यसे स्नानकराके पीछे पानीमें तिल गेरके शुद्ध स्नान करावे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकको नवीन वस्त्र पहरावे देवीका दोप शान्तहो बालक चंगा हो ॥ ५१ ॥ इति षोडश वर्षे बालरक्षा ॥ १६ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारकृतबालतंत्रभाषाटीकायांनवमःपटलः ॥९॥

दिनेमासेचवर्षेचबालशांतिवदाम्यहम् ॥ प्रथमेदिवसेमासेवर्षेयोगिनिमातृका ॥ १ ॥ पूतनानंदिनीनाम्नाबालकंक्रमतेयदा ॥ तद्गृहीतस्यबालस्य ज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ २ ॥ गात्रशोषस्तथास्वेदोनाहारेच्छाभृशंभवेत् ॥ छर्दिर्मूर्च्छाचकंपश्चतथादीनस्वरोभवेत् ॥ ३ ॥ विधानंतच्चवक्ष्यामि येनमुंचतिपूतना ॥ नदीमृत्तिकयाकुर्याच्छोभनांपुत्तिकांततः ॥ ४ ॥ शुक्लौदनंशुक्लगंधंतथागंधानुलेपनम् ॥ शुक्लपुष्पाणिवैपंचध्वजाःपंचप्रदीपकाः ॥ ५ ॥ स्वस्तिकाःपंचपूर्वाह्णेपूर्वस्यांदिशिसंयतः ॥ बलिंदद्यादथोराजसर्पपोशीरमेवच ॥ ॥ ६ ॥ शिवनिर्माल्यमार्जारनृकेशानिम्बपत्रकम् ॥ गव्यंघृतंतथैतेनधूपयेच्चैवबालकम् ॥ ७ ॥ एवं

दिनत्रयंकृत्वाचतुर्थेशांतिवारिणा ॥ स्नापयेद्बाल-कंपश्चाद्ब्राह्मणांश्चापिभिक्षुकान् ॥ ८ ॥ क्षीरेण भोजयेदेवंस्वस्थोभवतिबालकः ॥वक्ष्यमाणेनमंत्रेण अष्टोत्तरशतंजपेत् ॥ ९ ॥ शांतिवारितुतत्प्रोक्तं सर्वागमविशारदैः ॥ पूजायांबलिदानेचस्नापनेमं त्रमुच्यते ॥ १० ॥ मंत्रः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च स्कंदोवैश्रवणस्तथा ॥ रक्षंतुत्वरितंबालंमुंचमुंच कुमारकम् ॥ ११ ॥

इति प्रथमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ १ ॥

भाषा—अब दिवसमें मासमें वर्षमें ग्रहण हुए बालककी शांति कहतेहैं ।। प्रथम दिवसमें प्रथम मासमें प्रथम वर्षमें बाल-कके कष्ट होजावे तो उस बालकको नंदिनी नाम करके देवी ग्रहण करतीहै उसके योगिनी मातृका पूतना यह पर्य्याय शब्दहैं अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम ज्वरहो ॥ १ ॥ २ ॥ गात्र सूखे, पसीना आवे, भोजनकी इच्छा बिलकुल होवे नहीं, छर्दि करे, मूर्च्छाहो, शरीरकंपे, मंदस्वर होजावे ॥ ३ ॥ अब उसका उपाय कहतेहैं जिस्से पूतना उसको छोडदें. नदीके दोनों किनारोंकी मट्टीलाके सुंदर देवीकी मूर्ति बनाके ॥ ४ ॥ एक सहनकमें रखके उसके अगाडी सपेदभात कर्पूर लोहवान सपेद चंदन सपेदफूल पंचरंगकी ५ ध्वजा ५ दीपक ॥ ५ ॥ पाँच ५ चूनकेशथिए पूडा सुहाली पाँच रकमकी मिठाई यह सब वस्तु उसी सहनकमें रखके अगाडी लिखा मंत्र २१ वार पढके

७ वार वालक ऊपर वारके पहरभरदिन चढे पूर्वदिशामें मौन धारण करके वलिदे आवे. पीछे राई, खस॥ ६ ॥ आकके फूल विल्लीके वाल मनुष्यके शिरके वाल नींबके पत्ते, गौका घी, इन द्रव्योंसे वालकको धूनीदेनी चाहिये ॥ ७ ॥ ऐसे तीन दिन पर्य्यंत कर्म करे चौथे दिन मंत्रसे मंत्रितजल करके वालकको स्नान करावे और ब्राह्मणोंको भिक्षुकोंको ॥ ८ ॥ खीरका भोजन करावै ऐसा करनेसे वालक चंगाहो देवीका दोप शांतहो॥ अगाडी कहाहुवा मंत्र एकसौ आठ १०८ वार जपके जलको मंत्रितकरे उसको शांतिवारि पंडित कहतेहैं पूजामें वलिदानमें स्नान करानेमें इसी मंत्रको पढना चाहिये सो कहतेहैं ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ "ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कंदो वैश्रवणस्तथा ॥ रक्षंतु त्वरितं वालं मुंचमंच कुमारकम्" ॥ ११ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॥

इति प्रथमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतवालकरक्षाविधिः ॥ १ ॥

द्वितीयेदिवसेमासेहायनेचसुनंदना ॥ गृह्णातिपूतनावालंयोगिनीस्तनदाऽपिवा ॥ १२ ॥ ततोभवेज्ज्वरःपूर्वंसंकोचंहस्तपादयोः ॥ दंतान्खादति नियतंनिमीलयतिचक्षुषी ॥ १३ ॥ आहारंचन गृह्णातिदिवारात्रंचरोदिति ॥ अक्षिरोगंछर्दनंचभवेद्भ्रांतिःपुनःपुनः ॥ कृशत्वंजायतेऽत्यंतंचिह्नमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ १४ ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्माया थपुत्तिकाम् ॥ अन्नंदशध्वजादीपाःस्वस्तिकाधावलौदनम् ॥ १५ ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनसिद्धापूपा-

श्वमत्स्यकाः ॥ मांसंचेत्येतदखिलंपाश्चिमायांदि-
शिक्षिपेत् ॥ १६ ॥ पश्चिमायांचसंध्यायामेवंद-
द्यादिनत्रयम् ॥ धूपंमंत्रजपंस्नानंपूर्वोक्तेनक्रमेणवै ॥
॥ १७ ॥ प्रणवोहृदयंचामुंडायैविच्चेततःपरम् ॥
ततोह्रांह्रितयंह्रींचहूंहूंदुष्टाग्रहावदेत् ॥ १८ ॥ ततो
गच्छन्त्वतःस्थानाद्रुद्राज्ञयाऽनलांगना ॥ सर्व-
कार्येषुमंत्रोयंसुखदःसमुदाहृतः ॥ १९ ॥

इति द्वितीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ २ ॥

भाषा—दूसरे दिवसमें दूसरे महीनामें दूसरे वर्षमें बालकके कष्टहो उसको सुनंदना नाम करके पूतना ग्रहण करतीहै उसको योगिनीभी कहतेहैं वह स्तनका नाश करनेवाली होतीहै ॥ ॥ १२ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं ॥ प्रथम बालकके ज्वर हो, हाथ पैरको संकोच रक्खे, दांतोंको बहुत चाबाकरे, नेत्रोंको मींचे रहा ॥ १३ ॥ भोजन किसी तरहोंका नहींकरे,दिनरात्रि रोया करे, नेत्रमें रोगहो,वमनकरे और भय वारंवार लगे, शरीर दुबला बहुत होजावे ॥ १४ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं-सेरभर चावल के चूर्णकी मूर्ति बनाके उसको मट्टीकी सहनकमें रखके उसके अगाडी गेहूं दश १० ध्वजा १० दीपक और १० चूनकेशथिए चावल पकेहुये ॥ १५ ॥ सेरभर पूडे मच्छी मांस यह संपूर्ण वस्तु उसी पात्रमें रखके ॥ १६ ॥ संध्यासमयमें २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके उपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ बलि दे आवे ऐसे तीन रोज करना चाहिये धूप मंत्रका जप

स्नान यह सब वस्तु पूर्वक्रमके अनुसार करना चाहिये ॥
॥ १७ ॥ ॐनमश्चामुंडायै विच्चेह्रांह्रांह्रींह्रींह्रूंह्रूंदुष्टाग्रहा गच्छ-
न्त्वतःस्थानाद्रुद्राज्ञयास्वाहा इसीको पढना चाहिये ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ इति द्वितीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ २ ॥

तृतीयेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिपूतना ॥ गात्रभंगःप्र-
लापश्चकंपोज्वरस्तथारुचिः ॥ २० ॥ निमीलनंन
यनयोरोमांचोवमनंतथा ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनपुत्ति
कांरचयेत्ततः ॥ २१ ॥ रक्तौदनंध्वजारक्तास्वस्ति
कंरक्तमेवच ॥ रक्तपुष्पंरक्तगंधंतथारक्तानुलेपनं
॥ २२ ॥ पश्चिमायांचसंध्यायामुदीच्यांनिक्षिपे
द्बलिम् ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणस्नानंमंत्रंसमाचरेत् ॥
॥ २३ ॥ इतितृतीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालक
रक्षाविधिः ॥ ३ ॥ चतुर्थेदिवसेमासेवर्षेगृह्णाति
बालकम् ॥ मुखमंडलिकानाम्नादेवीचाकाशयोगिनी
॥ २४ ॥ गात्रभंगोनतिर्मूर्छादौर्बल्यंचाक्षिमीलन-
म् ॥ वैवर्ण्यंश्यामताश्वासःकासोऽरुचिरनिद्रितास् ॥
॥२५॥ तिलपिष्टमयींकृत्वापुत्तिकांबिल्वकंटकैः ॥
अष्टांगेरेखयेच्छ्वेतपुष्पंशुक्लध्वजाऽर्जुनः ॥ २६ ॥
स्वस्तिकाःप्रस्थभक्तंचप्रस्थचूर्णस्यपूपकाः ॥ त्रिसं
ध्यंपश्चिमायांतुबलिंदद्यात्प्रयत्नतः ॥ अर्द्धप्रस्थमि-
तास्तत्रपोलिकाःसंप्रकीर्त्तिताः ॥ २७ ॥ गोशृंगल-

शुनंसर्पनिर्मोकोनिंबपत्रकम् ॥ मनुष्यकेशमार्जा रोमाण्याज्यंचगोस्तथा ॥ २८ ॥ एतैश्चधूपयेद्बालं संध्यायांचदिनत्रये ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्त क्रमेणवै ॥ २९ ॥

इति चतुर्थदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ४ ॥

भाषा–तीसरा दिवस तीसरा महीना तीसरा वर्ष इनके विषय बालकके कष्ट होनेसे उसको पूतना नाम करके देवी ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम गात्रभंग हो, प्रलाप हो, कंप हो, ज्वरहो, अरुचि रहै॥ २० ॥ नेत्र मीचे रक्खे, रोमावली खडी हो, वमन करे, अब तिसका उपाय लिखते हैं ॥ सेरभर गेंहूंके आटाकी मूर्ति देवीकी बनाके उसको मट्टीकी सहनकमें रखके उसके अगाडी लाल भात लालध्वजा चूनके शथिए रक्तचंदन लाल फूल रोली और मूर्तिको लालचंदनकालेपन करदेनाचाहिये॥ २१ ॥ ॥ २२॥ सायंकालमें संध्याके समय यह संपूर्ण वस्तु सहनकमें रखके २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके उत्तर दिशामें बलि दे आवे. और स्नान मंत्र जप धूपादिक सर्व वस्तु पूर्वोक्त प्रकारसे करे ॥ २३ ॥ इतितृतीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीत-बालकरक्षाविधिः ॥ ३ ॥ चौथादिन चौथे मास चौथावर्षके विषय बालकके कष्ट होनेसे उसको मुखमंडलिका नाम देवी ग्रहण करतीहै ॥ २४ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं–गात्रभंग हो, शिरको नीचा रक्खे, दुर्बलता रहै नेत्र मीचे रक्खे, अंगकी वि-

वर्णता और श्यामता हो, श्वास, कास, अरुचि हो, निद्रा नहीं आवे ॥ २५ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—तिलकी पीठीकी मूर्त्ति देवीकी बनाके मट्टीके पात्रमें रखके बेलके कांटेसे उस मूर्त्तिके आठों अंगोंमें रेखा करदे उसके अगाडी सफेद फूल, सफेद ध्वजा, अर्जुन वृक्षका पुष्प ॥ २६ ॥ गेहूँकी चूनके शथिए और सेर १ भर भात पकाहुवा, सेरभर चूनके गुडके पूडे, आधा-सेर पूर्णपोली, दीपक ५, ध्वजा ५, यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ वृक्षके नीचे धर आवे यह जतन दिनमें प्रातःकाल मध्याह्न व सायंकालमें करना चाहिये ॥२८ ॥ गौका सींग ०हसन सांपकी कांचली निंबके पत्ते मनुष्यके माथेके बाल बिल्लीके रोम गौका घी ॥ २८ ॥ इनोंकी धूप बालकको देवे दिन तीन संध्याके समय और मंत्रजप स्नान यह कर्म पूर्वोक्त क्रमसे करना चाहिये ॥ २९ ॥

इति चतुर्थदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ४ ॥

पंचमेदिवसेमासेवर्षेचैवबिडालिका ॥ हिकाश्वासश्च शूलंचगात्रभंगोऽरुचिस्तथा ॥ ३० ॥ ज्वरस्तत्र विशेषेणभवत्येवनसंशयः ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनवि-निर्मायाथपुत्तिकाम् ॥ ३१ ॥ शुक्लौदनंध्वजाः पंचस्वस्तिकाःपंचचोज्ज्वलाः ॥पंचप्रदीपाःशुक्लानि कुसुमानिचचंदनम् ॥ ३२ ॥ अपराह्णेवृक्षमूलेपश्चि मायांदिशिक्षिपेत् ॥ चतुर्थोक्तप्रकारेणधूपोदेयः

प्रयत्नतः ॥३३॥ मंत्रः ॥ ॐभगवतिचोच्चार्य्यह्रींह्रीं हुंहुंततःपरम् ॥ मुंचरक्षांकुरुकुरुबलिंगृह्णद्वयन्तथा ॥ ३४ ॥ अस्त्रंठद्वितयंचामुंडेचशर्वरिचंडिके ॥ ठःठःस्वाहासमाख्यातोमंत्रोबलिनिवेदने ॥ ३५ ॥

इति पञ्चमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ५ ॥

भाषा—पांचवा दिवस पांचवा मास पांचवें वर्षके विषय बालकके कष्टहो उसको बिडालिका देवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण लिखते हैं हुचकी आवे श्वास हो शूल उदरमें हो गात्रमें भडकहो अरुचि रहै ॥ ३० ॥ और ज्वर बडा तेज रहै अब इसका यत्न लिखतेहैं १ सेर भर चावलका आटा पीसके उसकी देवीकी मूर्ति बनाके मट्टीके पात्रमें रखके उसके अगाडी यह वस्तु रक्खे ॥ ३१ ॥ सपेद भात पकाया हुवा, ध्वजा सपेद ५ गेहूंके आटाके शथिए और ५ दीपक सपेद फूल, सपेद चंदन ॥ ३२ ॥ यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके संध्याके समय २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालक ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ वृक्षके नीचे बलि धर आवे और चतुर्थ दिन मास वर्षके विधानमें जो धूप लिखीहै सो धूप बालकके देनी चाहिये ॥ ३३ ॥ मंत्रः ॥ यह चौंतीसका और पैंतीसके श्लोक से मंत्रका उद्धार होताहै उसका यह स्वरूपहै ॐभगवति ह्रींह्रीं हुंहुं मुंच रक्षां कुरुकुरु बलिं गृह्णगृह्ण अस्त्रं ठःठः चामुंडे शर्वरि चंडिके ठःठः स्वाहा इसी मंत्रको जपना चाहिये ॥ ३४ ॥ ३५॥

इति पंचमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ५ ॥

षष्ठेतुदिवसेमासेवर्षेषाट्करिकाऽग्रहीत् ॥ तच्चेष्टागा-
त्रविक्षेपोहास्यंरोदनमोहनम् ॥ ३६ ॥ कुष्टगुग्गुलु
सिद्धार्थगजदन्तैर्घृतप्लुतैः ॥ धूपयेल्लेपयेच्चापिततो
मुञ्चतिसाग्रही ॥ ३७ ॥ बलिदानादिकंसर्वंप्रथमो
क्तक्रमेणवै ॥ एवंकृतेनविधिनाबालकःसुखतांव्र-
जेत् ॥ ३७ ॥ इति षष्ठदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबाल-
करक्षाविधिः ॥ ६ ॥ सप्तमेदिवसेमासेवर्षेचैवतुका-
लिका ॥ तत्रापिचेष्टाद्रष्टव्याछर्दीरोचककम्पनम् ॥
॥ ३९ ॥कासश्वासौचविज्ञेयौतत्रनास्तिप्रतिक्रिया॥
एवंसतितुकर्तव्याप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ४० ॥ इति
सप्तमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ७॥
अष्टमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिकामिनी ॥ तयागृहीत
मात्रेणज्वरस्तापभयंभवेत् ॥ ४१ ॥ आहारंचन
गृह्णातिमुखंचपरिशुष्यति ॥ कूलद्वयमृदाकृत्वापु-
त्तिकांसुमनोहराम् ॥४२॥ गोधूमान्नंमसूरान्नंशाक-
ञ्चपललंतथा ॥ ध्वजाःपंचसमाख्यातादीपकाःपंच
पोलिकाः ॥४३ ॥ गुग्गुलेनचसंधूप्यरक्तचंदनपुष्प-
कैः ॥ पूजयेद्यत्नतःपूर्वमंत्रेणैवसुमंत्रिणा ॥ ४४ ॥
मंत्रस्नानविशेषस्तुप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ एवंकृतेशि-
शूनांवैसुखश्चैवप्रजायते ॥४५ ॥ इत्यष्टमदिनमास
वर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ८ ॥

भाषा—छठा दिवस छठा महीना छठा वर्ष विषय बालकके कष्ट

होय उसको पट्टारिका देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं ज्वरहो, अंग फूटे, हँसे, किसी वक्त रोने लगजाय और मोह करे ॥ ३६ ॥ अब उपाय लिखते हैं कूट, गूगल, राई, हाथी दांत इनको घीमें मरकोयके बालकको धूणी दे और उसके शरीरको उद्वर्तन करानेसे देवी छोड देती है ॥ ३७ ॥ और बलिदान मंत्रजप स्नानादिक सब कर्म प्रथम दिन मास वर्षकी रीतिसे करने चाहियें ऐसे करनेसे बालकको सुख प्राप्त होता है और देवीका दोष दूर हो जाता है ॥ ३८ ॥ इति षष्ठदिवस मासवर्षबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ६ ॥ सातवाँ दिवस सातवाँ मास सातवाँ वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको कालिका देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम छर्दि हो, अरुचिरहे, शरीर कंपे ॥ ३९ ॥ खाँसी श्वासहो, ऐसे लक्षण होनेसे बालककी चिकित्सा करनी चाहिये और प्रथम दिवस मास वर्षके विधानके क्रमसे बलिविधान, मंत्रजप, स्नान, धूपादिक कर्म करावे ब्रह्मभोज करावे साधुसंत अतिथि इनोंको भोजन करावे दानादिक करावे ईश्वरकी कृपासे बालक चंगा हो जावे ॥ ४० ॥ इति सप्तमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ७ ॥ आठवाँ दिवस आठवाँ महीना आठवाँ वर्षके विषय बालकको कष्ट होनेसे कामिनी देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं उसके ग्रहणमात्रकरके प्रथम बालकको ज्वर हो और शरीर बहुत तप्त रहे ॥ ४१ ॥ खाय कुछ नहीं, मुख सूखारहे, शरीर शीतल होजावे अब इसका उपाय लिखते हैं

जलका पूर्व पश्चिम किनारोंकी मिट्टी लावे उसकी सुन्दर देवीकी मूर्ति बनाके उसको मृत्तिकाके पात्रमें रखके ॥ ४२ ॥ उसके अगाडी गेहूं, मसूर, हराशाक, मांस, ध्वजा पांचरंगकी ५, दीपक ५, पूर्णपोली यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशामें संध्यासमय बलि दे ॥ ४३ ॥ और बालकको गूगलकी धूपदे और लालचन्दन, लाल पुष्प इनोंसे देवीका पूजन करे और मंत्रका जाननेवाला पुरुष पूर्व मंत्र करके पूजन करे ॥ ४४ ॥ और मंत्र, जप, स्नान यह सब कर्म पांचवें दिन मास वर्षके विधानके क्रमसे करादेना चाहिये ऐसे करनेसे बालकोंके सुख हो देवीका दोष दूर हो ॥ ४५ ॥

इत्यष्टमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ८ ॥

नवमेदिवसेमासेवर्षेनाम्नातुबालकम् ॥ गृह्णातिमदनाचैवतच्चेष्टांचवदाम्यहम् ॥ ४६ ॥ ज्वरंछर्दिंघृणाध्मानंकासःश्वासश्चतृट्तथा ॥ गात्रभंगश्चशूलश्चचिह्नान्येतानिबालके ॥ ४७ ॥ प्रस्थमात्रेणपिष्टेनविनिर्मायाथपुत्तिकाम् ॥ ओदनंमत्स्यमांसंचपर्पटीचेक्षुशूलिकाम् ॥ ४८ ॥ निक्षिपेत्पूर्वसंध्यायामुत्तरस्यांबलिंहरेत् ॥ गोशृंगलशुनाभ्यांचधूपयेच्चैवबालकम् ॥ ४९ ॥ मंत्रः ॥ ओंनमोभगवतेवासुदेवायकृष्णायखंडलबलिमादायहनहनहुंफट्स्वाहा ॥ इति नवमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

भाषा—नौमें दिवस नौमें महीने नौमें वर्षके विषय बालकको

न्हहो उसको मदना नाम करके देवी ग्रहण करती है अब इसके लक्षण कहते हैं ॥ ४६ ॥ प्रथम ज्वर हो, वमनकरे, चित्तमें घृणा रहे, अफारा रहे, खांसीहो, श्वासहो, प्यास लगे, शरीरमें हड फोडहो और शूल हो यह चिह्न बालकके होनेसे मदनादेवीका दोप कहना अब इसका उपाय लिखते हैं ॥ ४७ ॥ सेरभर गेहूंका आटा लेके उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाके मिट्टीके सहनकमें धरके उसके अगाडी पकेहुये चावल. मच्छीका मांस, पापडी, ईख, सुहाली, पांच रंगकी ५ ध्वजा, ५ दीपक आटाके, फूल ॥ ४८ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके संध्यासे पहिले २१ वार मंत्र पढके ७ वेर बालकके ऊपर वारके उत्तरदिशाकी तरफ बलि देआवे और गौका सींग, लहसन इनोंकी बालकको धूनी देनी चाहिये बालक चंगाहो देवीका दोप शांत हो स्नान ब्राह्मणभोजन पूर्वक्रमसे करावने चाहिये ॥ ४९ ॥ मंत्र मूलमें जो लिखा है इसीको जपना चाहियें ॥

इति नवमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

दशमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिबालकम् ॥ रेवतीज्वरशूलंचछर्दिःश्वासोङ्गमर्दनम् ॥ ५० ॥ अन्नद्वेषश्च कासश्चबलिर्देयोविचक्षणैः ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनपुत्तिकांकल्पयेद्वराम् ॥ ५१ ॥ अष्टांगंलेखयेद्बिल्वविटपंकंटकैस्ततः ॥ गुडौदनंचसर्पिश्चध्वजानांपंचविंशतिः ॥ ५२ ॥ स्वस्तिकानांप्रदीपानां पंचविंशतिकल्पना ॥ चत्वारिरक्तपुष्पाणिदक्षि-

णल्यांदिशिक्षिपेत् ॥ ५३ ॥ मंत्रः ॐनमोभग
वतेवैश्वदेवायहनहुंफट्स्वाहा ॥ मंत्रोयंजपनीयश्च
धूपंस्नानंतुपूर्ववत् ॥ ५४ ॥ इतिदशमदिवसमास
वर्षग्रहगृहीतवालकरक्षाविधिः ॥ १० ॥ एकादशे
दिनेमासेवर्षेचैवसुदर्शना ॥ गृह्णातिवालकंपश्चा-
ज्ज्वरस्तस्यप्रजायते ॥ ५५ ॥ मुखशोषोऽन्नविद्वेषो
गात्रभंगश्चरोदनम् ॥ पुत्तिकांमापपिष्टेनरचितां
शुक्लमोदनम् ॥ ५६ ॥ पुष्पाण्यपिचशुक्लानिध्व-
जानांपञ्चविंशतिः ॥ स्वस्तिकानांप्रदीपानां पंच-
विंशतिरेवच ॥ ५७ ॥ एतत्सर्वंयमाशायांसंध्यायां
प्रातराहरेत् ॥ ५८ ॥ मंत्रः ॥ ॐनमोभगवतेरा-
वणायचंद्रहासवज्रहस्तायज्वलज्वलदुष्टग्रहादीन्
ॐह्रीं फट्स्वाहा॥एकविंशतिवारंचमंत्रमेनंजपेन्नरः॥
धूपस्नानादिकंसर्वंकुर्य्यात्पूर्वक्रमेणच ॥ ५९ ॥
इत्येकादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतवालकरक्षाविधिः ॥ ११ ॥

भापा—दशमदिवस दशममास दशमवर्षके विपय वालकको कष्ट होनेसे उसको रेवती नाम करके देवी ग्रहण करतीहै, उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम ज्वरहो, शूलहो वमन करे, श्वासहो अंग फूटे ॥ ५० ॥ अन्नपर इच्छा नहींहो, खांसीहो इन लक्षण होनेसे देवीका दोप कहना अव इसका उपाय लिखतेहैं, सेर-भर गेहूंका आटाकी सुंदर देवीकी मूर्ति वनाके मिट्टीके सहनकमें स्थापन करे ॥ ५१ ॥ फिर विल्ववृक्षके काँटोंसे उस मूर्तिके

आठ अंगोंमें रेखा करके काटोंको उनी अंगोंमें लगादे फिर गुडके मीठे पके हुए चावल, घृत २५ ध्वजा ॥ ५२ ॥ सथियेंगे-हूंका आटाके २५ दीपक और लाल फूल ४ यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ बेर बालक ऊपर वारके संध्यासमय दक्षिणदिशाकी तरफ बलि धर आवे ॥ ॥ ५३ ॥ मंत्र ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट्स्वाहा ॥ यही मंत्र जपना चाहिये और धूप, स्नान पूर्वोक्तक्रमसे करावने चाहियें ॥ ५४ ॥ इति दशमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः १० ग्यारहवें दिवस ग्यारहवें मास ग्यारहवें वर्ष विषय बालकको कष्ट होय उसको सुदर्शनानामदेवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं. प्रथम बालकको ज्वरहो ॥ ५५ ॥ मुखशोपहो, अन्नपर रुचि नहींहो, अंग सब फूटे, रोवे बहुत, शरीर दुर्बल होजावे यह लक्षण होनेसे देवीका दोप कहना अब इसका उपाय लिखतेहैं. उडदके चूनकी देवीकी मूर्ति बनाके मृत्तिकाके पात्रमें रखके उसके अगाडी सफेद भात पका हुवा रक्खे ॥ ५६ ॥ सफेद फूल २५ सफेद ध्वजा औ सथिये गेंहूंके चूनके २५ दीपक, पूर्णपोली, सुहाली, पूडे ॥ ५७ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें धरके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके यह बलि संध्यासमयमें और प्रातःकाल दोनोंवक्त दक्षिणदिशामें दे ॥ ५८ ॥ मंत्र मूलमें लिखाहै २१ वार जपना चाहिये और धूप स्नानादिक सब कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहिये ॥ ५९ ॥

इत्येकादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ११ ॥

द्वादशेदिवसेमासेवर्षेवापूतनाशिशुम् ॥ अद्भुताख्याप्रगृह्णातिज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ ६० ॥ रोदनं सर्वदादन्तखादनंनेत्ररुक्तथा ॥ रोमांचंतापइत्येतल्लक्षणंतस्यवैशिशोः ॥ ६१ ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनकृत्वाचैवतुपुत्तिकाम् ॥ त्रयोदशस्वस्तिकाश्च ध्वजादीनांत्रयोदश ॥ ६२ ॥ आपूपंमत्स्यमांसंचतथापर्पटिकामपि ॥ एतत्सर्वंदक्षिणस्यां दिशिसायंविनिक्षिपेत् ॥ ६३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमोनारायणायज्वलद्धस्तायहनद्वयम् ॥ शोषय द्वितयंचैवमर्दयद्वितयंतथा ॥ ६४ ॥ पातयद्वितयंहुंहुंहुंहनहनेतिच ॥ दुष्टानांतुसमुचार्य्यह्रांहूं फट्वह्निवल्लभा ॥ ६५ ॥

इति द्वादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १२ ॥

भाषा—बारहवें दिवस बारहवें मास बारहवें वर्षके विषय बालकको कष्टहो उसको अद्भुतनाम करके देवी ग्रहण करतीहै, अब उसके लक्षण कहतेहैं. प्रथम बालकको ज्वरहो ॥ ६० ॥ और रोवे बहुत, हरवक्त दाँतोंको चावाकरे, नेत्रमें पीडाहो, रोमावलि खडी रहैं, अंग ताप रहै इतने लक्षण बालकके होनेसे देवीका दोष जानना ॥ ६१ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं ॥ चावल सेरभर लेके पीसके उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाके मिट्टीके पात्रमें

रखके उसके अगाडी १३ सथिये गेहूंके आटेके दीपक बनाके रक्खे और १३ ध्वजा रखनी चाहिये ॥ ६२ ॥ और पूंड, मच्छीका मांस, पापडी, सुहाली यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमय दक्षिणदिशामें बलिदे ॥ ६३ ॥ मंत्रः ॐ नमो नारायणायज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय शोषय मर्दय मर्दय पातय पातय हुंहुंहुं हनहन दुष्टानां ह्रां ह्रूं फट्स्वाहा ॥ यह मंत्र चौसठ पैसठके श्लोकमेंसे उद्धार किया जाताहै. इसीका जप करना चाहिये और धूप स्नानादि सर्व कर्म पूर्व क्रमके अनुसार करने चाहियें, ऐसे करनेसे बालक चंगाहो, देवीका दोष शांतहो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इति द्वादश दिवसमासवर्षग्रह-गृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १२ ॥

त्रयोदशेदिनेमासेवर्षेगृह्णातिबालकम् ॥ भद्रकाली ज्वरोनिद्रावामहस्तस्यकंपनम् ॥ ६६ ॥ वमनंतृ-ड्विनिःश्वासःकासःपीडाविचेतनम् ॥ पूर्वांदिशंसमा-श्रित्यबलिंदेव्यैनिवेदयेत् ॥ ६७ ॥ नदीकूलद्वयोत्तिष्ठ-न्मृदादेवीस्वरूपकम् ॥ कृत्वापूजाप्रकर्त्तव्याधूपदी-पादिभिस्ततः ॥ ६८ ॥ वटकालड्डुपूपाश्चसान्न-भक्तंगुडोदधि ॥ चतुर्वर्णपताकाश्चप्रदीपाःपुष्प-चंदनम् ॥ ६९ ॥ मध्याह्नेबलिदानंतुकर्तव्यंसु-विधानतः ॥ मंत्रः ॥ ॐनमोभगवतेचरावणाया-थबालकम् ॥ मुंचमुंचाग्निजायांतोमंत्रोयंसमुदाहृ-

तः ॥ ७० ॥ धूपस्नानादिकंसर्वंपूर्वोक्तक्रमतश्चरेत् ॥ ७१ ॥ इतित्रयोदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १३ ॥ चतुर्दशेदिनेमासेवर्षे गृह्णातिवालकम् ॥ ताराश्रीयोगिनीनाम्नाज्वरः शोषोऽरुचिर्भृशम् ॥ ७२ ॥ चक्षुःपीडाभवेत्तस्य पश्चिमेबलिमाहरेत् ॥ त्रयोदशप्रकारेणबलिदानादिकंचरेत् ॥ ७३ ॥

इतिचतुर्दशदिनमासवर्षग्रहगृहीतवालकरक्षाविधिः ॥ १४ ॥

भाषा—तेरहवें दिवस तेरहवें महीने तेरहवें वर्षके विषय बालकको कष्टहो उसको भद्रकाली देवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम ज्वरहो, निद्रा बहुत आवे, बायां हाथ बारंबार कंपे ॥ ६६ ॥ छर्दि होय, प्यास बहुत लगे, श्वासहो, खांसीहो; शरीरमें पीडा जादा रहे, चेत कमरहे यह लक्षण हो उस बालकको देवीका दोष जानना अब उसका उपाय लिखतेहैं ॥ पूर्व दिशाकी तरफ यह बलि देवीके अर्थ देनी चाहिये ॥ ६७ ॥ अब बलिको कहतेहैं नदीके दोनों किनारोंकी मृत्तिका लाके देवीकी मूर्ति बनाके मिट्टीके पात्रमें रखके धूपदीपादिक करके प्रथम देवीकी पूजाकरे ॥ ६८ ॥ फिर उसके अगाडी बडे, लड्डू, पूडे, गेहूं, पकाहुवा भात, गुड, दही, चाररंगकी ४ ध्वजा, दीपक ४, पुष्प, चंदन ॥ ६९ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमयमें पूर्वदिशामें सुंदर

रीतिसे वलिदान दे ॥ मंत्रः ॥ ॐनमो भगवते रावणाय बालकं मुंचमुंच स्वाहा ॥ यह मंत्र है इसका जप करना चाहिये और धूप स्नानादिक जो कर्म हैं सो संपूर्ण पूर्वोक्तक्रमसे कराने चाहियें ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इति त्रयोदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १३ ॥ चौदहवें दिवस चौदहवें मास चौदहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो उस बालकको श्रीयोगिनी तारा ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम ज्वरहो शरीरशोषहो, अरुचि वहुत रहै ॥ ७२ ॥ नेत्रमें पीडारहे यह लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना अब उसका उपाय लिखतेहैं तेरहवें दिवसमासवर्षका जो प्रकारहै उसी. प्रकारसे बलिदान पश्चिमदिशाकी तरफ देना चाहिये और मंत्र जप स्नानादिक सर्व कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहियें ॥ ७३ ॥ इति चतुर्दशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १४ ॥

पंचदशेदिनेमासेवर्षेहुंकारिकाऽग्रहीत् ॥ श्वासकासौज्वरश्चैवदक्षिणस्यांबलिंहरेत् ॥ ७४ ॥ बलिदानादिकंसर्वंत्रयोदशक्रमेणवै ॥ धूपादिकंकर्मसर्वंचतुर्थोक्तक्रमेणतु ॥ ७५ ॥ इति पंचदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १५ ॥ षोडशेदिवसेमासेवर्षेऽग्रहीत्कुमारिका ॥ श्रमश्वारुचिरुद्वेगोज्वरःशोषादिचेष्टितम् ॥ ७६ ॥ नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यमध्यरात्रेबलिंहरेत् ॥ बालकंस्नाप-

येत्पश्चाच्छांतितोयेनमंत्रिणा ॥ ७७ ॥ त्रयोद-
शप्रकारेणशेषमन्यच्चकारयेत् ॥ धूपादिकंतुयत्स-
र्वंचतुर्थोक्तक्रमेणवै ॥ ७८ ॥ इति षोडशदिवस-
मासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे दिवसमासवर्षग्रह-
गृहीतबालकरक्षा नाम दशमः पटलः ॥ १० ॥

भाषा—पंद्रहवें दिवस पंद्रहवें महीने पंद्रहवें वर्षके विषय बालकको कष्टहोय उसको हुंकारिका देवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण लिखतेहैं श्वासहो, कासहो, ज्वरहो और वमन करे, तृषा लगे, शरीरमें अस्थि भडके, रोवे यह लक्षण होनेसे हुंकारिका देवीका दोष जानना ॥ ७४ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं । बलिदानादिक कर्म सर्व तेरहवें दिनमासवर्षके क्रमसे कराने चाहियें और जो धूप स्नानादिक कर्म हैं वह सब चतुर्थ-दिनमासवर्षके क्रमसे करादेने चाहियें ॥ ७५ ॥ इति पंचदश दिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १५ ॥ सोलहवें दिवस सोलहवेंमास सोलहवें वर्षके विषय बालकको कष्टहो उसको कुमारी देवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम तो श्रमहो, भूख बंद होजावे, मनउद्वेग रहे, ज्वर रहे, शरीर सूकता जाय यह लक्षण होनेसे कुमारी देवीका दोष जानना ॥ ७६ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं नैर्ऋतदिशामें अर्द्धरात्रिके वक्त बलिदान दे बालकको पीछे स्नान करावे शांतिके जलसे मंत्र जानने वाला पुरुष ॥ ७७ ॥ और बलिदानादिक कर्म तेरहवें

दिनमासवर्षके क्रमसे वैद्यने करादेने चाहियें और धूप स्नानादिक जो कर्म हैं सो चतुर्थदिवसमासवर्षके विधानके क्रमसे करावे ॥ ७८ ॥ इति षोडशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १६ ॥

इति श्रीपंडितनन्दकुमारकृतबालतंत्रभाषाटीकायां दशमः पटलः ॥ १० ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामिबालानांहितकाम्यया ॥ बलिसाधारणंचैवग्रहात्रोगांस्तथैवच ॥१॥ अथपूतनाग्रहीलक्षणमाह ॥ अत्यंतमलिनास्तीर्णेशयानंनिर्जने स्थले॥ स्वपंतंपूतनानामग्रहीगृह्णातिबालकम्॥२॥ ततोहिक्कायुतः श्वासीस्तनद्वेषीचकंपवान् ॥ छर्दिवांश्चप्रजायेतनिशिजागर्तिसंरुदन् ॥ ३ ॥ स्वापो दिवारोमहर्षआस्यशोषश्चजायते ॥ गुदेरोगश्चतत्राशुबलिर्देयःप्रशांतये ॥ ४ ॥ कृशरान्नंपूर्णकुम्भःसहेमस्तिलचूर्णकम्॥ध्वजागंधश्चपुष्पाणिधूपकंदीपकंबलिः ॥५॥बालानांक्रीडनस्थानेदेयोमंत्रेणमंत्रिणा॥ मंत्रः ॥ नीलांबरधरेदेविपूतनेविकृतानने ॥ शिशोर्विकारान्मुंचस्वप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ॥ ६ ॥ अथमहापूतनाग्रहीलक्षणमाह ॥ ताडितःसंपतेद्यस्तुतूष्णींवान्यःपतेत्तथा ॥ बालंमहापूतनास्यागृह्णातिचततोज्वरः ॥ ७ ॥ जागर्तिचादिवारात्रौ

तच्चभुंक्तेवयत्यपि ॥ कासःश्वासोऽक्षिरोगश्चपूतिगंधः प्रजायते ॥ ८ ॥ अन्नंमांसंचरक्तंचगंधपुष्पाणिवास्त सी ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ स्नुहीवृक्षस्यमूलेतुवलिंमंत्रेणनिक्षिपेत् ॥ ९ ॥ मंत्रः ॥ करालेचंडिचामुंडेकाषायांवरधारिणि॥ राक्षसिपूतनेदेविग्रगृह्णीष्ववलिंत्विमम् ॥ १० ॥

भाषा–अब इसके उपरांत वालकोंके हितकारी साधारण ग्रहोंकी वलि कहतेहैं और साधारण रोगभी कहतेहैं ॥ १ ॥ अव पूतना ग्रहीके लक्षण कहतेहैं, अत्यंत मैला विस्तरपर सोता हुआ वालकको या निर्जलस्थानमें सोता हुआ वालकको पूतना नाम देवी ग्रहण करतीहै ॥ २ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम वालकको हुचकीहो, श्वासहो, स्तनपान नहींकरे, कंपे वहुत, वमन करे, रात्रिको जागे और रोवे वहुत ॥ ३ ॥ दिनमें सोवे, शरीरपर रोमावली खडीरहे, मुख सूकारहे, गुदामें रोगहो ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना, उसकी शांतिके वास्ते वलि देनी चाहिये ॥ ४ ॥ खीचडी, जलका पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित् सोना गेरना चाहिये और तिलकुट, ध्वजा, कुछ सुगंधद्रव्य, पुष्प, धूप, दीपक यह सब वस्तु एक मिट्टीके पात्रमें रखके २१ वार मंत्रसे मंत्रित करके वालकपर वारके जहां वालक खेलतेहों, उस-जगह वलि धर आवे वालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो ॥ ५ ॥ मूलमें छठा श्लोकहै, वही मंत्र जपना चाहिये ॥ ६ ॥ अव महा पतनाग्रहीके लक्षण कहतेहैं वालक ताड्या हुवा गिर पडे या

चुपदेशी गिर पडे उस वक्तमें बालकको महापूतना ग्रहण करतीहै. उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालक को ज्वर हो ॥ ७ ॥ और दिनरात्रि बालक सोवे नहीं और जो कछु भोजन करे सो वमन करदे, श्वासहो, खांसीहो, नेत्रमें रोगहो, शरीरमें दुर्गंध आवे ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना ॥ ८ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं, अन्न, मांस, रक्त, सुगंध के फूल, सपेद वस्त्र, लाल वस्त्र, धूप, दीपक, जलकरके पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित् सोना डालदेना चाहिये यह सब वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके बालकके ऊपर वारके थोहरवृक्षके नीचे बलि देआवे देवीका दोष दूर हो, बालक चंगा होजाय ॥ ९ ॥ और मूलमें जो दशका श्लोकहै सो मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ १० ॥

अथोर्द्धपूतनालक्षणमाह॥लोभादिनातुयःकुर्य्यात्तिरस्कारंवनेपुरे ॥ देव्यूर्द्धपूतनातस्यवालंसंक्रमते ग्रही॥११॥ततोज्वरीचाक्षिरोगीसनिद्रश्चदिवाभवेत् ॥ विनिद्रोपिनिशायांतुकासयुक्तश्चजायते ॥ १२ ॥ अन्नंमांसंचरुधिरंरक्तवस्त्रंचचंदनम् ॥ सहिरण्यः पूर्णकुम्भःस्नुहीमूलेनिशामुखे ॥ १३ ॥ मंत्रः ॥ अथोर्द्धपूतनेदेविप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ॥ शिशोर्विकारान्मुंचाद्यरक्ताभेरक्तदर्शने ॥ १४ ॥ अथ बालकान्ताग्रहीलक्षणमाह ॥ ऋतौस्वदारगमनं कृत्वास्नानादिवर्जितः ॥ अनृतौशौचहीनस्तुस्वपेद्बालकतल्पके ॥ १५ ॥ तदासंक्रमतेबालंबालकान्ता

महाग्रही ॥ ततःपक्षाभिघातःस्याद्रक्तनेत्रश्चजायते ॥ १६ ॥ पायसंचतथामेपकुक्कुटच्छागलोहितम् ॥ रक्तवस्त्रंरक्तगंधंरक्तपुष्पाणिवैतदा ॥ १७ ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ एतद्धटस्यमूलेच यवक्षेत्रेऽपिवाक्षिपेत् ॥ १८॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंबालकान्तेमहाग्रहि॥ शिशोर्विकारान्मुंचस्वकुमारस्य प्रियप्रभे ॥ १९ ॥

भाषा--अब ऊर्ध्वपूतना देवीके लक्षण कहतेहैं, जो पुरुष लोभमें आयके या मदमें आयके वनमें या ग्राममें देवीका अथवा देवता का तिरस्कार करता है, उस पुरुषका बालकको ऊर्ध्वपूतना नाम करके देवी ग्रहण करतीहै ॥ ११ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम बालकको ज्वर हो,नेत्र दूखें,दिनमें निद्रा आवे और रात्रिको जागे और खांसी बहुत उठे ॥१२॥ अब इसका उपाय कहतेहैं अन्न, मांस, रुधिर. लाल वस्त्र, लाल चंदन, सोना गेराहुवा जलका कलश,ध्वजा,दीपक यह सर्ववस्तु एक मिट्टीके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें थोहरवृक्षके नीचे रखआवे बालक चंगाहो देवीका दोप शांत हो ॥ १३ ॥ और यह चौदाका श्लोकहै यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ १४ ॥ अब बालकांता ग्रहीके लक्षण कहतेहैं ऋतुकालमें अपनी स्त्रीसे विपय करके फिर स्नानादिक न करके या वगैर ऋतुकालके विपय करके अपवित्र हुवा बालककी शय्यापर सोजावै ॥ १५ ॥

उस वक्त बालकोंना नामकरके ग्रही बालकको ग्रहण करतीहै तदनंतर बालको पक्षाघात रोग होताहै और लाल नेत्र होजातेहैं ॥ १६ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं ॥ खीर और मींढाका, मुर्गाका, बकराका खून, लालवस्त्र, लालचंदन, लालफूल ॥ १७ ॥ धूप, दीपक जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना गेरना चाहिये यह सब वस्तु एक मिट्टीके बर्तनमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें बडके वृक्षतले अथवा जौके खेतमें बलि दे बालक चंगा होजावे देवीका दोष शांति होजावे ॥ १८ ॥ और जो यह उन्नीसका श्लोक है यह मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ रेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूषणैर्बहुभिर्युक्तंगंधादिभिरलंकृतम् ॥ बालकंरेवतीनाम्नाग्रहीसंक्रमतेतदा ॥ २० ॥ हरिद्रनेत्रविण्मूत्रंपीतस्फोटश्चजायते॥ अग्निदग्धाकृतिःस्फोटोभवेच्छर्दिःपुनः पुनः ॥२१॥ पायसंपललंलाजा-सक्तवोगंधएवच॥पुष्पाणिधूपदीपौचमिष्टंकांचनगर्भितः ॥ २२ ॥ पूर्णकुंभश्चमध्येवा गोष्टेनद्यांचानिक्षिपेत् ॥ २३ ॥ मंत्रः॥शिशोर्विकाशन्मुंचाद्यरेवतिचैवमातृके ॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसुंदरिप्रियभूषणे ॥ २४ ॥ अथ महारेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ संध्याकालेशयानंतुचोच्छिष्टंमुक्तमूर्द्धजम् ॥ तदासंक्रमतेबालंरेवतीचमहाग्रही ॥ २५ ॥ आस्यशोपोभवेत्तस्यदाहःकंपास्यवक्रता ॥ कृष्ण-

वर्णश्चजायेतबलिर्देयःप्रशांतये ॥ २६ ॥ लाजाश्च पायसंसर्पिःकुक्कुटोमेषएवच ॥ रक्तवस्त्रंरक्तगंधंपूर्ण-कुंभंसकांचनम् ॥ २७ ॥ वटस्यमूलेसंध्यायांप्रदो-षेनिक्षिपेद्बलिम् ॥ २८ ॥ मंत्रः ॥ चित्राम्बरधरेदेवि चित्रमाल्यानुलेपने ॥ शिशोर्विकारान्मुश्चाद्यरेवति त्वंमहाग्रहि ॥ २९ ॥

भाषा—रेवतीग्रहके लक्षण कहते हैं वहुत आभूषण वालकको पहरानेसे या सुगंधादिक द्रव्य वालकके लगानेसे रेवतीनाम ग्रही वालकको ग्रहण करती है ॥ २० ॥ अव उसके लक्षण कहते हैं हलदीकी माफिक आंख, विष्ठा, मूत्र होजावें और पीले रंगके फोडे वदनमें होजावें या अग्निसे जलाकी सदृश शरीरमें फफोले होजावें और वारंवार छर्दि करे ॥ २१ ॥ अव इसक उपाय कहते हैं खीर,मांस धानकी खील,सत्तू,सुगंधद्रव्य, सुगंधके फूल,धूप,दीपक,मिष्टान्न और जलका कलश उसम सोना यत्कि-चित् डाल देना चाहिये ॥ २२ और मदिरा यह सर्व वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ मंत्र पढके ७ वार वालकके ऊपर वारके जहां गौ वंधती हैं वहां या नदीके किनारे वलिदे वाल क चंगा होजावे ॥ २३ ॥ और यह चौवीसका श्लोकहै यह मंत्र हे इसीको पढना चाहिये ॥ २४ ॥ अव महारेवती ग्रहके लक्षण कहते हैं सन्ध्यासमयके वक्त उच्छिष्टमुख वालकको शयन करानेसे या खुले वाल सन्ध्याके वक्त शयन करानेसे महारेवती नाम करके देवी वालकको ग्रहण करती है ॥ २५ ॥

अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम मुखशोष रहे और दाह रहे शरीर कंपे मुखको बाका रहे और शरीरका वर्ण काला होजावे ऐसे लक्षण बालकके होनेसे देवीकी शांतिके वास्ते बलि देना चाहिये ॥ २६ ॥ बलिविधान लिखते हैं धानकी खील, खीर, घृत,मुर्गा,भेड, लालवस्त्र, लालचंदन, जलका कलश सुवर्ण सहित ॥ २७ ॥ यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें स्थित करके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें वटके वृक्षतले बलिको दे ॥ २८ ॥ और यह उनतीसका श्लोक है यह मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ बालक चंगा हो देवीका दोष शांति होजावे ॥ २९ ॥

अथ पुष्परेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूमौशयानंसंध्यायांक्रीडंतंपुष्परेवती ॥ ग्रहीसंक्रमतेबालंतेनांगेशीतताभवेत् ॥ ३० ॥ आस्यशोषश्चदाहश्चकंपःस्यादंगुलीषुच ॥ नखेषुकृष्णवर्णश्चदातव्यःशान्तयेबलिः ॥३१॥ मधुयुक्तंपायसंचगंधपुष्पाणिवाससी ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ ३२ ॥ सुपुष्पायतनेक्षिपेद्बलिंमंत्रेणनिःक्षिपेत् ॥३३॥ मंत्रः ॥ पुष्पाक्षेरेवतीदेविप्रगृण्हीष्वबलिंत्विमम्॥बालकस्य सुखंसिद्धिंप्रयच्छत्वंवरानने ॥ ३४ ॥ अथ शुष्करेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूमौनिपतितंबालंरुदंतंछर्दितंतथा ॥ अप्रक्षालितगात्रंचगृह्णीयाच्छुष्करेवती ॥ ३५ ॥ ततोज्वरीमुखेशोषीहृच्छोष्यपिचशूलय-

पि ॥ शिरोरोगार्तिभूतश्चअजीर्णेनयुतोभवेत् ॥ ३६ ॥ मुद्गान्नंश्वेतपुष्पाणिश्वेतवस्त्रंचचंदनम् ॥ धूपदीपौघ- टंचूतवृक्षमूलेवलिंहरेत् ॥ ३७ ॥ मंत्रः ॥ शुष्का- दिरेवतीदेविप्रेतरूपेयशस्विनि ॥ करालवदनेघोरे प्रगृह्णीष्ववलिंत्विमम् ॥ ३८ ॥

भाषा—अव पुष्परेवती देवीके लक्षण कहते हैं संध्याकेसमय पृथ्वीमें सोता हुवा वालकको या खेलताहुवा वालकको पुष्परेवती ग्रहण करतीहै अव उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम वालकका अंग ठंडा रहे ॥ ३० ॥ मुखशोषहो, दाहहो, हाथकी अंगुलियोंमें कंप हो और नख काले होजावे अव पुष्परेवती देवीकी शांतिके वास्ते वलि देनी चाहिये ॥ ३१ ॥ सहत, खीर, सुगंधके फूल, सपेद वस्त्र, लालवस्त्र, धूप, दीपक, जलका कलश, उसमें यत्किंचित् सोना डालदेना चाहिये ॥ ३२ ॥ यह सव वस्तु मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मंत्रसे मंत्रित करके ७ वार वालकके ऊपर वारके जहां फुलवाडी हो वहां वलिदे आवे वालक चंगाहो देवीका दोप शांत हो ॥ ३३ ॥ और यह चौतीस- का श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ३४ ॥ अव शुष्करेवती देवीके लक्षण कहतेहैं पृथ्वीमें वालक गिरजावे, रोवताहो या छर्दि करताहो उसको जलसे शुद्ध न करे उस वाल- कको शुष्करेवती देवी ग्रहण करती है ॥ ३५ ॥ अव उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम वालकको ज्वर हो, मुखशोपहो, हृच्छोप हो, उदरमें शूलहो, शिरमें शूलहो और अजीर्ण रहे ॥ ३६ ॥

अब उपाय लिखते हैं मूंग,चावल, सपेद फूल,सपेद वस्त्र, सपेद चंदन,धूप,दीपक, जलका कलश यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें रखके २१वार मंत्र पढके७वार बालकके ऊपर वारके आम्रवृक्षके नीचे बलिदे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ ३७ ॥ और अठतीसका श्लोक है यही मंत्र है इसीको जपना चाहिये॥ ३८॥

अथशकुनीग्रहीलक्षणमाह॥उच्छिष्टभोजनंदेवालयमूत्रादिकारिणम् ॥ शकुनीग्रहीगृह्णातिततोजागर्ति वैनिशि ॥ ३९ ॥ मुखेकंठेगुदेचैवव्रणोऽतीसारवान्भवेत् ॥ ज्वरीतृष्णाछर्दिवातरोगीभवतिबालकः ॥ ४० ॥ आममांसंपक्वमांसंहरिद्रान्नंपयोघृतम् ॥ तिलपिष्टंफलंचैववस्त्रगंधादिकंतथा ॥ हिरण्यसहितःकुम्भःश्मशानेनिक्षिपेद्बलिम् ॥ ४१ ॥ मंत्रः॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंशकुन्यक्षेमहाग्रहि ॥ शिशोर्विकारान्मुंचाद्यसुभगेकंपरूपिणि ॥४२॥ अथशिशुमुंडिकाग्रहीलक्षणमाह ॥ नित्यकर्म्मविहीनानांपोषिकाणांचपक्षिणाम् ॥ जन्मान्तरेसंक्रमतेबालकंशिशुमुंडिका ॥४३॥ ततोरोदितिपाणीतुपादौचोत्क्षिप्यकंपते ॥ आमज्वरीविनिद्रश्चभवेत्कार्योबलिस्ततः ॥ ४४ ॥ हरिद्रान्नंतिलान्नंचापिष्टंचापूपपूरिका ॥ सर्पिर्मधुदधिक्षीरंगंधपुष्पाणिवाससी ॥४५॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा॥नदीतटेवटेऽरण्येनिक्षिपेन्मंत्रतोबलिम् ॥ ४६ ॥ मंत्रः ॥ स्व-

लंकृतस्वरूपाचभवासिशिशुमुंडिके ॥ शिशोर्वि करान्मुंचस्वचंडिकेचंडविक्रमे ॥ ४७॥

भाषा--अब शकुनी देवीके लक्षण कहतेहैं. देवताके स्थानमें उच्छिष्ट भोजन करानेसे या मलमूत्रादिकके करनेसे बालकको शकुनी देवी ग्रहण करतीहै ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं रात्रिमें बालक सोवे नहीं ॥ ३९ ॥ और बालकके मुखमें, कंठमें गुदामें व्रण हो और दस्त लगे ज्वर होवे, प्यास जादा लगे, वमन करे, वातव्याधि होवे ॥ ४० ॥ यह लक्षण होनेसे शकुनी देवीका दोष जानना अब इसका बलिविधान कहतेहैं कच्चा मांस, पकामांस, हलदीसहित अन्न, दूध, घृत, तिलकुट, फल, सपेदकपडा, सपेदफूल, ध्वजा, दीपक, साथिये सुवर्णयुक्त जलका कलश यह संपूर्ण वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके श्मशानमें बलि संध्याकालमें धर आवे,बालक चंगाहो, शकुनी देवीका दोष शांतहो ॥ ॥ ४१ ॥ मूलमें बयालीसका श्लोकहै यही मंत्रहै इसीको पढना चाहिये ॥ ४२ ॥ अब शिशुमुंडिका देवीके लक्षण कहतेहैं, जो नर या नारी, नित्य कर्म करते नहीं है और पक्षियोंका पालन करतेहैं, उनोंका बालकको जन्मांतरमें शिशुमुंडिका देवी ग्रहण करतीहै ॥ ४३ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं बालक रोवे बहुत, हाथोंको पैरोंको उठा उठा पटके और कंपे, आम ज्वरहो, निद्रा नहीं आवे, वमनकरे, आलस्यहो यह लक्षण होनेसे शिशुमुंडिका देवीका दोष जानना । अब इसका

बलिविधान कहतेहैं ॥ ४४ ॥ हरिद्रायुक्त अन्न अर्थात् केसरीभात, तिलकुट, कचोरी, पूडे, पूरी, घृत, सहत, दही, दूध, सुगंधीके फूल, वस्त्र, लालवस्त्र ॥ ४५ ॥ धूप, दीपक, मिठाई, सुवर्णयुक्त जलका कलश यह सब वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें धरके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्या समयमें नदी किनारे या वटवृक्षतले या वनमें बलिको देवे बालक चंगाहो, शिशुमुंडिका देवीका दोष शांतहो ॥४६॥ मूलमें सैंतालीसका श्लोकहै यही मंत्रहे इसीको पढना चाहिये ॥४७॥

अथसमान्यतोग्रहाविष्टबालस्यचेष्टोद्वर्तनस्नाधूपमं-
त्राःकथ्यंते ॥ नखदंतविकारीस्यान्निद्राही-
नोथवाभवेत् ॥ भयोद्वेगीचदुर्गंधीवहुचेष्टोबलान्वि-
तः॥ बालोबालग्रहाविष्टस्तस्यस्याच्चप्रतिक्रिया ॥
॥ ४८ ॥ दूर्वासतिक्ताविषमच्छदत्वक्प्रोद्वर्तनाद्ध-
न्तिशिशुग्रहार्तिम् ॥ सप्तच्छदाऽश्वत्थमधूकशे-
लुपत्रैःकथाम्भःस्नपनाच्चशीतात् ॥ ४९ ॥ वंश-
त्वङ्नतसंयुतंसलशुनंसारिष्टपत्रंघृतंनिर्माल्यंनरके
शसर्पिस्गुरंगोक्षीरराजीचतुः ॥ सिद्धार्थंजतुनिंब-
पत्रसहितंवंशत्वगाज्यान्वितं धूपानांत्रयमेतदाशु
सकलान्बालग्रहान्नाशयेत् ॥ ५० ॥ प्रणवः
शंखशब्देनरमापतिर्वदेत्ततः ॥ खगेश्वरततोलूना-
कर्षणंकुरुसंवदेत् ॥ वह्निजायावधिर्मंत्रोविलेपनवि-
धौस्मृतः ॥५१॥

भाषा—अब सामान्य रीतिसे ग्रह करके आविष्ट बालककी चेष्टा और उबटना स्नान धूप मंत्र इनोंको कहतेहैं, जिस बालकके नखोंमें विकारहो और दांतोंमें विकारहो, निद्रा आवे नहीं, भय लगे, मनको उद्वेग रहे, शरीरमें दुर्गंधि आवे, अनेक प्रकारकी चेष्टा करे, बलअधिक होजावै, वहबालक ग्रहाविष्टजानना, अब उसकी प्रतिक्रियालिखतेहैं ॥ ४८ ॥ दूर्वा,कुटकी,निंबकेपत्ते, तज, यह द्रव्य कूट कपडछान करके बालकके उबटनाकरनेसे और पीछे सातोंनके पत्ते, पीपलके पत्ते, मुलहटी,ल्हेसवाकेपत्ते इन औषधियोंका क्काथ करके बालकको स्नान करानेसेबालककी ग्रहपीडा नष्ट हो बालक चंगा हो ॥४९॥अब बालग्रही शांतिके वास्ते धूप लिखतेहैं बांसका बक्कल, तगर, लहसन, नींबके पत्ते, गौका घी, एक धूप यह है। दूसरी—शिवके चढे फूल, मनुष्यके शिरके बाल,घी गौका,अगर,गऊका दूध,राई,लाख यह दूसरी धूप है।तीसरी-राई, लाख, नींमके पत्ते, बांसका बक्कल, गौका घी यह तीसरी धूपहै यह तीनों धूप बालककेदेनेसे सबबालग्रह नष्ट होजाते हैं ॥ ५० ॥ और उबटना विलेपनक यह मंत्रहै. इस मंत्रसे बालककेउबटना विलेपन करना चाहिये ॥ मंत्रः ॥ ॐ शंखशब्देन रमापतिः खगेश्वर लूनाकर्षणं कुरु स्वाहा ॥ ५१ ॥

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामित्वभिषेककरंवरम् ॥ प्रणवंसर्वसिद्धांतेमातारितिपदंवदेत् ॥ ५२ ॥ इमंग्रहंसंहरतुहुंरोदयचरोदय ॥ स्फोटयद्वितयंगृह्णद्वयमामर्दयद्वयम् ॥ ५३ ॥ शीघ्रंहनद्वयंप्रोक्तमेवंसिद्धो

वदेत्ततः ॥ रुद्राज्ञापयतिस्वाहास्नानेचैषविधिः स्मृतः ॥५४॥ बालकस्यशिरःस्पृष्ट्वाऽजसासर्वग्रहान्हरेत् ॥ ५५ ॥ खुंखुर्दनंसमुच्चार्यखंहुंफट्वह्निवल्लभा ॥ नवार्णोयंसमाख्यातोधूपनेसर्वकर्मसु ॥ ५६ ॥ रक्षरक्षमहादेवनीलग्रीवजटाधर ॥ ग्रहैस्तुसहितोरक्षमुंचमुंचकुमारकम् ॥ ५७ ॥ भूर्जपत्रइमंलिख्यगुटिकांकृत्यबंधयेत् ॥ भुजेबालस्य रक्षार्थंसर्वग्रहहरंपरम् ॥ ५८ ॥ प्रणवंमुकमुकेति एकएकहुवद्वयम् ॥ जयद्वयंचआगच्छबालकंठ द्वयंवदेत् ॥ ५९ ॥ वह्निजायावधिर्मंत्रःसर्वग्रहविमोचनः ॥ जपेहोमेतर्पणेचबालकस्यसुखावहः ॥ ॥ ६० ॥ तारंचशक्तिलयुगान्वितवह्निजायाकोणेषुषट्सुपरिलिख्यषडक्षरांश्च ॥ वृत्तत्रयेणपरिवीतमिदंहियंत्रंबद्धंतदाशुशिशुरोदनमुत्क्षिणोति ॥६१॥ षट्कोणमध्येचविलिख्यमंत्रंनामान्वितंपूर्णशशांकयुक्तम् ॥ षट्कोणमध्येतुषडक्षराणिचंद्रान्वितान्येवमिदंलिखेद्धै ॥ ६२ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे साधारणबालकग्रहरक्षाकथनंनामैकादशः पटलः ॥ ११ ॥

भाषा—बालकके अभिषेक करानेमें श्रेष्ठ मंत्रको कहतेहैं ॥ ॐ सर्वसिद्धान्ते मातारिमं ग्रहं संहर हुं रोदय रोदय स्फोटय स्फोटय गृह्ण गृह्ण आमर्दय आमर्दय शीघ्रं हन हन एवं सिद्धो रुद्राज्ञाप-

यति स्वाहा ॥ इस मंत्रसे ग्रहपीडित वालकको स्नान करावे और वालकका शिरस्पर्श करके मंत्र पढ़नेसे यह मंत्र वालक ग्रहोंको शीघ्र दूर करता है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ खुं खुर्दनं खं हुं फट्स्वाहा यह नौ अक्षरका मंत्र है वालककी धूप इस मंत्रसे देनी चाहिये ॥ ५६ ॥ सतावनका जो श्लोक है यह मंत्र है इसको भोजपत्रमें लिखके रक्षाके वास्ते वालकके गलेमें वांधे तो वालकके सर्व ग्रह नष्ट हों ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ॐ मुक मुक एक एक हुव हुव जय जय आगच्छ आगच्छ वालकं ठः ठः स्वाहा इस मंत्रको जपनेसे या इस्से होम करनेसे या तर्पण-करनेसे वालकके सर्व ग्रह दूर होजातेहैं और सुख होजाता है ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं लुलु स्वाहा यह छः अक्षरका मंत्र है इसके ६ अक्षर षट्कोण यंत्रके छः कोणोंमें लिखे. और षट्कोण यं-त्रके ऊपर तीन आवर्त करने चा-हिये उसकेमध्यमें पूर्ण चन्द्राकार वृत्त करना चाहिये उसमें मंत्र लिखना चाहिये और वालकका

नाम लिखना चाहिये ऐसा यंत्र लिखके वालकके गलेमें वांध नेसे यह यंत्र वालकके रोदनको दूर करता है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

इति श्रीपं०नन्दकुमारवैद्यकृतवालतंत्रभाषाटीकायामेकादशः पटलः ११

कंदंविदार्य्याःपयसाप्रपीतंस्तन्यप्रवृद्धिंविदधातिस-द्यः ॥ गोधूमधूपःसहगोघृतेनतद्वत्प्रदिष्टःसितयास-

श्वेतः ॥ १ ॥मागधिकायाःकर्षसप्ताहंयापयःपिष्टम्॥
ससितंप्रभातेपिबतितस्याःस्रवतःपयोधरौसततम् ॥
॥ २ ॥अजाजिकर्पपयसाप्रपिष्टंयासेवतेसप्तदिनानि
नारी ॥तस्याःकुचौसंततदुग्धपूर्णौकुमारपुष्टिंकुरुतः
सुखेन॥३॥पिप्पल्याश्वरजोभिर्गृहधूमरजोयुतैःकृतो
यूषः ॥ श्वेततिलतैलसहितोभुक्तःस्त्रीणांपयोजनकः।
॥ ४ ॥ कुक्कुरमर्दकमूलंविधिनियतंवदनमध्यगतंना
र्य्याः ॥ सततंस्थितंदशाहात्प्रभूतदुग्धप्रदंभवति ॥
॥ ५ ॥ क्षीराह्वाभ्यांभवंक्षीरंसुश्वेतसितयान्वितम् ॥
क्षीरंसंजनयेन्नार्य्याःप्रयत्नेनानिषेवितम् ॥६ ॥ प्रस्थ
तंडुलरजःसपयस्कंयापिबत्यनुदिनंसघृतेन ॥ दुग्ध
भक्तमशनंविदधानासाक्षरत्यविरतंबहुदुग्धम् ॥७॥
वनकार्पासकेक्षूणांमूलंसौवीरकेनवा ॥ विदारीकंद-
स्वरसंपिबेद्वास्तन्यवृद्धये ॥ ८ ॥ शालिषष्टिक-
दुग्धेक्षुकुशकासबलान्विता ॥ गुंद्रेक्षुवालिकामूली
दशैतेस्तन्यवर्धनाः ॥ ९ ॥ इतिस्तन्यवर्द्धनम् ॥

भाषा–अब स्तन्यवर्धन प्रयोग लिखते हैं ॥ विदारीकंदका चूर्ण ४ मासे गौके दूधके संग पीनेसे तात्काल स्तन्यवृद्धिको करता है और गेहूंका पूडा, घी, मिसरीसे खानेसे यहभी स्तन्य-वृद्धि करता है ॥ १ ॥ अथवा एक तोला पीपल छोटी गौके दूधसे पीसके गौके दूधमेंही छानके मिसरी डालके दिन ७ जो स्त्री पीवे उसके स्तन निरंतर स्रवणें लग जावें ॥ २ ॥ और जो

स्त्री १ तोला सपेद जीराको दूधसे पीसके ७ दिन दूधसे सेवन करे तो उसकी कुचा दुग्धसे पूर्ण हो जावें बालककी तृप्ति करने लायक होजावें ॥ ३ ॥ पीपल और गृहधूम इन दोनोंका यूष बनाके उसमें सपेद तिलीका तेल डालके जो अदुग्धा स्त्री खावे तो यह योगभी स्तनोंमें दुग्ध पैदा करता है ॥ ४ ॥ करोंदेकी जडको स्त्री दश दिन निरन्तर मुखमें रक्खे तो बहुत दूध उतरने लग जावे ॥ ५ ॥ जो स्त्री निरंतर सपेद बूरा डालके खीर खाया करे तो उसके स्तनोंमें बहुत दूध होवे ॥ ६ ॥ एक सेर चावलों के चूनको घी दूधके संग जो स्त्री पीवे, दूधभात खाया करे तो उसके बहुत दूध उरतने लगजावे ॥ ७ ॥ बनकी कपासकी जड और ऊँखकी जड इनको कांजीके पानीसे पीवे स्त्री अथवा विदारीकंदके स्वरको पीवे तो उसके दूध उतरने बहुत लग जावे और किसी जगह " विदारीकंदं सुरया " ऐसा पाठ है उसका यह अर्थ करना दूध बढानेके वास्ते विदारी कंदको मदिराके संग पीवे ॥ ८ ॥ चावल पुराने १ या सांठी चावल २ दूध ३ ऊँख ४ कुशाकी जड ५ कांसकी जड ६ खरैंटी ७ गूंदनी ८ तालमखाना ९ सपेद मुसली १० यह दश द्रव्य दूधके बढानेवाले हैं ॥ ९ ॥

यथोक्तांकारयेद्धात्रींनवयौवनसंस्थिताम् ॥ शुचिनीरोगामकृशांजीववत्सामलंकृताम् ॥ १० ॥ मध्यप्रमाणांश्यामांगींविशेषाच्छीलशोभिताम् ॥ कुलजांसुकुचादुग्धांशुद्धचित्तामलोलुपाम् ॥ ११ ॥ सुंदरांगीं

हसद्वक्त्रांवत्सलांगर्ववर्जिताम् ॥ स्तन्यमस्याःपरिद स्तंबालानांपुष्टिकारकम् ॥ १२ ॥ शुद्धेस्तन्येनरो गःस्यादन्यथारोगसंभवः ॥ शीतलंविमलंक्षिप्तमेकी भावंजलेभवेत्॥ नचभिद्यतितच्छुद्धंस्तन्यंफेनाविव र्जितम् ॥ १३ ॥ एतादृशेनबालस्यकश्चिद्रोगोनजा यते॥यदावामातुरेवास्तिस्तन्यंशुद्धंप्रदापयेत॥ १४ ॥ मिथ्याहारविहाराभ्यांदुष्टावातादयःस्त्रिया ॥ दूषयं तिपयस्तेनबालरोगस्यसम्भवः ॥१५ ॥ तस्मात्प्र- यत्नतोधात्र्याःपथ्यमेकान्ततोहितम् ॥ तस्याश्चम नसःकष्टंकदाचिन्नापिकारयेत् ॥ १६ ॥

इतिधात्रीलक्षणम् ॥

भाषा—बालकके वास्ते धाय जैसी शास्त्रमें लिखीहै वैसी करनी चाहिये कैसी होनी चाहिये उसको लिखतेहैं प्रथम जवान उमरकी हो दूसरे पवित्र रहती हो और उसके शरीरमें किसी तरहका रोग नहींहो कृश नहीं हो बालक सब जीवने हों और आभूषण पहरे- हुए हों ॥ १० ॥ न बहुत लंबा शरीरकी हों, नछोटे शरीरकी हो और सुंदर सर्वगात्र जिसके हों और विशेषतासे शीलवाली हो अच्छे कुलकी हो और जिसके सुंदर कुचाहों अच्छा निर्मल दूध स्तनोंमें हो और खाने पीनेमें बहुत लोलुपा नहींहो ॥ ११ ॥ जिसका मनोहर अंगहो और हास्ययुक्त मुखहो स्नेहवाली हो और जिसको अभिमान नहो ऐसी धाय करनी चाहिये ऐसी धाय का दुग्ध बालकके पुष्टि करता है ॥ १२ ॥ स्त्रीका दुग्ध शुद्ध

होनेसे बालकको रोग नहीं हो और अशुद्ध होनेसे रोगका उदय करताहै इस वास्ते शुद्ध दुग्धके लक्षण कहतेहैं दुग्ध शीतल हो, और जलमें डाला मिलजावे भेदको नहीं प्राप्त हो और जिसमें झाग नहींहो ऐसा दुग्ध शुद्ध होताहै ॥ १३ ॥ ऐसा दुग्ध पीनेसे बालकके कोई रोग नहीं होताहै और जो माताकाही दुग्ध शुद्ध हो, तब वही दुग्ध देना चाहिये ॥ १४ ॥ स्त्रीके मिथ्याहारसे और मिथ्याविहारसे वातादिक दोपकुपित हुए दुग्धको दूपित करदेतेहैं उसी दूपित दुग्धसे बालकको रोगका संभव होजाताहै ॥ १५ ॥ इसी कारणसे धायको या माताको बडे जतनसे पथ्य पदार्थोंका सेवन करावे और उस धायके चित्तको किसी वक्त न बिगडनेदे खूब प्रसन्न रक्खे ॥ १६ ॥ इति धात्रीलक्षणम् ॥

अमृतासप्तपर्णत्वक्क्वाथःस्तन्यस्यशुद्धये ॥ पाययेदथवापाठायुक्तंनिष्क्वाथ्यरोहितम् ॥१७॥ भूनिंबपाठामधुकंमधूकंनिष्क्वाथ्यतोयेमधुचार्धकर्षम् ॥ प्रक्षिप्यपीतंशिशुरोगशांतिंदुग्धस्यशुद्धिंचकरोतिसद्यः ॥ १८ ॥ पंचकोलमधुकैःसकुलत्थैर्बिल्वमूलतगरःकुचलेपः ॥ निर्मितोहितकरोबहुवारंदुग्धशुद्धिमयमाशुकरोति ॥ १९ ॥ पाठारसांजनंमूर्वासुरदारुप्रियंगवः ॥ एभिःस्तनस्यवैवर्ण्यपूतिगंधिहरोमतः ॥२०॥ मुस्तापाठाशिवाकृष्णाचूर्णंदुग्धेनपाययेत् ॥ एतेनसहसाशुद्धिर्ध्रुवंस्तन्यस्यजायते ॥२१॥ त्रायमाणामृतानिंबपटोलैस्त्रिफलान्वितैः॥ स्तनप्रलेपतः

शीघ्रंस्तन्यशुद्धिःप्रजायते ॥ २२ ॥ पूर्वमालेपनंशु-
ष्कंप्रक्षाल्यनिर्मलाम्बुना ॥ स्तनौसद्दुग्धौविधिना
पाययेद्बालकंततः॥२३॥इतिस्तन्यशुद्धिः॥शिशोरो
गान्परीक्षेतरोदनान्मुखवर्णतः ॥स्तनाकर्षणतश्चा
पिततःकुर्य्याच्चिकित्सितम् ॥२४ ॥ मात्रयालंघये
द्धात्रींशिशोर्नैष्टंविशोषणम् ॥ सर्वैनिवार्य्यतेभ्रंस्य
क्वचित्स्तन्यं न वारयेत् ॥ २५ ॥

भाषा–गिलोय, शालोन, दालचीनी, इनका क्वाथ दुग्धकी शुद्धिके वास्ते स्त्रीको प्यावे अथवा कस्मीरी, पढा, बहेडाकी जड इनका क्वाथ करके स्त्रीको प्यावै ॥ १७ ॥ चिरायता कस्मीरी पढा, मुलहटी, महुवा इनके क्वाथमें आधा तोला सहत डालके स्त्री पीवे बालकका रोग शांतहो और दुग्धकी शुद्धि हो ॥ ॥ १८ ॥ पीपल, पिप्पलीमूल, चव्य, चीता, सूंठ, मुलहटी, कुलथी, वेलकी जड, तगर इन औषधियोंको जलमें पीसके स्तनोंके ऊपर लेप कईवार करनेसे दुग्ध शुद्ध होजाताहै ॥ १९ ॥ कस्मीरी, पढा, रसोत, मोरवेल, देवदारु, प्रियंगु, इन द्रव्योंका स्तनोंपर लेप करनेसे यह लेप स्तनकी विवर्णताको और दुर्गंधको हरताहै ॥ ॥ २० ॥ नागरमोथा, कस्मीरीपढा, हरडै, पीपल इनका चूर्ण दुग्धके संग पीनेसे शीघ्र दुग्धशुद्धि होजावे ॥ २१ ॥ त्रायमाणा, गिलोय, नींबकी छाल, परवल, हरडैकी छाल, बहेडा आँवला इन द्रव्योंका स्तनोंपर लेप करनेसे बहुत जल्दी दुग्धशुद्धि होजातीहै॥ २२ ॥पहिलेका लेप सूखा हुवाको निर्मल जलसे धोके

पीछे विधिपूर्वक बालकको स्तनपान करावे ॥ २३ ॥ इति दुग्धशुद्धिः ॥ प्रथम बालकके रोनेसे, मखवर्णसे, स्तनके खींचनेसे बालकके रोगोंको निश्चय करे पीछे चिकित्साको करे॥ २४ ॥ बालककी बीमारीमें अनुमान माफिक धायको लंघन करावे बालककी शोषणी क्रिया न करे बालककी सर्व वस्तुका निवारण कर दे और दुग्धका निवारण किसीसमयमें नहीं करे ॥ २५ ॥

वातेनध्मापितांनाभिंसहजांतुंडसंज्ञिताम् ॥ मारुतघ्नैःप्रशमयेत्स्नेहस्वेदोपतापनैः ॥ २६ ॥ मृत्पिंडेनाग्निवर्णेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा॥ स्वेदयेदुत्थितां नाभिंशोफस्तेनोपशाम्यति ॥ २७ ॥ दग्धेनछागशकृतानाभिपाकेऽवगुंठनम् ॥ लेपंक्षीरेणवाशस्तं पर्णत्वग्रेणुचंदनैः ॥ २८ ॥ नाभिपाकेनिशारोधप्रियंगुमधुकैःकृतम् ॥ तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥ २९ ॥ बालोयोचिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनैवतस्याशु ॥ सैंधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनवर्षयेज्जिह्वाम् ॥ ३० ॥ गुदपाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् ॥ रसांजनंविशेषेणपानालेपनयोर्हितम् ॥ ३१ ॥ जातीप्रवालकुसुमानि समाक्षिकाणियोज्यानिबालकजनस्यमुखप्रपाके ॥ पाकेगुदस्यचरसांजनलोध्रचूर्णयोज्यंभिषग्भिरुपदिष्टमिदंशिशूनाम् ॥ ३२ ॥ आम्रसाररजसासहक्षाऽस्तंयातिनैतिचशिशोर्मुखपाकः ॥ गैरिकेणम-

क्षुनाथचसर्वैःश्वेतसारखदिरांजनयोगैः ॥ ३३ ॥ बालकस्यापिसुस्नेहैरभ्यंगंसमुपाचरेत् ॥ कोष्णेन पयसास्नानंफलवित्कारयेत्ततः ॥ ३४ ॥ दुष्टग्रहगृहीतानांनृणांनेष्टंतुदर्शनम् ॥ विशेपाद्रक्षयेद्दृष्टिदोषंरक्षादिभिःशिशोः ॥ ३५ ॥

इति बालकस्यनाभिगुदमुखपाकचिकित्सा ॥

भापा—अब बालकके रोगोंकी चिकित्सा लिखतेहैं वायुसे बालककी नाभि फूल जातीहै और नाभिमें पीडा बहुत हो उसको तुंडसंज्ञक नाभि कहतेहैं अब चिकित्सा लिखतेहैं वायुके दूर करनेवाले स्नेह, स्वेद, उपतापन इत्यादिकोंसे नाभिको स्वेदन करे ॥ २६ ॥ या मिट्टीका डलाको अग्निमें खूब तप्त करे जब अग्निकी माफिक उसका वर्ण होजावे तब उसको दूधमें बुझाके कपडामें लपेटके नाभिको सेके जिस्से नाभिका शोजा शांत हो जावे ॥ २७ ॥ अथवा बकरीकी विष्ठाको जलाके उस भस्मको नाभिपर लगाके हाथकी अंगुलीसे दवा देनेसे अथवा नागरपान, दालचीनी, महँदीके बीज, लाल चंदन इनको दूधमें पीसके नाभिपर लेप करनेसे नाभिपाक अच्छा हो जाताहै ॥ २८ ॥ नाभिपाकमें हलदी, लोध, महँदी- मुलहटी, इन द्रव्योंसे तैल पकाके लगावे अथवा इन्हीं द्रव्योंका चूर्ण करके नाभिपर लगावे ॥ २९ ॥ जो बालक जन्म होनेबाद बहुत कालतक दूध न पीवे तब सैंधवनमक, आंवला, सहत, घृत, हरडेकी छाल इन द्रव्योंका कल्क करके बालककी

जिह्वाको घर्षणकरे ॥ ३० ॥ बालककी गुदापाक होनेसे पित्तनाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये ॥ और रसोत पीनेमें लगानेमें विशेपता करके हितकारी है ॥ ३१ ॥ बालकका मुखपाकरोगमें चमेलीके पत्ते और फूल दोनों पीसके सहतमें मिलाके मुखमें लगाना चाहिये अथवा इसको उबालके और छानके सहत डालके कुल्ली कराना चाहिये और बालककी गुदापाकमें रसोत, लोध इनका चूर्ण अवगुंठन करना चाहिये ॥ ३२ ॥ आम्रसारके चूर्णसे अथवा चमेलीके पत्तोंके चूर्णसे या गेरू और सहतसे अथवा कपूर, कत्था, अंजन यह चार योगहैं अलहदा अलहदासे बालकका मुखपाक जाता रहताहै और समस्त द्रव्योंसेभी जाता रहताहै ॥ ३३ ॥ और बालकको अच्छे अच्छे चंदनादिक लाक्षादिक तैलोंसे अभ्यंग कराना चाहिये पश्चात् गरम जलसे स्नान करा देना चाहिये ॥ ॥ ३४ ॥ और बालकने दुष्टग्रहगृहीत पुरुपोंका दर्शन नहीं करावे और विशेपताकरके मंत्र यंत्रोंसे बालकके दृष्टिदोप नहीं होने देवे ॥ ३५ ॥

इति बालकस्य नाभिगुदमुखपाकचिकित्सा ॥

अथ शिशूनां ज्वरचिकित्सा लिख्यते॥मुस्ताभया-निंबपटोलयष्टीक्वाथःशिशूनांज्वरनाशकारी ॥ तद्व-द्गुडूचीविहितश्चसारःसुप्रत्यययोयंमधुनावलीढः ॥ ॥ ३६ ॥ सितामधुभ्यांकटुकीचलीढासाध्मानसु-ग्रंज्वरमाशुहन्यात् ॥ तत्कल्कलेपश्चकृतःशिशूनां

मुहुर्मुहुर्दोषविनाशहेतुः ॥ ३७ ॥ क्वाथःकृतःपद्म-
कनिंबधान्यच्छिन्नोद्भवालोहितचंदनोत्थः ॥ ज्वरंज-
येत्सर्वभवंकृशानुंधात्रीशिशुभ्यांप्रकरोतिपीतः ॥
॥ ३८ ॥ अमृतैकोपितानीरेयावद्यामाष्टकंभवेत् ॥
शिशूनांशमयत्याशुसर्वदोषभवंज्वरम् ॥ ३९ ॥
यष्टीमधुतुगाक्षीरीलाजांजनसिताकृतः ॥ लेहःप्रद-
त्तोबालानामशेषज्वरनाशनः ॥ ४० ॥ क्वाथः
स्थिरागोक्षुरविश्वबालक्षुद्राद्वयच्छिन्नरुहाकिरातैः॥
वातज्वरंसंशमयेत्प्रपीतोबालेनधात्र्याचकृशानुका-
री ॥ ४१ ॥ पंचमूलीकृतःक्वाथःपीतोवातज्वरा
पहः ॥ तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्याबलाभवः ॥
॥ ४२ ॥ गूडूचीसारिवोशीरचंदनोत्पलपद्मकैः ॥
परूषमधुकाश्मर्यधन्याकैर्विहितोजयेत् ॥ ४३ ॥

भाषा—अब बालकोंके ज्वरकी चिकित्सा लिखतेहैं नागर-
मोथा, हरडेकी छाल, नींबकी छाल,पलवल, गिलोय इन औषधि-
योंका क्वाथ बालकोंके ज्वरको नाश करताहै ऐसेही गिलोयका
चूर्ण या स्वरस सहतसे चाटा ज्वरको नाश करताहै यह प्रत्यक्ष
फलदेनेवालाहै ॥ ३६ ॥ मिसरी सहतसे कुटकीका चूर्णको
चाटे तो आध्मानसहित ज्वरको नाशकरे और कुटकीका
कल्कभी बालकके लेप करनेसे ज्वरका नाश करताहै ॥ ३७ ॥
पद्मकाष्ठ, निंबकी छाल, गिलोय लालचंदन, इन द्रव्योंका क्वाथ
बालक, बालककी माताको प्यानेसे त्रिदोषके ज्वरको दूरकरे

भूखको पैदाकरे ॥ ३८ ॥ खाली गिलोय आठपहर भिगोके पीसके पीनेसे बालकके सब तरहके ज्वरको दूर करतीहै ॥ ॥ ३९ ॥ मुलहटी, सहत, वंशलोचन, धानकी खील, रसोत कोई वैद्य अंजन करके शुद्ध सुरमाको ग्रहण करतेहैं और मिश्री इनका अवलेह बालकको देनेसे अशेपतासे ज्वरका नाश करनेवाला है ॥ ४० ॥ शालपर्णी, गोखरू, सूंठ, नेत्रवाला, दोनों कटेहली छोटी बडीकी जड गिलोय चिरायता इनकरके किया हुवा काथ बालकको और धायको प्यानेसे बालकके वात ज्वरको शमनकरे अग्निको तेजकरे ॥ ४१ ॥ लघुपंचमूलका काथ पान किया वातज्वरको दूर करताहै शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेहली, बडी कटेहली, गोखरू, यह लघु पंचमूलक द्रव्यहैं और ऐसेही गिलोय, मुनक्का, सिरयाई, खरैंटी, इनका काथ वातज्वरको दूर करताहै ॥ ४२ ॥ गिलोय सिरयाई, खस, लाल चंदन, नीलोफर, पद्मकाठ, फालसा, मुलहटी, गंभारी, धनियाँ इन द्रव्योंका किया काथ पीनेसे वातज्वरको जीतताहै ॥ ४३ ॥

शारिवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापद्मकपर्पटः ॥ क्काथःपी-
तोनिहंत्याशुशिशूनांपैत्तिकंज्वरम् ॥ ४४ ॥ मुस्ताप-
र्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम् ॥ शीतंवारिनिहंत्या-
शुतृष्णादाहवमिज्वरान् ॥ ४५ ॥ मधुकंचंदनंद्राक्षाधा-
न्यकंसदुरालभम् ॥ एतैःक्काथःकृतोहन्याद्दाहंवातज्व-
रंतथा ॥ ४६ ॥ मुस्तकंचंदनंवासाह्रीबेरंयष्टिकामृता ॥
एषांक्काथोऽस्रपित्तघ्नस्तृष्णादाहज्वरापहः ॥ ४७ ॥

वासापर्पटकोशीरनिंबभूनिंबसाधितः ॥ क्काथोहं-
तिवमिश्वासकासपित्तज्वराञ्छिशोः ॥४८॥ अभया
मलकीकृष्णाचित्रकोयंगणोमतः ॥ दीपनः पाचनो
भेदीसर्वश्लेष्मज्वरापहः ॥ ४९ ॥ कट्फलंपुष्करंशृं
गीपिप्पलीमधुनासह ॥एषांलेहोज्वरंश्वासंकासंमंदा-
नलंजयेत् ॥५०॥ कटुकंकट्फलंशृंगीपुष्करंपिप्प
लीतथा ॥ समस्तानेकशोवापिद्विशोवापिभिषग्वरः
॥ ५१ ॥एतांश्चूर्णीकृतानद्यान्मध्वार्द्रकरसप्लुतान् ॥
कफज्वरारुचिश्वासच्छर्दिशूलापहाञ्छिशुः ॥५२॥
क्षौद्रोपकुल्याः संगस्तु श्वासकासज्वरापहः॥ प्लीहा-
नंहंतिहिक्कांचबालानांतुप्रशस्यते ॥ ५३ ॥

भाषा–सिरयाई, नीलोफर, गंभारी, गिलोय, पद्मकाष्ठ, पित्त-
पापडा, इनकरके किया क्काथ पान करनेसे बालकोंके पित्त
ज्वरको नष्ट करताहै ॥ ४४ ॥ नागरमोथा, पित्तपापडा, खस,
नेत्रबाला, पद्मकाठ, इन द्रव्यों करके सिद्ध किया क्काथ शीतल
करके पान करनेसे प्यासको, दाहको, वमनको, ज्वरको, शीघ्र
नष्ट करताहै ॥ ४५ ॥ मुलहटी, लालचंदन, मुनक्का, धनियां,
धमासा, इनकरके किया क्काथ पीनेसे दाहको वातज्वरको नाश
करताहै ॥ ४६ ॥ नागरमोथा, लालचंदन, वांसाके पत्ते, नेत्र-
बाला मुलहटी, गिलोय, इनका क्काथ रक्तपित्तका, तृषाका,
दाहका, ज्वरका नाश करनेवालाहै ॥ ४७ ॥ वांसा, पित्तपापडा,
खस, नींबकी छाल, चिरायता, इनकरके साधित किया क्काथ

बालकको प्यानेसे, वमनको, श्वासको, कासको, पित्तज्वरको नष्ट करताहै ॥ ४८ ॥ हरडैकी छाल, आँवला, पीपल छोटी, चीता इन चार औषधियोंका योग यह दीपन पाचनगण कहाहै, दस्तावरहै. संनिपातज्वरको, कफज्वरको नष्ट करताहै ॥ ४९ ॥ कायफल, पोहकरमूल, काकडासींगी, इनका सहतसे चाटना ज्वरको श्वासको कासको मंदाग्निको जीतताहै ॥ ५० ॥ मिरच, कायफल, काकडासींगी, पोहकरमूल, पीपल छोटी इन द्रव्योंमेंसे, एकको, या दोको सबको चूर्ण करके अदरखका अर्क और सहतके संग चाटनेसे बालकके कंफज्वर, अरुचि, श्वास, छर्दि, शूल यह सर्व नष्ट होजातेहैं ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छोटी पीपलको सहतसे चाटना श्वास, कास और ज्वर इनको हर्ताहै, प्लीहाको, हिचकीको नष्ट करताहै. इसका चाटना बालकको बहुत अच्छाहै ॥ ५३ ॥

मधुकंशारिवाद्राक्षामधूकंचंदनोत्पलम् ॥ काश्मरी पद्मकंलोध्रंत्रिफलापद्मकेसरम् ॥ ५४ ॥ परूपकं मृणालंचन्यसेदुत्तमवारिणि ॥ मधुलाजासिताद्यु- क्तंतत्पीतमुषितंनिशि ॥ ५५ ॥ वातपित्तज्वरंदाहं तृष्णामूर्छारुचिभ्रमान् ॥ शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूत- मिवमारुतः ॥ ५६ ॥ कैरातोजलदश्छिन्नापंचमू- लीछ्युस्तथा ॥ एषांकषायोहंत्याशुवातपित्तोत्तरं ज्वरम् ॥ ५७ ॥ मुस्तापर्पटकंछिन्नाकिराताविश्वभे- षजम् ॥ एषांकषायोदातव्योवातपित्तज्वरापहः ॥

॥ ५८ ॥ उशीरं मधुकंद्राक्षाकाश्मरीनीलमुत्पलम् ॥ परूषकंपद्मकंचमधुकंमधुकंबला ॥ ५९ ॥ एभिःकृतःकषायोयंवातपित्तज्वरंजयेत् ॥ प्रलाप मूर्च्छासंमोहतृष्णापित्तज्वरापहः ॥ ६० ॥ त्रिफला पिचुमंदश्चपटोलंमधुकंबला ॥ एभिःक्काथःकृतः पीतःपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ ६१ ॥ अमृतेंद्रयवोरिष्टंपटोलंकटुरोहिणी ॥ नागरंचंदनंमुस्तंपिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ ६२ ॥ अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणम् ॥ ६३ ॥

भाषा—मुलहटी, सिरयाई, मुनक्का, महुवाके पुष्प, लालचंदन, नीलोफर, गंभारी, पद्मकाष्ठ, लोध, हरडेकी छाल, बहेडा, आंवला, कमलगट्टा, नागकेसर, पद्मकेसर इस पदसे कमल, केसरकोभी ग्रहण करतेहैं ॥ ५४ ॥ फालसा, कमलनाल, धानकी खील, मिसरी, इन द्रव्योंको रात्रिमें भिगोरक्खे प्रातः-काल कपडासे छानके शहद डालके प्यानेसे बालकके वात-पित्तज्वरको, दाहको, प्यासको, मूर्छाको अरुचिको, भ्रमको, रक्तपित्तको शमन करताहै. जैसे मेघको वायु शमन कर देता है तद्वत् ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, दोनों कटेहली, गोखरू, इनका क्काथ वात-पित्ताधिक ज्वरको नष्ट करताहै ॥ ५७ ॥ नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता, सोंठ इनका क्काथ बाल-

कको देनेसे वातपित्तज्वरको नष्ट करताहै ॥ ५८ ॥ खस, मुलहटी, मुनक्का, गंभारि, नीलोफर, फालसा, पद्मकाष्ठ, मुलहटी, महुवाके फूल, खरैंटी ॥५९॥ इन द्रव्योंका किया क्वाथ पीनेसे वातापित्तज्वरको जीतताहै, प्रलाप, मूर्च्छा, मोह, तृषा, पित्तज्वर, इनको नष्ट करताहै ॥ ६० ॥ अन्योपायः ॥ हरडै बडी, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, पलवल, मुलहटी, खरैंटी, इन द्रव्योंकरके किया क्वाथ पियाहुवा पित्तश्लेष्मज्वरको नष्ट करताहै ॥ ६१ ॥ गिलोय, इंद्रजौ, नींबकी छाल, पलवल, कुटकी, सूंठ, लालचंदन, नागरमोथा, इन द्रव्योंका क्वाथ करके पीपलका चूर्ण उसपर बुरकाके बालकको प्यावे ॥ ६२ ॥ यह अमृताष्टक पित्तश्लेष्मज्वरको, हृल्लासको, अरुचिको, छर्दिको, तृषाको, दाहको निवारण करताहै ॥ ६३ ॥

मुस्तामृतापर्पटपुष्कराह्वैःपटोलधन्याककिराततिक्तैः ॥ सचंदनोशीरबलाजकाख्यैःक्वाथःपरंपित्तकफज्वरघ्नः ॥ ६४ ॥ हृल्लासतृष्णामोहांश्चारुचिंदाहं चच्छर्दनम् ॥ पार्श्वव्यथांहरेत्सद्यःप्रयोगोयंसुशोभनः ॥ ६५ ॥ धान्यकचंदनपद्मकमुस्ताशक्रयवामलकैःसपटोलैः ॥शीतकषायममुंखलुदद्याद्बालकपित्तकफज्वरहृत्स्यात्॥६६॥वासारसःक्षौद्रसितासमेतो ज्वरंहरेत्पित्तबलासजातम् ॥ श्वासंसकासंचवमिंसदाहंसकामलंहंतिसरक्तपित्तम् ॥ ६७ ॥ सारग्वधःसातिविषःसमुस्तस्तिक्ताकषायोज्वरमाशुहन्यात् ॥

सामंसशूलंसवमिंसदाहंसाध्मानवंधंसकफंसवातम्॥
॥ ६८॥ किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् ॥
चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥ ६९ ॥
मुद्गतंडुलसंसिद्धंकेवलैर्वामकुष्ठकैः ॥ पथ्यमत्रभिष-
ग्दद्याद्यूपंवातकफज्वरे ॥ ७० ॥ दशमूलीकृतः
क्वाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥ मोहंसंशमयेत्तद्वत्संनि-
पातंज्वरंतथा ॥ ७१ ॥

भाषा--नागरमोथा, गिलोय, पित्तपापडा, पोकरमूल, पलवल, धनियां, चिरायता, लालचंदन, खस, खरैंटी, नेत्रवाला, इनों कर-के किया क्वाथ पीनेसे पित्तकफज्वरका नाश करताहै ॥ ६४ ॥ हृल्लासको, तृष्णाको, मोहको, अरुचिको, दाहको, छर्दिको,पार्श्व-शूलको तत्काल हरता है, यह प्रयोग बहुत सुंदर वैद्योंने कहाहै ॥ ॥ ६५ ॥ अन्यः ॥ धनियां, लालचंदन, पद्माख, नागरमोथा इंद्रजौ आंवला, पलवल इन द्रव्योंका क्वाथ टंढाकरके प्यानेसे बालकके पित्त कफज्वरको हर्ताहै ॥ ६६ ॥ वांसाके पत्तोंका पुटपाकद्वारा रस निकालके, मिसरी, शहदके संग चाटनेसे बालकका पित्त कफ ज्वर, श्वास, कास, छर्दि, दाह, कामला, रक्तपित्त इन सबको शीघ्र हर्ता है ॥ ६७ ॥ अन्यः ॥ अमलतास, अतीस, नागर मोथा, कुटकी इनका क्वाथ शूलसहित कच्चाज्वरको, वमनको, दाहको, अफाराको, बंधाको,कफको, वायुको नष्ट कर्ताहै॥६८॥ चिरायता नागरमोथा, गिलोय, सूंठ, इनको वैद्य चातुर्भद्र कहतेहैं क्वाथ करके पीनेसे वातश्लेष्मज्वरको नष्ट करताहै ॥ ६९ ॥ मूंग

चावल करके सिद्धकिया यूष अथवा केवल मोठकरके किया यूष वातकफज्वरमें पथ्यहै बालकको ज्वरमें देय देवे ॥ ७० ॥ दशमूल करके किया काथ पीपलका चूर्ण ऊपर डालके बालक-को प्यानेसे मूर्छाको संनिपातज्वरको शमन करताहै ॥ ७१ ॥

छिन्नासटीपुष्करमूलतिक्ताःशृंगीसपाठामृतवल्लरीच॥ दुरालभाविश्वकिराततिक्ताःसमस्तदोषज्वरहृद्गणो-यम् ॥ ७२ ॥ भूनिंबदारुदशमूलमहौषधाब्दातिक्ते-न्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः ॥ तंद्राप्रलापकसनारु चिदाहमोहश्वासादियुक्तमखिलंज्वरमाशुहंति॥७३॥ वासाव्याघ्रीकणालेहःशीतज्वरविनाशनः ॥ तद्वत्क्षु-द्रामृतानंतातिक्तभूनिंबसाधितः ॥ ७४ ॥ गुडूची विहितःक्काथःकणाचूर्णसमन्वितः ॥ ऐकाहिकंज्वरं हंतिकासश्वासादिदूषितम् ॥ ७५ ॥ द्राक्षापटोलत्रि फलापिचुमंदवृषैःकृतः ॥ काथऐकाहिकंहंतिपरार्थ-मिवदुर्ज्जनः ॥ ७६ ॥ आमंत्र्यपूर्वंशुचिनागृहीतंमयूर मूलंकरकोष्ठवद्धम् ॥ प्रातस्तथासूर्य्योदिनेनिहन्या देकाहिकंशोणितसूत्रवद्धम् ॥ ७७ ॥ ऊर्णनाभ्या कृतंजालंरक्तसूत्रसमन्वितम् ॥ सिद्धतैलमृतंकृत्वाक

---

१ दशमूललक्षणम्—श्रीफलः सर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका ॥ स्योनाकः पंचभिश्चैतैः पंचमूलं महन्मतम् ॥ १ ॥ शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कंटकारिका ॥ गोक्षुरः पंचभिश्चैतैः कनिष्ठं पंचमूलकम ॥ २ ॥ उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ॥

जलंतेनकारयेत्॥ तेनांजिताक्षःक्षिप्रेणहन्यादेकाहशोज्वरान् ॥ ७८ ॥ ज्वरंभूताभिषंगोत्थंरक्षामंत्रादिभिर्जयेत् ॥ विषघ्नौषधयोगेनविषोत्थमपिबुद्धिमान् ॥ ७९ ॥

भाषा—गिलोय, कचूर, पोकरमूल, कुटकी, काकडासींगी, कश्मीरी पद्मा, गिलोय, धमासा, सोंठ, चिरायता, नींबकी छाल इन औषधियोंका गण सब दोषोंका सर्व ज्वरोंका नाशकरनेवालाहै ॥ इस योगमें दोबार गिलोय पढीह इसवास्ते दूनी लेना चाहिये ॥ ७२ ॥ अन्यः ॥ चिरायता, देवदुवार, दशमूल, सूंठ, नागरमोथा, कुटकी, इंद्रजौ, धनियां, गजपीपल इनका क्काथ तंद्रा, प्रलाप, कास, अरुचि, दाह, मूर्च्छा, श्वास इन करके युक्त ज्वरको शीघ्र नाश करताहै ॥ ७३ ॥ वांसा, कटहलीकी जड, पींपल इनका अवलेह शीतज्वरको नाश कर्ताहै और कटेलीकी जड, गिलोय, जवासा, कुटकी, चिरायता, इनोंकरके किया क्काथ भी उसी तरह शीतज्वरको नाश करताहै ॥ ७४ ॥ अन्यः ॥ गिलोयका क्काथ पीपलका चूर्णसहित पीनेसे कासश्वासादिकों करके दूषित ऐकाहिक ज्वरको नष्ट करताहै। ।७५॥ अन्यः ॥ मुनक्का, गिलोय, हरडेकी छाल बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, वांसाके पत्ते इन करके किया क्काथ ऐकाहिक ज्वरको ऐसे नाश करताहै कि जैसे दुर्जन परद्रव्यको नष्ट करदेताहै ॥ ७६ ॥ अन्योपायः ॥ शनिवारको मयूरशिखाजडीको निमंत्रित कर आवे रविवारको प्रातःकाल

उपाडके लेआवे फिर लाल डोरीसे हाथ कमरमें बांधनेसे ऐकाहिक ज्वर नष्ट होजाताहै ॥ ७७ ॥ अन्यः ॥ मकडीका जालाको लेके लालसूत ऊपर लपेटके वर्ति बनाले फिर तिलोंकि तेलमें भिगोके कज्जल लोहेकी पत्तीपर उतारले वह कज्जल नेत्रमें घालनेसे ऐकाहिकादिक सब ज्वरको नष्ट करताहै ॥ ७८ ॥ भूतादिकोंके अभिनिवेशसे ज्वरहो उसको रक्षा मंत्रादिकोंकरके जीते और जो विषैली वस्तु खानेसे ज्वरहो उसको विषके नाश करनेवाली औषधिसे जीते ॥ ७९ ॥

निंबपत्रामृतानन्तापटोलेंद्रयवैःकृतः॥क्वाथः सततकंहन्यात्सुप्रभुर्व्यसनंयथा ॥ ८० ॥ गुडूचीचन्दनोशीरधान्यनागरतोयदैः ॥ क्वाथस्तृतीयकंहन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ॥ ८१ ॥ पलंकषावचाकुष्ठं गजचर्म्माविचर्मच ॥ निंबस्यपत्रंमाक्षीकंसर्पियुक्तंतु धूपनम् ॥ ज्वरवेगंनिहंत्याशुबालानांतुविशेषतः ॥ ८२ ॥ रसोनहिंगुलवणैःशृंगीमरिचमाक्षिकैः ॥ धूपःसर्वग्रहघ्नोयंकुमाराणांज्वरापहः ॥ ८३ ॥ निर्मोकामरदारुहिंगुमरिचारिष्टच्छदंमाक्षिकंनिर्माल्यंनरकेशसर्षपवचागंधर्रसोनःशिला ॥ यष्टीगुग्गुलुकुष्ठपिच्छलवणामार्जारविष्ठाघृतंसजोरुद्रजटार्कपत्रजलदंधूपोवरोयंमहान् ॥ ८४ ॥ निंबकुष्ठवचायष्टिसिद्धार्थकपलंकषैः ॥ सर्पिर्लवणसर्त्वग्यवैर्धूपोज्वरापहः ॥ ८५ ॥ निर्गुण्ड्याःसहदे-

व्याश्वकटौबद्धंजटाद्वयम् ॥ प्रातरादित्यवारेचसर्व ज्वरविनाशकृत् ॥ ८६ ॥ कन्याकर्तितसूत्रेणबद्धा- पामार्गमूलिका ॥ ऐकाहिकंज्वरंहंतिशिखायामपि वेगतः ॥८७॥ कर्णेबद्धारवौश्वेततुरंगरिपुमूलिका॥ सर्वज्वरहराश्वेतमंदारस्यचमूलिका ॥ ८८ ॥ काक- माचीशिफाकर्णेबद्धारात्रिज्वरापहा ॥ पाणिस्थंवृ- कवंदाकमूलंवितनुतेशिवम् ॥ ८९ ॥ ॐनमोवान- रस्यमुखंघोरमादित्यसमतेजसम् ॥ तस्यस्मरणमा- त्रेणज्वरंनश्यतितत्क्षणम् ॥ ९० ॥

इति कल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे ज्वरहरणोपायकथनं नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

भाषा—अन्यः ॥ नींबकी छाल, पतरज, गिलोय, जवाँसा, पलवल, इंद्रजौ इन द्रव्योंकरके किया क्वाथ सतत ज्वरको नष्ट करता है ॥ जैसे ईश्वर सर्व दुःखोंको नाश करतेहैं एवम् ॥ ॥ ८० ॥ गिलोय, लालचंदन, खस, धनियां, सूंठ, नागरमोथा इनकरके किया क्वाथमें मिसरी, सहत डालके बालकको, प्यानेसे तार्तीयक ज्वरको नष्ट करता है ॥ ८१ ॥ गूगल, वच, कूट, हाथीका चमडा, भेडका चमडा, नींमके पत्ते, सहत, घी, इन सब द्रव्योंको कूटके धूप देनेसे ज्वरके वेगको शीघ्र नाश करै है बालकोंका विशेषतासे ज्वर नाशकरै है ॥ ८२ ॥ अन्यो धूपः ॥ ल्हसन, हींग, नमक, काकडासींगी, मिरच, सहत, इन करके किया धूप सम्पूर्ण ग्रहोंका नाश करनेवाला है और

वालकोंका ज्वर नाश करनेवाला है ॥ ८३ ॥ अन्योवृहद्धूपः॥ सांपकी कांचली, देवदुवार, हींग, मिरच, नीवकेपत्ते, सहत, आकके पुष्प, मनुष्यके मस्तकके वाल, सिरसम, वच, गंधक, लहसन,मनशिल, मुलहटी, गूगल, कूट, मोरपंख, नमक, विल्लीकी विष्टा, घृत, राल, वालछड, आकके पत्ते, नागरमोथा इन द्रव्योंकी धूप वहुत श्रेष्ठहै वालकके सर्व दोषोंको नष्ट करती है ॥ ८४ ॥ अन्योधूपः॥ नींवके पत्ते, कूट, वच, मुलहटी, राई, गूगल, घृत, नमक, सांपकी कांचली, जौ अन्न इनकी धूप सर्व ज्वर नष्ट करनेवाली है ॥ ८५ ॥ रविवारके दिन प्रातःकाल निर्गुंडीकी जडको और सहदेईकी जडको लाके कमरके वांधनेसे सव ज्वरोंका नाशकरैहै ॥ ८६ ॥ कन्याके पास सूतकताके उसकी डोरी करके कंगाकी जड चोटीमें वांधनेसे ऐकाहिक ज्वरको नाश करतीहै ॥ ८७ ॥ रविवारके दिन सपेद कनेरकी जड या सपेद आककी जड लाके कानमें वांधनेसे सव तरहके ज्वरको हरती है ॥ ८८ ॥ मकोईकी जड कर्णमें बांधनेसे रात्रिमें होनेवाले ज्वरको नष्ट करतीहै और मूषाकन्नीकी जडको या वांदाकी जडको हस्तके वांधनेसे ज्वरको नाश करै है, वालकको आनंद पैदा करतीहै ॥ ८९ ॥ कोरी मिट्टीकी ढकनी लेके उसके ऊपर यह मंत्र लिखके शीत ज्वर आताहो तो अग्निकी अंगीठीमें रखके वीमारकी खट्वातले रखदे ॥ और उष्ण ज्वरको तो जल पात्रमें रखके रोगीकी खट्वा तले रखदे ज्वर चला जावे वालक

अच्छा हो जावे मंत्रका श्लोक मूलमें लिखाही है ॥ १० ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारकृतबालतंत्रभाषाटीकायां द्वादशः पटलः ॥१२॥

अथ बालानामतीसारोपायोलिख्यते ॥ लोध्रंसमंगा जलधातकीभिःसमानिताभिर्विहितः कषायः ॥ बालातिसारंसहसानिहन्यादेकाथमुस्तामधुनावलीढा ॥ १ ॥ बिल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रंग- जपिप्पलीच ॥ क्काथावलेहौमधुनाविमिश्रौबालेषु योज्यावतिसारितेषु ॥ २ ॥ मुस्ताविषाशक्रयवांबु- भिश्चशिशोरतीसारहरःकषायः ॥ आम्रांघ्रिवल्कस्व- रसश्वतद्वद्बृद्धिद्वयंवामधुनावलीढम् ॥ ३ ॥ नाग- रातिविषामुस्ताकुटजैःक्कथितंजलम् ॥ प्रातःपीतंकु मारणांशीघ्रंसर्वातिसारनुत् ॥ ४ ॥

भाषा—अब बालकोंके अतिसारकी चिकित्सा लिखतेहैं ॥ लोध, मँजीठ, नेत्रबाला, धायके फूल इनको समान लेके क्काथ बनाके बालकको प्यानेसे बालकका अतिसार शीघ्र नष्ट होजाता है अथवा खाली नागरमोथाके रज शहतसे चाटनेसे बालकका अतिसार जाता रहता है ॥ १ ॥ बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रबाला, लोद, गजपीपल इन द्रव्योंका क्काथ या अवलेह बनाके उसमें शहद डालके बालकोंके अतिसारमें देने चाहिये ॥ २ ॥ अन्यच्च । नागरमोथा, अतीस, इन्द्रजौ, नेत्रबाला इन द्रव्योंका क्काथ बालकके अतिसारको हरता है, अथवा आमकी जडका

स्वरस बालकके अतिसारको हरता है तैसे ऋद्धि वृद्धि दोनों श हदसे चाटनसे अतिसारको नष्ट करतीहैं ॥ ३ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, अनीस, नागरमोथा, कूडाकी छाल, इन द्रव्योंकरके क्वथित जल बालकोंको प्यानेसे सब तरहके अतिसारको शीघ्र नष्ट-कर देता है ॥ ४ ॥

पिप्पलापटोलमूलंचशृंगवेरंवचामपि ॥ विडंगान्यज-मोदांचपिप्पलींतंडुलान्यपि ॥५॥ एतान्यालोड्य सर्वाणिसुखंतप्तेनवारिणा॥आमप्रवृत्तेऽतीसारेकुमारं पाययेद्द्विपक् ॥ ६ ॥ नागरातिविषामुस्ताक्काथः स्यादामपाचनः ॥ विषंवासगुडंलीढंमाधुनामहरं परम् ॥ ७ ॥ मुस्तंमोचरसःपाठाविल्वंलोध्रंसनाग-रम् ॥ तक्रेणपीतंदुर्वारंशिशोर्हन्त्युदरामयम् ॥८॥ ॥ इत्यतीसारः ॥ हरिद्राद्वयष्टयाह्वासिंहीशक्र-यवैःकृतः ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नःकषायःस्तन्यदो-षजित् ॥ ९ ॥ घनकृष्णारुणाशुंठीचूर्णंक्षौद्रेणयो-जितम् ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासश्वासवमीर्जये-त् ॥ १० ॥ धातकीबिल्वधन्याकलोध्रेन्द्रयववाल-कैः ॥ लेहःक्षौद्रेणबालानांज्वरातीसारवांतिहृत् ॥ ११ ॥ इतिज्वरातिसारः ॥ यवानीजीरकंव्यो-षंकुटजंविश्वभेषजम् ॥ एतन्मधुयुतंलीढंबालानां ग्रहणींजयेत् ॥ १२ ॥

भाषा–पलवलकी जड, सूंठ, वच, वायविडंग, अजमोद पीप-

ल छोटी, सांठीचावल ॥ ५ ॥ यह सब द्रव्य पीसके जलमें छानके जरा गरम करके बालकको आमातीसारमें पान करावे ॥ ६ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, अतीस, नागरमोथा, इनका क्वाथ आमका पकानेवालाहै, अथवा अतीस गुड दोनों समान सहतसे चाटे हुये आमको हरते हैं॥ ७॥नागरमोथा, मोचरस, पाठा,बेलगिरी, लोध, सूंठ इनका चूर्ण तक्रसे पान किया बालकके दुर्वार अतीसारको नाश करताहै ॥ ८॥ इत्यतीसारचिकित्सा ॥ हलदी, दारुहलदी, मुलहटी, कंटकारीकी जड, इंद्रजौ इन द्रव्योंकरके सिद्ध किया क्वाथ बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करताहै. और दुग्धदोषकोभी नष्ट करताहै ॥ ९ ॥ नागरमोथा, पीपल, मंजीठ, सूंठ, इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करताहै. और खांसी श्वासको जीतताहै ॥ ॥ १० धायके फूल, बिल्व, धनियां, लोध, इंद्रजौ, नेत्रबाला इन छह द्रव्योंका चूर्ण करके सहतसे चाटे तो बालकोंके ज्वरातिसारको और वमनको हरताहै ॥ ११ ॥ इति ज्वरातिसार; चिकित्सा ॥ अजवायन, सुपेदजीरा, सूंठ, मिरच, पीपलछोटी कूडाकी छाल, सूंठ, इन सब द्रव्योंका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकोंकी ग्रहणीको जीतताहै ॥ १२ ॥

पिप्पलीविजयाशुंठीचूर्णमधुयुतंभिषक् ॥ दत्वानिर्जित्यग्रहणींपूजांनियतमाप्नुयात् ॥ १३ ॥ कृष्णामहौषधंबिल्वंकुटजंसयवानिकम् ॥ मधुसर्पिर्युतंलीढंवातलांग्रहणींजयेत् ॥ १४ ॥ नागरंमुस्त-

कंबिल्वंचित्रकंग्रंथिकंशिवा ॥ चूर्णमेतन्मधुयुतं कफजांग्रहणींजयेत् ॥ १५ ॥ सगुडंनागरंबिल्वंयः खादतिहिताशनः ॥ त्रिदोषग्रहणीरोगान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥ १६ ॥ मुस्तकातिविषाबिल्वंचूर्णि- तंकौटजंतथा ॥ क्षौद्रेणलीढाग्रहणींसर्वदोषोद्भवां जयेत् ॥ १७ ॥ इतिसंग्रहणी ॥ यवानीनागरंपा- ठादाडिमंकुटजंतथा॥चूर्णोयंगुडतक्राभ्यांपीतोऽर्शः शमनः परः ॥१८॥ अजाजीपौष्करंपाठात्र्यूषणंदह नःशिवा ॥ गुडेनगुटिकाकार्यासर्वार्शोनाशनीपरा॥ ॥१९॥ नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्करा- भ्यासात्॥दधिस्वरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंति रक्तवहाः ॥२०॥ कुटजंकौटजंबीजंकेसरंपद्मकेसर- म् ॥ एतन्मधुयुतंलीढंरक्तार्शोनाशनंपरम् ॥२१॥ एवंवाकौटजंबीजंरक्तार्शोमधुनाहरेत् ॥ तद्वन्मुस्ता मोचरसकपित्थच्छदजोरजः ॥ २२ ॥ इत्यर्शः ॥

भाषा—पीपल, भांग, सूंठ, इनका चूर्ण सहतसे बालकको चटानेसे वैद्य संग्रहणीको जीतके पूजाको यशको प्राप्त होताहै ॥ ॥ १३ ॥ अन्यच्च ॥ पीपल, सूंठ, बेलगिरी, कूडाकी छाल, अजवायन इनका चूर्ण करके घृतमें किंचित् भरकोके सहतसे चाटनेसे वायुकी संग्रहणी नष्ट करताहै ॥ १४ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, नागरमोथा, बेलगिरी, चीता, पीपलामूल, हरडै, इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफकी संग्रहणीको जीतताहै ॥ १५ ॥ हित

वस्तुका खानेवाला, गुड, सूंठ, बिल्व इनके अवलेहको खाता है वह त्रिदोषकी संग्रहणीसे मुक्त होजाताहै इसमें संदेह नहीं ॥ ॥ १६ ॥ अन्यच्च, नागरमोथा, अतीस, बिल्व, इंद्रजौ, इनका चूर्ण सहतसे चाटके त्रिदोषकी ग्रहणीको जीतलेवे ॥ १७ ॥ इति संग्रहणीचिकित्सा ॥ अजवायन, सूंठ, पाठा, अनारदाना, कूडाकी छाल इनका चूर्ण गुड तक्रसे पान किया बवासीरको शमन कर्त्ता है ॥ १८ ॥ अन्यच्च ॥ जीरासुपेद, पोहकरमूल, कश्मीरीपद्वा, सूंठ, मिरच, पीपल, चीता, हरडै, इनका चूर्ण करके गुडसे गोली बनाके खानेसे संपूर्ण तरहकी बवासीरको नाश करतीहै ॥ १९ ॥ माखन, तिल इनके अभ्याससे अथवा नागकेसर, माखन, मिसरी इनके अभ्याससे अथवा दहीके ऊपरकी मलाई उसको मथके तक्र बनाके उसको पीनेके अभ्याससे खूनी बवासीरके मस्से शमन होजातेहैं ॥ २० ॥ अन्यच्च॥कूडाकी छाल, इंद्रजौ, नागकेसर, कमलकेसर यह चार द्रव्य सहतसे चाटनेसे खूनी बवासीरको नाश करतेहैं ॥ २१ ॥ इसीतरह इंद्रजौ पीसके सहतसे चाटनेसे खूनी बवासीरको हर्ताहै और नागरमोथा, मोचरस, कैतकेपत्ते इनका चूर्ण करके सहतसे चाटनेसे यह चूर्णभी उसीतरह खूनी बवासीरको नष्ट करताहै२२

धान्यनागरजःक्वाथःशूलामाजीर्णनाशनः ॥ चूर्णत क्रयुतंपीतंतद्व्योषाग्निजीरकैः ॥ २३ ॥ पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णंमस्तुजलंपिबेत् ॥ सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥ २४ ॥ त्व-

क्पत्ररास्नागुरुशिग्रुकुष्टैरम्लप्रपिष्टैःसवचाशताह्वैः॥
उद्वर्तनंखल्लिविपूचिकाघ्नंतैलंविपक्वंचतदर्थकारि ॥
॥ २५ ॥ इत्यजीर्णविपूचिका ॥ अन्नपानैर्गुरु-
स्निग्धैर्महत्सांद्रहिमस्थिरैः ॥ पीतादिरेचनैर्धीमा-
न्भस्मकंप्रशमंनयेत् ॥ २६ ॥ औदुंबरंत्वचंपि
ष्ट्वानारीक्षीरयुतांपिबेत् ॥ ताभ्यांचपायसंसिद्धंभु-
क्तंजयतिभस्मकम् ॥ २७ ॥ मयूरतंडुलैःसिद्धं
पायसंभस्मकंजयेत् ॥ विदारीस्वरसक्षीरसिद्धंवा
माहिषंघृतम् ॥ २८ ॥ इतिभस्मकः ॥ कल्कः
प्रियंगुकोलास्थिमधुमुस्तांजनैःकृतः ॥ क्षौद्रलीढः
कुमारस्यच्छर्दितृष्णातिसारजित् ॥२९॥यवानीकु-
टजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः ॥ लेहश्छर्दिमतीसारंज्व-
रंबालस्यनाशयेत् ॥ ३० ॥ पीतश्चंदनचूर्णेनम-
धुनामलकीरसः ॥ छर्दिंसदाहांसतृष्णांशीघ्रमेववि-
नाशयेत् ॥ ३१ ॥

भाषा–धनियां, सूंठ, इनका क्काथ शूलको और आमाजी-
र्णको नाश करताहै ऐसेई सूंठ, मिरच, पीपल, चीता, सफेदजीरा
इनका चूर्ण तक्रसे पान किया शूलको आमाजीर्णको नाश
कर्ता है ॥ २३ ॥ अन्यच्च। पीपल, काला नमक, हरडै इनका
चूर्ण खाके ऊपरसे दहीका जल पीनेसे सब तरहके अजीर्णको
हरै और शूल, गुल्म, आनाह, अग्निकी मंदता इनको जीते
॥ २४ ॥ अन्यच्च । दालचीनी, पतरज, रासना, अगर, सहिंज-

नाका वक्कल,कूट,बच,सौंफ इनको कांजीमें पीसके उद्वर्तन करनेसे अथवा इन द्रव्यों करके तैल पकाके मालिश करनेसे वांयटोंका और हैजेका नाश होजाताहै ॥ २५ ॥ इत्यजीर्णचिकित्सा ॥ गुरु, स्निग्ध, अतिसांद्र,शीतल, स्थिर ऐसे पदार्थोंके खवाने प्यानेसे दस्त करानेसे बुद्धिमान् वैद्य भस्मक रोगको शांतकरे ॥ २६ ॥ गूलरका फल, दालचीनी, इनको पीसके स्त्रीके दूधके संग पीनेसे अथवा इन दोनों करके सिद्धकरी हुई खीरको खानेसे भस्मकको जीत लेताहै ॥ २७ ॥ अन्यच्च । ऊंगा वृक्षके चावलोंकरके सिद्धकरी पायसको खानेसे भस्मक नष्ट हो जाताहै ॥ अथवा विदारीकंदका स्वरस करके और दूध करके सिद्ध किया घृतके खानेसे भस्मक नष्ट हो जाताहै ॥ ॥ २८ ॥ इति भस्मकचिकित्सा ॥ मेंहदी, वेरकी गुठली, मुलहटी, नागरमोथा, सुरमा शुद्ध इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालककी छर्दि, प्यास, अतिसार जाते रहतेहैं ॥ २९ ॥ अजवायन, कूडाकी छाल, नींबकी छाल, सातोनकी छाल, पलवल, इन करके किया अवलेह बालककी छर्दिको, अतिसारको,ज्वरको नाश कर्ता है ॥ ३० ॥ अन्यच्च । सपेद चंदनका बुरादा, सहत, आंवलाका रस यह सामिल करके चाटनेसे बालककी छर्दिको दाहको प्यासको वहुत जलदी नाश कर देताहै ॥ ३१ ॥

हरीतकयाः कृतंचूर्णंमधुनासहलेहयेत् ॥ अधस्ताद्विहितेदोषेशीघ्रंछर्दिःप्रशाम्यति ॥ ३२ ॥ पटोलनिंबत्रिफलागुडूचीभिःशृतंजलम् ॥ पीतंक्षौद्र-

युतंछर्दिमम्लपित्तभवांहरेत ॥ ३३ ॥ अश्वत्थ-वल्कंसंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले ॥ तज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम् ॥ ३४ ॥ इतिछर्दिः ॥ सलाजांजनमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ॥ तृष्णांछर्दिमतीसारंशिशूनामुद्धतांहरेत् ॥ ३५ ॥ पिप्पलीमधुकंजंबूरसालतरुपल्लवाः ॥ चूर्णोयंमधुनाचेतितृष्णाप्रशमनःशिशोः ॥ ३६ ॥ दाडिमस्यचबीजानिजीरकंनागकेशरम् ॥ चूर्णसशर्कराक्षौद्रंलेहात्तृष्णाहरंशिशोः ॥ ३७ ॥ हिंगुसैंधवपालाशंचूर्णमाक्षिकसंयुतम् ॥ लीढंनिर्वापयत्याशुशिशूनामुद्धतांतृषाम् ॥ ३८ ॥ इतितृषा ॥ सुवर्णगैरिकंपिष्ट्वामधुनासहलेहयेत् ॥ शीघ्रंसुखमवाप्नोतितेनाहिक्कार्दितः शिशुः ॥ ३९ ॥ शुंठीधात्रीकणाचूर्णलेहयेन्मधुनाशिशुः ॥ हिक्कानांशांतयेतद्वदेकंवामाक्षिकंसकृत् ॥ ४० ॥ पिप्पलीरेणुकाक्काथःसहिंगुःसमधुस्तथा ॥ हिक्कांबहुविधांहन्यादिदंधन्वंतरेर्वचः ॥ ४१ ॥ इतिहिक्का ॥

भाषा—छोटी हरडैको पीसके चूर्ण करले फिर सहतसे चाटनेसे दोष नीचेको चला जाताहै इस हेतुसे छर्दि शीघ्र शमन हो जावे ॥ ३२ ॥ अन्यच्च । पलवल, नींबकी छाल, त्रिफला, गिलोय, इन करके किया क्वाथ सहत डालके पीनेसे अम्लपित्तसे पैदा होनेवाली छर्दिको शीघ्र हरता है ॥ ३३ ॥ अन्यच्च ।

पीपलवृक्षका वक्कल सूका लाके फिर जलाके पानीमें बुझावे वह पानी पीनेसे दुर्जय छर्दिको जीतताहै ॥ ३४ ॥ इति छर्दि-चिकित्सा ॥ धानकी खील, सुरमाशुद्ध, नागरमोथा इनका चूर्ण करके पानीमें भिगोदेवे फिर पानीको छानके सहत डालके बालकको प्यानेसे अत्यंत प्यासको, छर्दिको, अतिसारको हरैहै ॥ ३५ ॥ अन्यच्च । पीपल, मुलहटी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालककी प्यासको शमन करता है ॥ ३६ ॥ अन्यच्च । अनारदाना, सपेदजीरा, नागकेसर इनका चूर्ण करके बराबरकी मिसरी मिलाके सहतसे चाटनेसे बाल-ककी प्यासको हरता है ॥ ३७ ॥ अन्यच्च । हींग घीका भुना, सैंधानमक, पलासपापडा, इनका चूर्ण सहत मिलाके चाटनेसे बालकोंकी बढी हुई तृषाको निवारण करदेताहै ॥ ३८ ॥ इति तृषाचिकित्सा ॥ सोनागेरूको पीसके सहतसे चाटनेसे हिचकियोंसे पीडित हुये बालकको शीघ्र सुख हो जाताहै ॥ ॥ ३९ ॥ सूंठ, आंवला, पीपल, इनका चूर्ण हुचकियोंकी शांतिके वास्ते बालक सहतसे चाटे अथवा खाली मक्खीकी विष्ठाका चूर्ण, सहतसे चाटे ॥ ४० ॥ पीपल, रेणुकबीज, इनके काथमें हींग भुना और सहत डालके पीनेसे सब तरहकी हिचकी जाती रहतीहैं यह धन्वंतरिका वचनहै ॥ ४१ ॥

इति हिक्काचिकित्सा ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंनागरंमधुनालिहन् ॥ कासं पंचविधंश्वासंशिशुराशुविनाशयेत् ॥ ४२ ॥ विहि

तोमधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशय-
त्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातु-
गाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियलंकृष्णा
शृंगीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एकाशृंगीनिहंत्याशु
मूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेनमधुनालीढाकासंबा-
लस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडं-
गंमधुनालीढ्वापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीत-
थैकांवाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंवि-
डंगंमगधाखुकर्णींकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एत-
त्कृमीन्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेणलीढंशमयत्यवश्यम्
॥ ४७ ॥ यवक्षारंकृमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्ष-
येत्कृमिरोगघ्नंपक्तिशूलहरंपरम् ॥४८॥ इतिक्रिमि-
रोगः ॥ अयोरजस्त्रैफलचूर्णयुक्तंगोमूत्रसिद्धंमधुना
वलीढम् ॥ पांडुंसकासंसकृशानुमाद्यंशूलंसशोफंश
मयेदवश्यम्॥४९॥इतिपाण्डुरोगः ॥ पथ्याश्वगंधा
सवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चबलात्रयेण ॥ पुनर्नवैतत्क्ष
यरोगमुग्रंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥
शिलाजतुव्योषविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोव-
लेहः॥सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंविधत्तेसहसा
क्षयस्य ॥ ५१ ॥ नवनीतंसिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजः
पराम् ॥ करोतिपुष्टिंकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥
॥५२॥ वासामहौषधीव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम् ॥

प्रपीतंशमयत्युग्रंश्वासकासक्षयज्वरान् ॥ ५३ ॥

इतिक्षयरोगः ।

भाषा—पीपल छोटी, पीपला मूल, सूंठ, यह द्रव्य शहदसे बालक चाटके पांच रकमके कासको, श्वासको नष्ट करदेताहै ॥ ४२ ॥ अथवा कंटकारीके फूलोंकी केसर करके और शहदकरके सिद्ध किया अवलेह बालककी पांचप्रकारकी खांसीको नाश करदेता है ॥४३॥ वंशलोचन शहदसे चाटनेसे बालकके कास, श्वास, दूर होजातेहैं अथवा पीपल, काकडासींगी, मूलीके बीज यह द्रव्य शहदसहित चाटनेसे बालकके कास, श्वासको दूर करदेतेहैं ॥ ॥ ४४ ॥ अन्यच्च । केवल काकडासींगी मूलीके बीजों करके युक्त घृतसे व शहदसे चाटी हुई बालकके दुस्तर कासको नाश करतीहै ॥ ४५ ॥ इति कासश्वासचिकित्सा ॥ वायविडंग अथवा पोहकर मूल सहिंजनेका बक्कल अथवा एकली मूसाकन्नी यह तीन योग न्यारे न्यारे शहदसे चाटनेसे बालक क्रिमियोंसे मुक्तहोताहै ॥ ४६ ॥ अन्यच्च । नागरमोथा, वायविडंग, पीपल, मूसाकन्नी, कमेला, अनारका बक्कल इनका चूर्ण शहदसे चाटनेसे बालकके बढेहुए क्रिमियोंको अवश्य शमन करदेताहै ॥ ४७ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल यह द्रव्य शहदसे चाटनेसे क्रिमिरोगको नष्ट करे पक्तिशूलको शमन करे ॥ ॥ ४८ ॥ इति क्रिमिरोगचिकित्सा ॥ गोमूत्रसे सिद्ध किया लोहचूर्ण जिसको वैद्य मंडूर कहतेहैं, त्रिफलाकी बराबर शहदसे चाटनेसे बालकके पांडुको, कासको, श्वासको, मंदाग्निको,

शूलको, सोजाको अवश्य शमन करदेताहै ॥ ४९ ॥ इति पांडुरोगचिकित्सा ॥ हरडैकी छाल, आसगंध, शतावर, विदारीकंद, गोखरू, बला, अतिबला, नागबला, पुनर्नवा यह द्रव्य सब समानलेके शहदसे बालकको चटानेसे अवश्य क्षयरोगको नष्ट कर देताहै ॥ ॥ ५० ॥ शिलाजीत, सूंठ, मिरच, पीपल वायविडंग, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, हरडेकी छाल इन द्रव्योंका घृतसे शहदसे अवलेहकरके बालकको विधिपूर्वक सेवन करानेसे शीघ्र क्षयरोगका नाश होजाताहै ॥ ५१ ॥ अन्यच्च ॥ माखन, मिसरी, शहद यह द्रव्य बालकको चटानेसे बालकके शरीरको पुष्ट करतेहैं, क्षयरोगको दूर करतेहैं ॥ ५२ ॥ अन्योपायः ॥ वांसाके पत्ते, सोंठ, कंटकारीकी जड, गिलोय इन करके सिद्ध किया काथ पीनेसे बालकके श्वासको, कासको, क्षयरोगको, तथा ज्वरको शमन करदेताहै ॥ ५३ ॥

इति क्षयरोगचिकित्सा ।

मागधीमागधीमूलंनागरंमरिचान्वितम् ॥क्षौद्रेणलीढंसकफंस्वरभेदमपोहति ॥ ५४ ॥ यष्टयाह्वाजीवनोमूर्वाकाकोलीद्वयसाधितम् ॥ पयःपित्तोद्भवंहंतिस्वरभेदंसुदारुणम् ॥ ५५ ॥ इति स्वरभेदः ॥ जीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लंदाडिमान्वितम्॥चित्रकार्द्रकसंयुक्तमरुचिंहंतिदुष्कराम् ॥ ५६ ॥ द्वेपलेदाडिमादष्टौखंडाद्वोपपलत्रयम् ॥ त्रिसुगंधिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ ५७ ॥ दीपनंरोचनंपथ्यंपीनसं

ज्वरकासजित् ॥ विचार्य्यैवंतुमतिमानौषधंचप्रयो-
जयेत् ॥ ५८ ॥ इत्यरोचकम् ॥ कोलास्थिपद्मको
शीरंचंदनंनागकेसरम् ॥ लीढंक्षौद्रेणबालानांमूर्च्छा-
नाशनमुत्तमम् ॥ ५९ ॥ द्राक्षामामलकंस्विन्नंपिष्ट्वा
क्षौद्रेणसंयुतः ॥सर्वदोषभवांमूर्च्छांसज्वरांनाशयेद्ध्रु-
वम् ॥ ६० ॥ शीताःप्रदेहामणयःसहाराःसेकावगा-
हाव्यजनस्यवाताः ॥ लेह्यान्नपानादिसुगंधिशीतंमू-
र्च्छासुसर्वासुपरंप्रशस्तम् ॥ ६१ ॥ इति मूर्च्छा ॥

भाषा–पीपल, पीपलामूल, सूंठ, मिरच इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफसहित स्वरभेदको दूर करै है ॥ ५४ ॥ अन्यच्च ॥ मुलहटी, हरडै, मोरवेल, काकोली, क्षीरकाकोली इन करके सिद्ध किया दुग्ध पीनेसे पित्तके स्वरभेदको नष्ट करै है ॥ ५५ ॥ इति-स्वरभेदचिकित्सा ॥ जीरा सपेद, जीरा स्याह, इमली, अंबाडा, अनारदाना, चित्रक, सूंठ इनका चूर्ण दुर्वार अरुचिको नष्ट कर देता है ॥ ५६ ॥ अनारदाना ८ तोले, खांड ३२ तोले, सोंठ ४ तोले, मिरच ४ तोले पीपल ४ तोले, दालचीनी, इलायची, पतरज यह तीनों मिलके ४ तोले इस माफिक सब दवा लेके एक जगह चूर्ण करले ॥ ५७ ॥ यह चूर्ण जठराग्निको तेजकरता है रुचिको पैदा करता है पथ्य पीनसको, ज्वरको,तथा कासको जीतता है॥ऐसे मतिमान् वैद्य है विचारके औषधीकी योजना करे ॥ ५८ ॥ इत्यरोचकम् ॥ बेरके काकडाकी गिरी, पद्माख, खस, सफेद चन्दन, नागकेसर

यह द्रव्य सहतसे चाटनेसे बालकोंकी मूर्छाको नाश करै है ॥ ५९ ॥ अन्योयोगः । मुनक्का, आँवला स्विन्नकरा हुवा इनको पीसके सहतसे सेवन करनेसे त्रिदोपसे होनेवाली मूर्च्छाको ज्वरको नाशकरदेताहै ॥ ६० ॥ अन्यच्च ॥ शीतललेपनादिक, माणियोंके हार, शीतलसेक, शीतल अवगाहन, पंखाकी हवा और जो चाटनेकी वस्तु या खानेकी या पीनेकी या सुगंध लगानेके वास्ते यह सब शीतल मूर्च्छामें श्रेष्ठहैं अर्थात् सर्व वस्तु ठंढी होनी चाहियें ॥ ६१ ॥ इति मूर्च्छाचिकित्सा ॥

पद्मकंचंदनंतोयमुशीरंश्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ क्षीरेणपीतंबालानांदाहंनाशयविध्रुवम् ॥ ६२ ॥ कर्पूरचंदनोशीरलिप्तांगंकदलीदलैः ॥ प्रशस्तेसंस्तरेधीमान्स्वापयेद्दाहपीडितम् ॥ ६३ ॥ परिपेकावगाहादिव्यंजनानांचसेवनम् ॥ शस्यतेशिशिरंतोयंतृपादाहोपशांतये ॥ ६४ ॥ इतिदाहः ॥ शिरीपनक्तमालानांबीजैरंजितलोचनः ॥ चेतोविकारंहंत्याशुसापस्मारापतंत्रिकम् ॥ ६५ ॥ सिद्धार्थकवचाहिंगुशिवनिर्माल्यगंधकैः ॥ निर्मोकपिच्छलवणैर्नृकेशैःकुष्ठसंयुतैः ॥ ६६ ॥ गृहसूकरमार्जारविष्ठारिष्टकपत्रकैः ॥ एतैर्घृतप्लुतैर्धूपःसर्वोन्मादग्रहापहः ॥ ६७ ॥ इत्युन्मादः ॥ कूष्मांडकरसंदत्वामधुकंपरिपेषयेत् ॥ अपस्मारविनाशायतत्पिबेत्सप्तवासरान् ॥ ६८ ॥ गोसर्पिः

साधितंमूत्रदधिक्षीरशकृद्रसैः ॥ चातुर्थिकज्वरो-न्मादसर्वापस्मारनाशनम् ॥ ६१ ॥ इत्यपस्मारः ॥

भाषा—पद्मकाठ, सपेदचंदन बुरादा, नेत्रबाला, खस इन द्रव्योंका बारीक चूर्ण करके दूधके संग पीनेसे बालकोंके दाहको निश्चय नाश करदेताहै ॥ ६२ ॥ अन्योयोगः ॥ कपूर, मलयागिर सफेदचंदन, खस इनको खूब बारीक पीसके दाहपीडित बालकके अंगको लेपन करके केलाके पत्तोंका बिस्तर बनवाके उसपर बालकको वैद्य शयन करावे ॥ ६३ ॥ शीतल जलसे परिषेक करना और शीतल जलका अवगाहन वीजनेकी वायुका सेवन शीतल जलपान इनका सेवन तृषाकी दाहकी शांतिके वास्ते बहुत उत्तमहै ॥ ६४ ॥ इति दाहचि-कित्सा ॥ सिरसके बीज, करंजुवाके बीज इनको पानीमें पीसके बालकके नेत्रमें आंजनेसे चित्तविकार जिसको उन्माद बोलतेहैं. और अपस्मारको अपतंत्रिकाको शीघ्र नाश करेहै ॥ ६५ ॥ धूपमाह—राई, वच, हींग, आकके फूल, गंधक आँवलासार, सांपकी कांचली, मोरकी पांख, नमक, मनुष्यके माथाके बाल, कूट ॥ ६६ ॥ सूकरकी विष्ठा, बिलावकी विष्ठा, नींबके पत्ते इन सब द्रव्योंको थोडा कूटके धूप घी मिलाके बालकको देनेसे सब तरहके उन्मादोंका और बालग्रहोंका शमन होजाताहै ॥ ६७ ॥ इत्युन्माद-चिकित्सा ॥ पुराना पेठाका रस देके मुलहटीको पीसे फिर पेठा-के रसमेंही छानके मृगीके नाश करनेकेवास्ते बालक ७ सात दिन पीवे ॥ ६८ ॥ अन्योयोगः ॥ गौका मूत्र, दही, दूध, और गोबरका

रस इन करके सिद्धकिया गौका घृत बालकको सेवन करनेसे चातुर्थिक ज्वरको, उन्मादको, मृगीको नाश करैहै ॥ ६९ ॥

इत्यपस्मारचिकित्सा।

पुनर्नवैरंडयवातसीभिःकार्पासजैरास्थिभिरारनालैः॥ स्विन्नैरसीभिस्त्रिभिः पङ्क्रिवस्वेदःसमीरार्तिहरोनराणाम् ॥ ७० ॥ इति वातव्याधिः ॥ वासायाः स्वरसःपीतःसितामधुसमन्वितः ॥ तथावटप्ररोहाणांरक्तपित्तंविनाशयेत् ॥ ७१ ॥ पालाशपुष्पकाथेनवासायाःस्वरसेनच ॥ चतुर्गुणेनसंसिद्धंरक्तपित्तहरंघृतम् ॥ ७२ ॥ रसोदाडिमपुष्पाणांदूर्वायाःस्वरसोऽथवा ॥ नस्येननाशयत्तूर्णंनासिकारक्तमुद्भृतम् ॥ ७३ ॥ इति रक्तपित्तरोगः ॥ हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैःकृत्वावर्तिंसुवर्तिताम् ॥ घृताभ्यक्तांगुदेदद्यादुदावर्तविनाशनीम् ॥ ७४ ॥ इत्युदावर्तः ॥ त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरकेद्वेसमधरणघृतानाक्षप्टमोहिंगुभागः ॥ प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मंनिहंति ॥ ॥ ७५ ॥ इति वातगुल्महरंहिंग्वष्टकम् ॥ शुंठीकणापुष्करकेतकीनांविधायचूर्णंककुभस्त्वचोवा ॥ रास्नान्वितंवामधुनावलीढंहृद्रोगमेतच्छमयत्युदग्रम् ॥ ७६ ॥ इति हृद्रोगः ॥

भाषा–सांठीकी जड, अरंडकी अरंडोली, जौ अन्न, अलसी,

कपासके विनोले यह सब द्रव्य कांजीजलमें स्विन्न करके बालकके जहांपर वातव्याधिहो उस अंगको प्रथम स्वेदित करे सेकेपीछे उस स्थानपर बांधदे ऐसे तीन रोज छह रोज करनेसे बालककी वातपीडा सर्व नष्ट होजावे ॥ ७० ॥ इति वातव्याधिचिकित्सा ॥ बाँसेके पत्तोंका स्वरस निकालके उसमें मिसरी सहत डालके पीनेसे रक्तपित्तको नाश करैहै इसी तरह वटवृक्षकी डाढीका स्वरस, मिसरी, सहतसहित रक्तपित्तको नाश करदेताहै ॥ ७१ ॥ पालाशवृक्षके फूलोंका काथकरके या वांसाके पत्तोंका स्वरस करके चतुर्थांश घृत सिद्धकरके सेवन करनेसे रक्तपित्तको हरताहै ॥ ७२ ॥ अन्यच्च अनारके फूलोंका रस अथवा दूर्वाका स्वरस नासिकासे सूंघनेसे नासिकासे गिरता हुवा रक्त बंद हो जाताहै ॥ ७३ ॥ इति रक्तपित्तचिकित्सा ॥ हींग, सहत, सैंधानमक, इन द्रव्योंकरके द्रढवर्ती कपडाकी या सूतकी बनाके सुखाके फिर उसको घृत लगाके बालककी गुदामें देनेसे उदावर्तरोग अर्थात् आनाह, कोठवात यह सब नाश हो जातेहैं ॥ ७४ ॥ इत्युदावर्तचिकित्सा ॥ सूंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, सैंधानमक, सुफेदजीरा, स्याहजीरा, यह द्रव्य सर्व समानले और हींग आठवाँ भाग लेना चाहिये यह हिंग्वष्टक चूर्णहै इसको घृतमें मरकोके भोजनसे पहिले एक ग्रास चूर्णका खाके फिर भोजन करनेसे जठराग्निको तेज करैहै ॥ वायुगोलाको नाश करैहै ॥ ७५ ॥ इति वातगुल्मचिकित्सा ॥ सूंठ, पीपल, पोकरमूल, केतकीकी जड इन

द्रव्योंका चूर्ण अथवा अर्जुनवृक्षकी छाल रासना इनका चूर्ण सहतसे चाटा हुवा उग्र हृद्रोगको शमन करताहै ॥ ७६ ॥

इति हृद्रोगचिकित्सा ॥

मेघामृतानागरवाजिगंधाधात्रीत्रिकंटैर्विहितःकषायः॥ क्षौद्रेणपीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्रंपवनप्रसूतम्॥ ॥ ७७ ॥ कुशेक्षुकाशाःशरदर्भयुक्ताःप्रक्षुण्णमेतत्तृणपंचमूलम् ॥ निष्काथ्यपीतंमधुनाविमिश्रंकृच्छ्रंसदाहंसरुजंनिहन्ति ॥ ७८ ॥ यवक्षारयुतःक्काथः स्वादुकंटकसंभवः॥पीतःप्रणाशयत्याशु मूत्रकृच्छ्रंकफोद्भवम् ॥७९॥ श्वद्रंष्ट्राविहितःकाथःशिलाजतुसमन्वितः॥सर्वदोषोद्भवंहंतिकृच्छ्रंनास्त्यत्रसंशयः॥ ॥८०॥कषायोतिबलामूलत्रपुसीबीजसाधितः॥शिलाजतुयुतःपीतोमूत्रकृच्छ्रंविनाशयेत् ॥८१॥ इति मूत्रकृच्छ्ररोगः ॥ पीतश्चादाडिमतोयेनविश्वैलाबीजजंरसम् ॥ मूत्राघातात्प्रमुच्येतवरांबालवणान्विताम्॥८२॥कर्पूरवर्तिंमृदुनालिंगच्छिद्रेनिधापयेत्॥ शीघ्रतयामहाघोरान्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते ॥ ८३ ॥ क्वाथैःकिंशुकपुष्पाणांसेकस्तैरेवनिर्मितः ॥ उपनाहोथवाहंतिमूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम् ॥ ८४ ॥ इति मूत्राघातः॥ एरंडतैलंसपयःपिबेद्योगव्येनमूत्रेणतदेववापि ॥ सगुग्गुलुप्रौढरुजंप्रवृद्धांसर्वांत्रवृद्धिंसहसानिहंति ॥ ८५ ॥ इत्यंत्रवृद्धिः ॥

भाषा—नागरमोथा,गिलोय, सूंठ,असगन्ध,आँवला, गोखरू इन द्रव्योंकरके सिद्धकिया काथमें सहत डालकर पीनेसे वायुसे होनेवाला मूत्रकृच्छ्र अवश्य शमन होजाताहै॥ ७७॥ कुशाकी जड, ऊंख की जड, कांसकी जड, नरसलकी जड, मूंजकी जड, यह तृण-पंच मूल है इनको लेके कूटके क्काथ बनाके सहत डालके पीनेसे दाह, पीडा युक्त मूत्रकृच्छ्र नष्ट करताहै॥ ७८॥ अन्यच्च ॥ गोखरू विलायतीके क्काथमें जवाखार डालकर पीनेसे कफसे होनेवाला मूत्रकृच्छ्रको शीघ्र नाश कर देता है ॥ ७९ ॥ विलायती गोखरू करके सिद्ध किया क्काथमें शिलाजीत डालके पीनेसे त्रिदोषसे पैदा होनेवाला मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करदेता है इसमें सन्देहनहीं ॥ ८० ॥ अन्यो योगः॥ गंगेरनकी जड,ककडीके बीज इनकरके सिद्ध किया क्काथ शिलाजीत सहित पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाश करताहै॥ ८१॥ इति मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा॥ सूंठ, छोटी इलायचीकी जड इनको पीसके अनारके दानोंके जलमें छानके पीनेसे मूत्राघातसे बालक मुक्त होजाता है ॥ अथवा त्रिफला, नमक दोनोंकी फंकी लेके ऊपरसे अनारदानाका अर्क पीनेसे मूत्राघातसे मुक्त होजाता है ॥ ८२ ॥ कपूरको जलमें पीसके बारीक कोमल कपडा उसमें भिगोके वत्ती बनाके लिंगच्छिद्रमें देनेसे बहुत जलदी मूत्रका बंधासे बालक मुक्त होजाता है ॥ ८३ ॥ अन्यच्च ॥ केशूके फूलोंका क्काथ करके सेक करनेसे अथवा वही बस्तिदेशके ऊपर बांधनेसे अति दुःखका देनेवाला मूत्रकृच्छ्र नष्ट होजाता है ८४॥ इति मूत्राघातचिकित्सा ॥ एरंडके तेलको दूधमें डालके पीनेसे

अथवा गोमूत्रमें एरंडका तैल घालके गूगल डालके पीनेसे तकली-फयुक्त बढ़ी हुई अंत्रवृद्धिको शीघ्र नाश करदेता है ॥ ८५ ॥ इत्यंत्रवृद्धिचिकित्सा ॥

वनकार्पासिकामूलंतंडुलैःसहयोजितम्॥पक्त्वापूपा लिकांखादेदपचीनाशकारिणीम् ॥८६ ॥ इतिगंड-माला॥ कांचनारत्वचःक्काथस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः॥ निर्गत्यांतःप्रविष्टांतुमसूरींवाह्यतोनयेत् ॥ ८७ ॥ गर्द्दभीदुग्धपानेनतुलसीपत्रभक्षणात् ॥ मसूरीवहि रन्वेतितत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥ ८८ ॥ भस्मनाकेचि-दिच्छंतिकेचिद्रोमयरेणुना॥कृमिपातभयाच्चापिधूप-येत्सुरसादिभिः ॥ ८९ ॥ वेदनादाहशांत्यर्थंशिशू नांचविशुद्धये ॥ मौक्तिकंकाच्छपंपृष्ठंप्रवालंप्रपिवे न्नरः ॥ ९० ॥ वृषंकुसुमतोयेनक्षुद्रशीतलिकांजये-त्॥स्तोत्रमेतत्सदापाठ्यंरोगिणोऽग्रेमुहुर्मुहुः ॥९१॥

भाषा—वनमें होनेवाली कार्पासकी जड लाके कूट पीसके चाव-लोंके आटेमें मिलाके घृतमें पूडी बनाके खानेसे अपची अर्था-त् परिपक्व गंडमाला नष्ट होजातीहै ॥ ८६ ॥ इति गंडमाला चिकित्सा ॥ कचनारवृक्षकी छालका काथकरके छानके उसके ऊपर सुवर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती बुरकाके बालकको प्यानेसे भीतर बडी हुई शीतला बाहर निकलआतीहै ॥ ८७ ॥ अन्योयोगः ॥ गर्दभीका दूध पीनेसे अथवा तुलसीके पत्र खानेसे बालकके भीतर बडीहुई शीतला बाहर निकल आवती

है ॥ ८८ ॥ शीतलाके व्रणोंमें क्रिमि पडनेके भयसे कोई वैद्यों-
का मतहै वनोत्पलकी भस्मसे व्रणोंको अवधूलित करदेवे ॥ और
कोई वैद्योंका यह मत है भस्म करनेमें क्षार उत्पन्न हो जाताहै इस
वास्ते हितकारी नहींहै खाली वनोत्पलको पीसके बारीक कपडासे
छानकें वह सूक्ष्म रज व्रणोंके लगादेवे ॥ और तुलसीके पत्रोंकी
धूप देनी चाहिये ॥ ८९ ॥ मसूरिकावाला बालककी पीडाकी
शांतिके अर्थ बालकोंकी शुद्धिके वास्ते मोती अथवा मोती
की सींप कछुवाकी खोपडी मूंगा इनको जलसे पीसके बालक-
को प्यावे ॥ ९० ॥ उक्त द्रव्य लवंगके जलमें घसके बालको
प्याके क्षुद्रशीतलाको जीते और शीतलावाला बालकके अगाडी
शीतलाष्टक स्तोत्र वारंवार पढे ॥ ९१ ॥ इससे अगाडी शीत-
लास्तोत्र लिखतेहैं यह केवल पाठ करनेके योग्यहै इसकी
भाषा नहीं होनीं चाहिये इसवास्ते नहीं करी ॥

अथशीतलास्तोत्रं लिख्यते॥ॐनमःशीतलायै॥स्कं-
दउवाच ॥ भगवन्देवदेवेशशीतलायाःस्तवंशुभम्॥
वक्तुमर्हस्यशेषेणविस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥
ईश्वरउवाच॥वंदेऽहंशीतलांदेवींसर्वरोगभयापहाम्॥
यामासाद्यनिवर्ततेविस्फोटकभयंमहत् ॥ २ ॥
शीतलेशीतलेचेतियोब्रूयादाहपीडितः ॥ विस्फोट
कभयंघोरंक्षिप्रंतस्यविनश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वामुद
कमध्येतुधृत्वापूजयतेनरः ॥ विस्फोटकभयंघोरंभ-
यंतस्यनजायते ॥ ४ ॥ शीतलेतनुजान्रोगान्नृणां

हरसिद्धुस्तरान् ॥ विस्फोटकविशीर्णानांत्वमेकाऽमृ-
तवर्षिणी॥५॥गलगंडग्रहारोगायेचान्येदारुणानृणा-
म्॥त्वदनुध्यानमात्रेणशीतलेयांतिसंक्षयम् ॥ ६ ॥
नमंत्रंनौषधंकिंचित्पापरोगस्यविद्यते ॥त्वमेकाशी-
तलेत्रातानान्यांपश्यामिदेवताम् ॥७॥ मृणालतंतु-
सदृशींनाभिहृत्पद्मसंस्थिताम् ॥ यस्त्वांसंचिंतये-
द्देवितस्यमृत्युर्नजायते ॥ ८ ॥ अष्टकंशीतलादेव्या
यःपठन्मानवःसदा ॥ विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्य
नजायते ॥९॥ श्रोतव्यंपठितव्यंचश्रद्धाभक्तिसम-
न्वितैः॥उपसर्गविनाशायपरंस्वस्त्ययनंमहत् ॥१०
शीतलाष्टकमेवेदंनदेयंयस्यकस्यचित् ॥ दातव्यं
हिसदातस्मैभक्तिश्रद्धान्वितश्चयः ॥११॥ १०२ ॥
इतिस्कंदपुराणेशीतलाष्टकम् ॥ शीतलेनजलेनैव
चिंचयाचसमन्विताम् ॥हरिद्रांयःपिबेत्पिष्यनदोषः
शीतलाभवः॥ १०३ ॥ शीतलाशुक्रियाकार्य्या
शीतलारक्षयासह॥बध्नीयान्निम्बपत्राणिपरितोभवना-
न्तरे॥१०४॥चंदनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह॥
एषांशीतकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः ॥ १०५ ॥
कदाचिदपिनोकार्य्यमुच्छिष्टस्यप्रवेशनम् ॥स्फो-
टेष्वधिकदाहेषुरक्षारेणूत्करोहितः ॥ १०६ ॥
इतिशीतलारोगः ॥ इतिश्रीकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रेशीतला-
चिकित्साकथनंनामत्रयोदशःपटलः ॥ १३ ॥

भाषा–शीतल जलसे हलदी और इमलीका बीज इनको पीसके बालकको प्यानेसे शीतला करके किया विकार नहींहो ॥ १०३ ॥ शीतलामें रक्षापूर्वक ठंढी क्रियाकरे मकानके चारों तरफ नींमकी डाली बांध देनी चाहिये ॥ १०४ ॥ लालचंदन, बांसके पत्ते, नागरमोथा, गिलोय, मुनक्का इन द्रव्योंका क्वाथ करके फिर शीतलकरके बालकको प्यानेसे शीतलासे होनेवाला ज्वर नाश होताहै ॥ १०५ ॥ जिस स्थानमें शीतलावाला बालकहो उस स्थानमें उच्छिष्ट पुरुषका या नारीका प्रवेश नहीं होने दे और अपवित्रकाभी प्रवेश नहींहोने दे ॥ जाजती दाहवाले फोडे हों, तब व्रणविधानपूर्वक रक्षा व्रणीकी रखनी चाहिये और वनोत्पलकी रज या भस्म फोडोंके लगानी चाहिये ॥ १०६ ॥ इति शीतलारोगचिकित्सा ॥

इति श्रीपंडितनन्दकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां त्रयोदशःपटलः १३

मनःशिलाचंदनलोध्रपथ्यारसांजनैर्मुस्तनिशामयाक्षैः ॥ सगैरिकाद्यैर्विहितःप्रलेपोबाहिःप्रसन्नेनयनेकरोति ॥ १ ॥ ससैंधवंलोध्रमथाज्यभृष्टंसौवीरपिष्टंसितवस्त्रबद्धम् ॥ आश्चोतनंतन्नयनस्यकुर्य्यात्कंडूंचदाहंचरुजंचहन्यात् ॥ २ ॥ चंदनंमधुकंलोध्रंजातिपुष्पाणिगैरिकम् ॥ प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः ॥ ३ ॥ शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्द्धांचमनःशिला ॥ मनःशिलार्द्धंमरिचंमरिचा-

द्राक्षापिप्पली ॥ ४ ॥ वारिणातिमिरंहंतिह्यर्बुदं हंतिमस्तुना ॥ चिपिटंमधुनाहंतिस्त्रीक्षीरेणतदुन्नतम् ॥ ५ ॥ धत्तूरफलकर्पूरेनिघृष्यमधुनांजयेत् ॥ नेत्ररोगाःप्रणश्यंतेसिंहत्रस्तामृगाइव ॥६॥ इति नेत्ररोगः॥हिंगुव्योषविडंगकट्फलवचारुक्तीक्ष्णगंधायुतैर्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाकुटजकैः पुष्पोद्भवैःसौरसैः ॥ इत्येभिःकटुतैलमेतदनलेमंदेसमूत्रंशृतंपीतंनासिकयायथाविधिभवेन्नासामयेभ्योहितः ॥ ७ ॥ इति नासारोगः ॥ कंपिल्लमातुलुंगाम्लशृंगवेररसैःशुभैः॥ सुखोष्णैःपूरयेत्कर्णंकर्णशूलोपशांतये ॥ ८ ॥ अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतंतैलेनलिप्तंशिखिनाचतप्तम् ॥ आपीड्यतोयंश्रवणेनिषिक्तंनिहंतिशूलंबहुवेदनांच॥ ॥ ९ ॥ वृष्टंरसांजनंनार्याःक्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रशस्यतेशिरारोगेसस्रावेपूतिकर्णिके ॥ १० ॥

इति कर्णरोगः ॥

भाषा—मनशिल, लालचंदन, लोध, हरडै, रसोत, नागरमोथा, हलदी, कूट, वहेडा, गेरू इन द्रव्योंको कूट कपडासे छानके जलमें पीसके नेत्रोंके वाहिर लेप करनेसे नेत्र निर्मलहो जातेहैं ॥ ॥ १ ॥ अन्योयोगः ॥ सेंधानमक घीका भुना लोध दोनोंको कांजीजलसे पीसके गोलीवनाके सपेद वस्त्रमें वांधके पोटली वनाले फिर कांजी जलमें डुवोडुवोके नेत्रमें आश्चोतन करनेसे नेत्रकंडूको, नेत्रदाहको, नेत्रपीडाको, नष्ट करदेतीहै ॥ २ ॥

अन्यच्च ॥ लालचंदन, मुलहटी, लोध, चमेलीके फूल, गेरू, इन द्रव्योंको पीसके नेत्रके लेप करनेसे नेत्रदाहको नष्ट करे और जलका पडनाको नेत्र दूखनेको नष्ट करैहै ॥ ३ ॥ अन्योयोगः ॥ शंखकी नाभके ४ भाग मनशिलके २ भाग मिरच १ भाग पीपल आधा भाग ॥ ४ ॥ यह द्रव्य जलमें पीसके नेत्रमें घालनेसे धुंधको नष्ट करैहै ॥ दधि जलमें पीसके घालनेसे अर्बुदको नष्ट करैहै ॥ शहदमें पीसके घालनेसे चिपिटपनाको नाश करे । स्त्रीके दूधमें पीसके घालनेसे नेत्रमें मांस फूलताहै वह शांतहो जावे ॥ ५ ॥ धतूराके बीज, कपूर इनको खूब बारीक सहतमें घिसके नेत्रमें घालनेसे सर्व नेत्ररोग नाश हो जातेहैं जैसे सिंहके भयसे मृग नष्ट हो जातेहैं ऐसे ॥ ६ ॥ इति नेत्ररोगचिकित्सा ॥ हींग, सूंठ, मिरच, पीपल, वायविडङ्ग कायफल, बच, कूट, नकछीकनी, लाख, सपेद सांठीकी जड, कूडाकी छाल, लोंग, इनका क्काथ करके और कल्क करके गोमूत्रसहित मंदाग्निसे कटु तैलको पकावे फिर विधिपूर्वक नासिकासे पीनेसे नासिकाके कुलरोगोंको शमन करदेताहै ॥ ७ ॥ इति नासारोगचिकित्सा ॥ कमेला, बिजौरा, नींबूका अर्क अदरखका अर्क यह सब द्रव्य मिलाके गरम करके कानमें घालनेसे कर्णशूल शांत होजाताहै ॥ ८ ॥ अन्यच्च ॥ आकका पीला पत्ताके तैल चुपडके अग्निमें तप्तकरके कानमें निचोडनेसे कर्णशूल और कर्णकी सर्व पीडा नष्ट हो जाती है ॥ ९ ॥ अन्यच्च ॥ स्त्रीके दुग्धमें रसोतको घिसके फिर शहद मिलाके

कर्णमें घालनेसे कानका वहनाको कानकी बदबूको और कर्ण-
शूलसे शिरमें शूलहो इन सबको शमन करताहै ॥ १० ॥

गुडेनशुंठीसहसैंधवेनकृष्णाऽथवाकेवलमच्छमंभः॥
पयोघृतंवाविनिहंतिशीघ्रंशिरोविरेकेणशिरोविका-
रान्॥ ११ ॥ इति शिरोरोगः ॥ मंदोष्णंधा-
रयेच्छुद्धंहिंगुदन्तान्तरेस्थितम् ॥ तेनप्रणाशय-
त्याशुकृमिदंशोमहागदः॥ १२ ॥ ओष्ठप्रकोपेसं-
जातेरक्तमोक्षंचकारयेत् ॥ त्रिफलाखदिरक्वाथैर्धा-
वनंलेपनंतथा ॥ १३ ॥ जातिपत्रामृताद्राक्षा
पाठादार्वीफलत्रिकैः ॥ क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडू-
षान्मुखपाकजित् ॥ १४ ॥ पंचवल्ककपायोवा
त्रिफलाक्वाथएववा॥सक्षौद्रःशमयत्याशुगंडूपैःपाक-
मास्यजम् ॥ १५ ॥ पटोलनिंवजंव्वाम्रमालती-
नवपल्लवैः॥पंचवल्कलजःक्वाथोगंडूषैर्मुखपाकजित्॥
॥ १६ ॥ दार्वीगुडूचीसुमनःप्रवालद्राक्षायवास-
त्रिफलाकपायः ॥ क्षौद्रेणयुक्तःकवलग्रहोयंमुख-
स्यपाकंशमयत्युदीर्णम्॥ १७ ॥ इतिमुखरोग-
चिकित्सा ॥ वंध्याकर्कोटकीमूलंतंडुलीयकसंयुत-
म् ॥ अगदोयंमहावीर्यःपीतःसर्वविषापहः ॥ १८ ॥
वलाशिफांवाणपुंखाशिखांवासवरुणीयु॥लीढ्वाघृ-
तेनसर्वाणिविषाणिक्षपयेन्नरः॥ १९ ॥ इति सर्पादि
विषम् ॥ शिखिकुक्कुटवर्हाणिसैंधवंतैलसार्षपम्॥धू-

पोहन्तिप्रयुक्तोयंकीटवृश्चिकजंविषम् ॥२०॥ पला-
शबीजंरविदुग्धपिष्टंवृतेनपिष्टासशिरीषबीजा॥कृष्णा
थवाहंतिकृतोग्रपीडांविषंप्रलेपाद्धुविवृश्चिकस्य ॥२१॥

भाषा–अन्यच्च॥गुडसे सोंठका गोली बनाके खानेसे शिरो रो-
गोंको नष्ट करै है अथवा सैंधानमक, पीपल इनका सेवन करनेसे
या केवल निर्मलजल प्रातःकाल नासिकाद्वारा सेवन करनेसे अथवा
दुग्ध, घृत, प्रातःकाल सेवन करनेसे या शिरो विरेचन करनेसे
शिरके सर्व विकार नष्ट होजाते हैं॥ ११ ॥इति शिरो रोग चिकि-
त्सा ॥ हींगको अग्निद्वारा कदुष्ण करके दंतमें रखनेसे शीघ्र
कृमिदंश रोग नष्ट होजाताहै ॥ १२ ॥ ओष्ठप्रकोपरोग होनेसे
ओठोंका खून निकलवावे और त्रिफला, खैरका वक्कल, इनका
काथ करके ओठोंको धोना और झारना चाहिये इ हींको पीसके
लेप करना चाहिये ॥ १३ ॥ अन्यच्च ॥ जावित्री, पतरज
गिलोय, मुनक्का, कश्मीरीपट्टा, दारुहलदी, हरडे, बहेडा, आंवला
इन द्रव्योंका काथ करे फिर ठंडा होनेसे सहत डालके कुल्लीक,
रनेसे मुखका पाक साफ होजावे ॥ १४ ॥ पंचवक्कलका काथ
या त्रिफलाका काथ सहतसहित कुल्ले करनेसे मुख पापको शीघ्र
शमन करै है ॥ आम्रका वक्कल, पीपलका वक्कल, वटका वक्कल,
पिलखनका वक्कल, गूलरका वक्कल इन पांच वृक्षोंके वक्कलोंको
पंच वल्कल कहते हैं ॥ १५ ॥ पलवलके पत्ते, नींबके पत्ते,
जामुनके पत्ते, आम्रके पत्ते, चमेलीके पत्ते, इनका काथ करके
या पंच वल्कल करके सहित इनका काथ करके कुल्ले करनेसे

मुखपाक शमन होजाता है ॥ १६ ॥ अन्यच्च ॥ दारुहलदी, गिलोय, सुमननामक पुष्पवृक्षविशेष होताहै उसके पत्ते लेने चाहिये अगर न मिलें तो चमेलीके पत्ते लेवे, मुनक्का, जवासा, हरडे, बहेडा, आंवला, इनका क्वाथ करके सहत डालके कुल्हे करनेसे मुख-पाक शमन होजाताहै ॥ १७ ॥ ॥ इति मुखरोगचिकित्सा ॥ बांझककोडाकी जड, चौलाईकी जड, इनको पानीमें पीसके पीनेसे सब तरहके विषको नाश करैहै. यह विषके नाश करनेके वास्ते बडा पराक्रमी अगद संज्ञक योगहै ॥ १८ ॥ अन्यच्च ॥ खरेंटीकी जड, शरपुंखाकी जड, इनको पीसके घृतसे चाटनेसे संपूर्ण विष नाश होजातेहैं ॥ १९ ॥ इतिसर्पादिविषचिकित्सा ॥ मोरकी पंख, मुरगाकी पंख सैंधानमक, तेल, सिरसम, इन्होंको कूटके धूप देनेसे कीडाका वृश्चिकका विष नष्ट होजाताहै ॥ २० ॥ पलाशपापडाको आकके दूधमें पीसके लेप करनेसे, अथवा सिरसके बीज, पीपलछोटी, इनको घृतमें पीसके लेप करनेसे वृश्चिकका विष करके होनेवाली उग्र पीडा नष्ट होजातीहै ॥ २१ ॥

अजांघ्रिकल्कःसहसैंधवेनमध्वाज्यमिश्रोविहितःकदु-ष्णः ॥ दंशेप्रलिप्तोदहनेनतुल्यांपीडांक्षणात्कृंतति वृश्चिकस्य ॥ २२ ॥ इतिवृश्चिकविषस्य ॥ कर्षोन्मितंहाटकत्राणपुंखामूलंपिबेत्तंडुलतोयमिश्रम् ॥ शिफामथैकांकनकस्ययुक्तांदुग्धेननाशायशुनांविषस्य ॥ २३ ॥ इतिश्वविषचिकित्सा ॥ असित तिलसमैतैर्भृङ्गराजस्यपत्रैःप्रतिदिनमपियुक्तैःस्या-

न्नरःकामरूपः ॥अमृतफलसिताद्यैश्चूर्णितैस्तैर्द्विमा
सात्प्रहतगदसमूहःकृष्णकेशश्चिरायुः ॥ २४ ॥
पीताश्वगंधापयसार्द्धमासंघृतेनतैलेनसुखाम्बुनावा॥
कृशस्यपुष्टिंवपुषोविधत्तेबालस्यसस्यस्ययथाम्बु-
वृष्टिः॥२५॥इतिरसायनभेषजम् ॥ ग्रंथान्विलोक्य
प्रचुरप्रयोगान्पद्यैःस्वकीयैःकतिचित्तदीयैः ॥ प्रो-
क्ताश्चिकित्सारुचिराःशिशूनांतादेशकालादिसमी-
क्ष्यकुर्यात् ॥ २६ ॥ अहिक्षत्रान्वयेजातःपंडितैक-
शिरोमणिः ॥ रामचंद्रार्चनरतोरामदासःसतांप्रियः
॥ २७ ॥ विद्वज्जनाह्लादकरोमनस्वीमहीधरःसर्व-
जनाभिवंद्यः ॥ लक्ष्मीनृसिंहांघ्रिसरोजभृंगस्तदात्म-
जोभूद्विदितागमार्थः ॥२८॥ कल्याणइत्युद्गतनाम-
धेयस्तदात्मजोग्रंथवरान्विलोक्य ॥ परोपकारायव
बंधतंत्रंसतांसमालोकनयोग्यमेतत् ॥ २९ ॥ शुभ
वद्रसाकाशमितवर्षेनभेरवौ ॥ पूर्णिमायांचकारेदं
लिलेखचशिवालये ॥ ३० ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे नानाप्रयो-

गकथन नामचतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

समाप्तोयं ग्रंथः ॥ शुभमस्तु ॥

भाषा—बकरीका खुर, सैंधानमक इनको पीसके सहत, घृत
मिलाके किंचित् गरम करके जहां पै बीछूने काटाहो वहांपै लेप
करनेसे अग्निकी माफिक पीडाको एक क्षणमें नष्ट करदेताहै॥ २२॥

इति वृश्चिकविषचिकित्सा ॥ कचनारकी जड, झोझारूकी जड, दोनों एक तोला लेके चावलोंके पानीके साथ, बावले कुत्तेका विषनाश करनेके वास्ते पीना चाहिये अथवा केवल अकेली कचनारकी जड दुग्धसे पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट होजाताहै॥ २३ ॥ इति श्वविषचिकित्सा ॥ काले तिल, और जलभंगराके पत्ते, इनका नित्य सेवन करनेसे अथवा अमरफल मिसरी इनका दो मास सेवन करनेसे सर्व रोगोंके समूह नष्ट होजातेहैं काले बालहो जाते हैं आयु निरोग होतीहै कामदेवकी माफिक रूपवान् मनुष्य हो जाता है ॥ २४ ॥ अन्योयोगः ॥ पंद्रह १५ रोज-तक आसगंधन गोकी दूधके संग या जलसे पीनेसे कृश बालकके शरीरकी पुष्टिकरहै जैसे सस्यकी पुष्टिको जलवृष्टि करतीहै ऐसे ॥ २५ ॥ इति रसायनभेषजम् ॥ कल्याणवैद्य कहतेहैं आत्रेयादिक बहुतसे तंत्रोंको देखके और बहुतसे सिद्ध प्रयोगों-को देखके अपने रचे पद्यों करके और कितनेक तंत्रोंके पद्योंकरके बालकोंकी सुंदर चिकित्सा कहीहै इनको वैद्यवर देशकालादि-कोंको देखके करे ॥ २६ ॥ अब कल्याणवैद्य अपना उद्भव-को कहतेहैं अहिक्षत्र वंशमें होनेवाले पंडितोंमें शिरोमणि श्री रामचंद्रजीके पूजनमें रत संतोंके प्यारे ऐसे रामदास नामक वैद्य होते भये उन्होंके पुत्र विद्वानोंके मनको आनंद करनेवाले समर्थ सवजनोंकरके वंदित लक्ष्मीनृसिंहके चरणकमलमें भ्रमर-रूप ऐसे महीधर नामक वैद्य होते भए उन्होंके पुत्र जानाहै वेदोंका अर्थ जिसने ऐसा वह कल्याणनामक वैद्य होता भया कि जो कल्याण वैद्य बहुत श्रेष्ठ श्रेष्ठ ग्रंथोंको देखके और जनों

के उपकारके वास्ते श्रेष्ठ जनोंके देखनेलायक इस तंत्रको रचता भया ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ कब यह ग्रंथ बनायाहै इस अपेक्षासें संवत् मास तिथि कल्याण वैद्य लिखताहै ॥ संवत् १४४ में श्रावणशुक्ल १५ पूर्णिमा रविवार शिवालयमें इसग्रंथको पूर्ण करके लिखता भया ॥ ३० ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायांचतुर्दशःपटलः॥१४॥

अथाश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्रेषूद्भवस्यरोगस्यशान्तिरभिधीयते ॥

अश्विन्यादिषुपीडास्याज्ज्वरोदाहःकलेवरे ॥ तद्दोपशमनार्थायज्वरतापादिशान्तये ॥१॥ दानंकुर्य्याद्विधानेनरोगशान्तिस्तदाभवेत् ॥ औषधीनांप्रयोगाश्चभवन्तिफलदायदा ॥ २ ॥ तत्रादावश्विन्यांरोगशान्तयेऽश्विनीदानम् ॥ तथाचोक्तमादित्यपुराणे ॥ सितमश्वंसमादायसुवर्णप्रतिमांरवेः ॥ टंकप्रमाणतःकुर्य्यात्कांस्यपात्रेनिधारयेत् ॥ ३ ॥ घृतपूर्णेमुखंपश्यन्मंत्रंद्वादशभिःपठेत् ॥ ४ ॥ मंत्रः ॥ भास्करायनमश्चैवकौमारायनमोनमः ॥ अश्विनीसंभवांपीडांनिवारयनवाह्निकाम् ॥ ५ ॥ पुनर्मंत्रंत्रिभिरुत्क्त्वादद्याद्दानंद्विजातये ॥ ज्वरबाधाविनिर्मुक्तःस्नानमारोग्यमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ इत्यश्विन्यांरोगसंभवेऽश्विनीदानम् ॥ १ ॥

भाषा—अश्विनीसे लेके सताईस नक्षत्रोंमें होनेवाले रोगकी शांति लिखतेहैं अश्विन्यादिक नक्षत्रोंके रोज शरीरमें ज्वर दाहादिक पीडाहो तवतक नक्षत्र दोषशांतिके वास्ते और ज्वरतापादिकी शांतिके वास्ते मनुष्य विधिपूर्वक दानकरे, दान करनेसे रोगशांति उसीवक्त होजातीहै, और औष- धियोंके प्रयोग फल देनेवाले हो जातेहैं ॥ अव आदिमें अश्विनीनक्षत्रमें हुये रोगकी शांतिके वास्ते दानविधि लिख- तेहैं ॥ आदित्यपुराणमें लिखाहै ॥ एक सपेद घोडाको मँगाके तदनंतर ४ मासे सुवर्णकी सूर्यमूर्ति वनवाके कांसीके पात्रमें रखके घृतसे पूर्ण करके १२ वार मंत्र पढके उसमें अपना मुख देखके फिर मूलोक्त मंत्र ३ वार पढके ब्राह्मणको अश्व- सहित दानदेवे,दान देनेसे सर्व पीडासे निवृत्त होके रोगी स्नान कर लेताहै ॥ इत्यश्विनीदानशांतिविधिः ॥ १ ॥

अथ भरण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिः ॥ उक्तंच विष्णुधर्म्मोत्तरे ॥ द्विप्रस्थपरिमाणेनकांस्यपात्रं चकारयेत् ॥ सार्द्धप्रस्थत्रयंनीत्वातिलंश्यामंसु- निर्मलम् ॥ ७ ॥ धर्म्मराजस्वरूपंचकृत्वासौवर्ण निर्मितम् ॥ कर्षमात्रप्रमाणेनतिलपात्रेनिवेशयेत्८ मंत्रेणानेनतत्पात्रंकृष्णाविप्रायदापयेत् ॥ मंत्रः ॥ धर्म्मराजनमस्तुभ्यमेकादशादिनात्मकीम् ॥ पीडां निवारयेद्देवयमदोषसमुद्भवाम् ॥ ९ ॥ इति याक- थिताशांतिर्भरण्यानेरुजात्मकी ॥ १० ॥ इति भ-

रण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिविधिःसमाप्तः ॥२॥

भाषा–अब भरणीनक्षत्रमें रोग होनेसे भरणीकी शांति लिखते हैं ॥ विष्णुपुराणके धर्म्मोत्तरखंडमें लिखाहै ॥ दो सेरका वजनमें कांसीका पात्र लेके ३ ॥ साढेतीनसेर काले तिल उसमें डालके १ तोला सुवर्णकी धर्म्मराजकी मूर्ति बनवाके तिलोंके ऊपर रखके मूलोक्त मंत्र पढके काले ब्राह्मणको देदेवे रोगीको निरोगता प्राप्त होनेकी शांति यह कहीहै ॥ इति भरणीदानशांतिविधिः ॥ २ ॥

अथ कृत्तिकादानशांतिर्लिख्यते ॥ अग्निदोषसमुद्भूताकृत्तिकासंभवारुजा ॥ तद्दोषशमनार्थायदानमुत्तममीरितम् ॥ ११॥ कर्षमात्रसुवर्णस्यवह्नेर्मूर्तितु कारयेत्॥तंडुलंपात्रमाधायप्रतिमांतत्रपूजयेत् १२॥ मंत्रंसंलिख्यपात्रेऽस्मिन्दानंविप्रायदापयेत्॥मंत्रः ॥ कृपीटायनमस्तुभ्यंबाधांमेविनिवारय ॥ नववासरसंभूतांवह्निदोषसमुद्भवाम् ॥ १३ ॥ इत्येषाकथिता शांतिःकृत्तिकायानिरोगिकी ॥ आयुरारोग्यतांयातिवह्निदोषविवर्जितः ॥ १४ ॥

इति कृत्तिकारोगसंभवेकृत्तिकादानशांतिविधिः ॥ ३ ॥

भाषा–कृत्तिका नक्षत्रकी दानशान्ति लिखतेहैं ॥ अग्निदेवके दोषसे कृत्तिका नक्षत्रमें पीडा होतीहै ॥ तद्दोषशमनके वास्ते यह उत्तम दान करना चाहिये १ तोला सुवर्णकी अग्निदेवकी मूर्ति बनवाके एक पात्रमें मूलोक्त कृत्तिकाका मंत्र लिखके उसमें तंडुल डालके तंडुलोंके ऊपर मूर्ति रखके पूजनकरके ब्राह्मणको देदेवे

यह कृत्तिकाकी शांति मुनियोंने कहीहै इसके करनेसे मनुष्य वह्निके दोषसे रहित होके नीरोग आयुको प्राप्त होजाताहै ॥

इति कृत्तिकादानशांतिविधिः ॥ ३ ॥

अथरोहिण्यांरोगसंभवेरोहिणीदानशान्तिर्लिख्यते॥ उक्तंचब्रह्मांडे ॥ विप्रदोषाच्चरोहिण्यांज्वरोभवति दारुणः ॥ तद्दोपशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत्॥ ॥ १५ ॥ पीतांगांब्रह्मणोमूर्तिंसुवर्णस्यचकारयेत् ॥ पीतवस्त्रइमंमंत्रंसंलिख्यतांचच्छादयेत् ॥ १६ ॥ टंकमात्रसुवर्णस्यप्रतिमाब्रह्मणःशुभा ॥ मंत्रः ॥ पितामहनमस्तुभ्यंसततवासरसंभवाम् ॥निवारयम-हाभागपीडामेतांज्वरोद्भवाम् ॥ १७ ॥ ब्राह्मणायद देहानंरोगांनिर्मुक्ततांनयेत् ॥ १८ ॥

इति रोहिणीरोगसंभवेरोहिणीदान-
शांतिविधिः ॥ ४ ॥

भाषा—इसके अनंतर रोहिणी नक्षत्रकी दानशांति लिखतेहैं ॥ ब्रह्मांडपुराणमें लिखाहै ॥ ब्राह्मणके दोषसे रोहिणी नक्षत्रमें पीडा होतीहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते यह दानकरना चाहिये पीली गौ मँगाके और ब्राह्मणकी मूर्ति ४ मासे सुवर्णकी कराके १ हाथ भर पीला वस्त्र लेके उसपै मूलोक्त मंत्र लिखके उससे मूर्ति आच्छादितकरके ब्राह्मणको गौ सहित दे देवे, यह दान देनेसे रोगी रोगसे निर्मुक्त होजाताहै ॥

इति रोहिणीदानशांतिविधिः ॥ ४ ॥

अथमृगशीर्षेरोगसंभवेमृगशीर्षदानशान्तिर्लिख्यते॥ मृगशीर्षेभवेद्रोगश्चंद्रदोषात्समुद्भवः ॥ तज्ज्वरश-मनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ॥ १९ ॥ कांस्यपा त्रंसमादायप्रस्थद्वयप्रमाणकम् ॥ तन्मध्येपायसं धृत्वाचंद्रमूर्तिचधारयेत् ॥ पंचकर्षप्रमाणेनरुक्मे-णनिर्मितांवराम् ॥ २० ॥ मंत्रः ॥ समुद्भतन-योदेवमामबाधांनिवारय ॥ रोहिणीपतयेतुभ्यंद्वि-जरूपायतेनमः ॥ २१ ॥ इमंमंत्रंसमुच्चार्य्यदशभिः प्रणतिंचरेत् ॥ ब्राह्मणायददेद्दानंरोगनिर्मुक्ततांन-येत् ॥ २२ ॥ इति मृगशीर्षदानशांतिविधिः ॥५॥

भाषा—इसके अनंतर मृगशिर नक्षत्रमें रोग होनेसे मृगशिरकी शांति लिखतेहैं ।। चंद्रमाके दोषसे मृगशिर नक्षत्रमें ज्वरादिक रोग होतेहैं तद्दोषके शमनके वास्ते शांतिदान करना चाहिये, २ दोसेर वजनमें कांसीका पात्र लाकर उसको पायस अर्थात् खीरसे पूर्णकरके, तदनंतर ५ पांच तोले सुवर्णकी चंद्रमाकी मूर्ति बन-वांके उसमें पात्र रखके मूलोक्त मंत्र दशवार पढके, फिर नम-स्कार करके ब्राह्मणको देदेवें, यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।। इति मृगशिरदानशांतिविधिः ।। ५ ।।

अथार्द्रायांरोगसंभवेचार्द्रादानशांतिर्लिख्यते ॥ लिं-गपुराणे ॥ आर्द्रायांजायतेरोगःशिवदोषसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायदानशांतिंचकारयेत् ॥ २३ ॥ श्वेतवर्णंवृषंनीत्वाधूम्रवस्त्रेणछादितम् ॥ कर्षमानेन

रुक्मेणशिवमूर्तिंप्रकल्पयेत् ॥ २४ ॥ मंत्रः ॥ वृषारूढनमस्तुभ्यंशूलिनेवरदायिने ॥ आर्द्रारोगनिवृत्तायरुद्रबाधांनिवारय ॥ २५ ॥ इत्येकादशभिर्मंत्रंजप्त्वाचप्रणमेच्छिवम् ॥ दत्वादानंचविप्रायरोगान्निर्मुक्ततांव्रजेत्॥२६॥इत्यार्द्रादानशांतिविधिः॥६॥

भाषा—आर्द्रानक्षत्रमें रोग होनेसे आर्द्राकी शांति लिखते हैं ॥ लिंगपुराणमें लिखा है ॥ शिवके दोषसे आर्द्रामें रोग होता है तद्दोषशमनके वास्ते शांतिदान करना चाहिये सुपेद वर्णका बैल मँगाके उसको खाखविस्त्र उढ़ादे फिर १ तोला सुवर्णकी शिवकी मूर्ति बनवाके वृषभमें स्थापनकरके मूलोक्त मंत्र ११ एकादशवार पढके नमस्कार करके ब्राह्मणको देदेवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे छूटजाता है ॥ इत्यार्द्रादानशांतिविधिः ॥ ६ ॥

अथपुनर्वसौरोगसंभवेपुनर्वसुदानशांतिर्लिख्यते ॥ स्कंदपुराणे ॥ पुनर्वसौभवेद्रोगोदेवदोषसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायदानशांतिंचकारयेत् ॥ २७ ॥ पलार्द्धपरिमाणेनसुवर्णप्रतिमांशुभाम् ॥ स्वशरीरानुसारेणसूत्रेणपरिवेष्टयेत् ॥ २८ ॥ रक्तपट्टेनसंछाद्यहस्तेनीत्वानरःसुधीः ॥ मंत्रः ॥ देवतेदितिरूपेत्वांनमामिकामरूपिणीम् ॥ सप्तवासरजांबाधांनिवारयशुभानने ॥ २९ ॥ इतिमंत्रसमुच्चार्यसप्तभिःप्रणतिंचरेत् ॥ द्विजायचददौदानंदक्षिणाभिमुखोभवेत् ॥ ३० ॥ एवंपुनर्वसोःशांतेरोगनिर्मुक्तता

व्रजेत् ॥ ३१ ॥ इतिपुनर्वसुदानशांतिविधिः ॥ ७ ॥

भाषा—पुनर्वसु नक्षत्रमें रोग होनेसे पुनर्वसुनक्षत्रकी शांति लिखतेहैं. स्कंदपुराणमें लिखाहै—अदिति देवतानकी माताके दोषसे पुनर्वसुनक्षत्रमें रोग होताहै. तद्दोषशमनके वास्ते शांति करानी चाहिये. २ दो तोले सुवर्णकी मूर्ति बनवाके रोगीकी शरीरके उन्मान तीन तारका कच्चा सूत लेके उस मूर्तिको वेष्टन करदे. फिर लालवस्त्रसे मूर्ति ढकके रोगी अपने दक्षिण हाथमें लेके मूलोक्तमंत्र सतवार पढके नमस्कार करके दक्षिणदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान देदेवे. ऐसे पुनर्वसुकी शांति करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इति पुनर्वसुदान शांति विधिः ॥ ७ ॥

अथपुष्येरोगसंभवेपुष्यदानशांतिर्लिख्यते ॥ हरिवंशपुराणे ॥ पुष्यर्क्षेजायतेरोगोगुरुब्राह्मणदोषतः ॥ शांतिदानंसमाचक्रेज्वरपीडादिशांतये ॥ ३२ ॥ बृहस्पतेःकृतांमूर्तिंकर्षमात्रसुवर्णतः ॥ चणकद्विदलप्रस्थसप्तकेपरिधायच ॥ ३३ ॥ श्वेतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंहरिद्राभिःसुधीर्नरः ॥ ३४ ॥ मंत्रः ॥ बृहस्पतेसुराचार्य्यनमस्तेपुष्यनायक ॥ सप्तवासरजांबाधांनिवारयसुदारुणाम् ॥ ३५ ॥ सूत्रंशरीरमात्रेणपीतंतत्रनिवेशयेत् ॥ पश्चिमाभिमुखोभूत्वा दानंदद्याद्द्विजातये ॥ ३६ ॥ रोगोनिर्मुक्ततांयातिगुरुपुष्यस्यदानतः॥ इतिपुष्यदानशांति विधिः॥८॥

भाषा—पुष्यनक्षत्रमें रोग होनेसे पुष्यकी शांति लिखतेहैं ॥

हरिवंशपुराणमें लिखाहै—गुरुके दोषसे और ब्राह्मणके दोषसे पुष्य नक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा होतीहै तद्दोषके शमनताके वास्ते शांति, दान करना चाहिये ॥ १ एक तोला सुवर्णकी बृहस्पतिकी मूर्ति बनवाके पीछे एक वस्त्र सुपेदपर हलदीसे मूलोक्त मंत्र लिखके सातसेर चनेकी दाल उसमें डालके उसपर मूर्तिस्थापन करे फिर अपने शरीरके अनुमान पीला सूत्र मापके इसी चनेकी दालमें रखके पश्चिमकी तरफ मुखकरके ब्राह्मणको दान दे देवे ऐसे बृहस्पतिका दानसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाताहै ॥ इति पुष्यदान शांति विधिः ॥ ८ ॥

अथाश्लेषायांरोगसंभवेऽश्लेषादानशांतिर्लिख्यते ॥

उक्तंच पाद्मेपातालखंडे॥अश्लेषायांभवेद्रोगोनागदोषसमुद्भवः ॥ तद्दोषशमनार्थायमृत्युयोगप्रशांतये॥ ॥ ३७ ॥ शेषस्यप्रतिमांकुर्यात्पलमात्रसुवर्णतः ॥ द्वादशांगुलमानेनश्वेतवस्त्रेणछादयेत् ॥ ३८ ॥ शरीरसूत्रमानेनकुच्छंचपरिवेष्टयेत् ॥ प्रस्थत्रयप्रमाणे चतंडुलेपरिधायच ॥ ३९ ॥ तन्मध्येलेखयेन्मंत्र मुत्तराभिमुखोविशन्॥ मंत्रः ॥ पातालवासिनेतुभ्यं मृत्युयोगादिशांतये ॥ नमोऽश्लेषायतेदेवशेषनाग प्रसीदमे॥४०॥इत्येतत्क्रियतेदानंब्राह्मणायतपस्विने ॥ मृत्युयोगाद्विमुच्येतपरमायुःसजीवति ॥४१॥

इत्यश्लेषादानशांतिविधिः ॥ ९ ॥

भाषा—अश्लेषा नक्षत्रमें रोग होनेसे अश्लेषाकी शांति लिखते

हैं. पद्मपुराणके पातालखंडमें लिखाहै-सर्पोंके दोषसे अश्लेषामें रोग होताहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते और मृत्युयोगकी शांतिके वास्ते दान कराना चाहिये ४ चार तोले सुवर्णकी शेष नागकी मूर्ति बनवाके उसपर १२ अंगुलका सपेद वस्त्र आच्छादित करके रोगीके शरीरके अनुमान सूत लेके नागके पुच्छको वेष्टित करदे फिर एकपात्र लेके उसमें मूलोक्त मंत्र लिखके तीन सेर चावल डालके उसमें शेषनाग स्थापन करके उत्तराभिमुख होके तपस्वी ब्राह्मण को देदेवे इस दानके करनेसे रोगी मृत्युयोगसे छुटकेबहुत वर्षोंतक जीवताहै ॥ इत्यश्लेषादानशांतिविधिः ॥ ९ ॥

अथमघायांरोगसंभवेमघादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचगारुडे ॥ मघायांजायतेपीडाज्वरदाहसमन्विता ॥ विंशतिवारसंभूतापितृदोषसमुद्भवा ॥ तद्दोषविनिवृत्त्यर्थंपितृशांतिंसमाचरेत् ॥ ४२ ॥ पलतुर्यप्रमाणेनस्वर्णमूर्तिंचकारयेत् ॥ श्वेतवस्त्रे लिखेन्मंत्रंछादयेत्तेनतन्मुखम् ॥ ४३ ॥ मंत्रः ॥ विंशतिवारजांपीडांनिवारयगदाधर ॥ पितृदेवनमस्तुभ्यंशरीरारोग्यतांकुरु ॥ ४४ ॥ मघानक्षत्ररोगस्यशांतिदानविधानतः ॥ द्विजायऋग्यपाठायदानंवृद्धायदापयेत् ॥ ४५ ॥

इति मघादान शांतिविधिः ॥ १० ॥

भाषा-मघानक्षत्रमें रोग होनेसे मघाकी शांति लिखतेहैं. गरुड पुराणमें लिखाहै. पितृदोषसे मघानक्षत्रमें ज्वरदाहादिककी

पीडा २० दिन रहनेवाली होतीहै. तद्दोष शमनताके वास्ते पितृशांति करानी चाहिये. १ तोले सुवर्णकी पितृमूर्ति बनवाके सपेद वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके उससे मूर्तिका मुख आच्छादित करके विधानपूर्वक वेदके पढे हुए वृद्ध ब्राह्मणको दान करके दे देवे ॥

इति मघादान शांतिविधिः ॥ १० ॥

अथपूर्वफाल्गुन्यांरोगसंभवेपूर्वफाल्गुनीदानशांति- र्लिख्यते ॥ रोगःस्यात्पूर्वफाल्गुन्यांदेवदोषसमुद्भ- वः ॥ मृत्युयोगःसमाख्यातस्तद्दोषशमनायच ॥ ॥ ४६ ॥ शांतिदानंसमाचक्षेगोदानंदानमुत्तमम् ॥ रक्तवर्णमयींधेनुंरक्तवस्त्रेणछादिताम् ॥ ४७ ॥ भगस्यप्रतिमांकुर्य्यात्सुवर्णपलमात्रतः॥रक्तवस्त्रेलि खेन्मंत्रंमूर्तिंचपरिछादयेत ॥ ४८ ॥ मंत्रः ॥ भगा- यचनमस्तुभ्यंमृत्यूद्भवकलेवर ॥ मृत्युयोगभवां बाधांनिवारयसिमेप्रभो ॥ ४९ ॥ उत्तराभिमुखं विप्रंकृत्वादानंप्रदापयेत् ॥ मृत्युयोगाद्विमुच्येत परमायुर्भवेन्नरः ॥ ५० ॥

इति पूर्वफाल्गुनी दानशांतिविधिः ॥ ११ ॥

भाषा—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाफाल्गुनीकी शांति लिखतेहैं. भगदेवके दोषसे होनेवाला रोग पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें होताहै मृत्युयोग ऋषियोंने वर्णन कराहै तद्दोष- शमनके वास्ते गौका उत्तम दान शांति कराना चाहिये लाल- रंगकी गौ लाके लाल वस्त्रसे आच्छादित कर दे. फिर ४ तोले

सुवर्णकी मूर्ति बनवाके लाल वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके मूर्तिको उसे आच्छादित करके उत्तराभिमुख ब्राह्मणको दान करके गौसहित दे देवे यह दान देनेसे रोगी मृत्युयोगसे छुटके और बडी आयुको प्राप्त होताहै ॥

इति पूर्वफाल्गुनीशांतिविधिः ॥ ११ ॥

अथोत्तरफाल्गुन्यांरोगसंभवेचोत्तरफाल्गुनीदान-शांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचनृसिंहपुराणे ॥ रोगोह्युत्तर फाल्गुन्यांराक्षसीदोषसंभवः ॥ सप्तवासरजापीडा ज्वरादियुक्तदारुणा ॥ ९१ ॥ तद्दोषशमनार्थायशां तिदानंसमाचरेत् ॥ दध्योदनंमहाश्रेष्ठंबहुशर्करया-न्वितम् ॥ ९२ ॥ ब्राह्मणान्सप्तसंख्याकान्भोजनंका रयेद्बुधः ॥ पत्रेऽश्वत्थस्यसंलिख्यमंत्रंलाक्षारसेनच॥ ॥ ९३ ॥ दक्षिणस्यांचदिग्भागेतडागेजलसंक्षये ॥ रोगिणंदर्शयित्वाचाक्षिपेज्ज्वरप्रशांतये ॥ ९४ ॥ मंत्रः ॥ भगदेवपतेतुभ्यंनमःसलिलवासिने।।सप्तवा-सरजांपीडांनिवारयप्रसीदमे ॥ ९५ ॥ रोगान्निर्मुक्त तांयातिचिरजीवीभवेन्नरः ॥ अल्पाद्विमुच्यतेरोगी भगदेवप्रसादतः ॥ ९६ ॥ इत्युत्तरफाल्गुनीदान-शांतिविधिः ॥ १२ ॥

भाषा—उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तरा फाल्गुनी की शांति लिखतेहैं—नृसिंहपुराणमें लिखाहै राक्षसके दोषसे उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा ७ रोज रहनेवाली

होतीहै, तद्दोषके शमनके वास्ते शांति करानी चाहिये, ७ सात ब्राह्मणोंको दहीभात, चीनी भोजन कराना चाहिये, फिर पीपलवृक्षके पत्तापर लाखके रससे मूलोक्त मंत्र लिखके रोगी- को दिखाके दक्षिणादिशामें सूखेतालावमें गेरदेवे ऐसे यत्न करनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाताहै और बहुत काल जीवताहै॥

इत्युत्तरफाल्गुनीदानशांतिविधिः ॥ १२ ॥

अथहस्तेरोगसंभवेहस्तदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तं चभविष्योत्तरे ॥ हस्तर्क्षेजायतेरोगोरविदोषसमु- द्भवः ॥ पक्षवासरजापीडाज्वरदाहातिदारुणी ॥ ॥ ८७ ॥ तद्दोषशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ॥ द्विरदंगजमादायसूर्य्यमूर्तौविराजितम् ॥ ८८ ॥ दशकर्षप्रमाणेनसुवर्णप्रतिमाशुभा॥ततस्तंडुलमा- दायदक्षिणेचशुभेकरे ॥ मंत्रैस्त्रिभिःसमुच्चार्य्यगजो- परिपरिक्षिपेत् ॥ ८९ ॥ मंत्रः ॥ नमस्तुभ्यंगजें- द्रायद्विरदायजयैषिणे ॥ पक्षवासरजांपीडांनिवारय प्रसीदमे ॥ ९० ॥ कंवलेनसमाच्छाद्यदद्याद्दानंद्वि- जायच ॥ पूर्वाभिमुखमास्थायनरोनैरुज्यतांव्रजेत्॥ ॥ ९१ ॥ इतिहस्तदानशांतिविधिः ॥ १३ ॥

भाषा–हस्तनक्षत्रमें रोग होनेसे हस्तकीशांति लिखतेहैं. सूर्यके दोषसे हस्तनक्षत्रमें रोग होताहै रोग उत्पन्न होके पंद्रह- दिनतक ज्वरदाहादिककी दारुण पीडा रहतीहै. तद्दोष- शमनके वास्ते शांति करनी चाहिये. दोदांतका हाथी मँगाके

उसपे १० तोले सुवर्णकी सुंदर मूर्ति बनवाके स्थापन करके दक्षिण हाथमें तंडुल लेके ३ तीन वार मूलोक्त मंत्र पढके हस्तीपर गेरे, फिर कंबलसे आच्छादन करके पूर्वको मुख करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान करनेसे रोगी निरोगताको प्राप्त होजाताहै ॥ इति हस्तशांतिविधिः ॥ १३ ॥

अथचित्रायांरोगसंभवेचित्रादानशांतिर्लिख्यते ॥ चित्रायांजायतेरोगोविप्रद्रोहसमुद्भवः ॥ रुद्रवासरजापीडातद्दोपशमनायच ॥ ६२ ॥ शांतिदानकरोधीमान्रोगनिर्मुक्ततांव्रजेत् ॥ धूम्रवर्णंवृषंनीत्वागोधूमोन्मानसंख्यकम् ॥ ६३ ॥ ताम्रपत्रेनिधायात्ररक्तवस्त्रेणछादयेत् ॥ तद्वस्त्रेलिख्यतेमंत्रंनमस्कृत्यविधानतः ॥ ६४ ॥ मंत्रः ॥ त्वाष्ट्रदेवनमस्तुभ्यंचित्रेशायनमोस्तुते ॥ रुद्रवासरजंरोगंनिवारयसदाप्रभो ॥ ॥ ६५ ॥ ब्राह्मणायददौदानमीशानाभिमुखोनरः ॥ त्वाष्ट्रदानविधिःप्रोक्तोनराणांरोगमुक्तये ॥ ६६ ॥

इति चित्रादानशांतिविधिः ॥ १४ ॥

भाषा–चित्रामें रोग होनेसे चित्राकी शांति लिखते हैं. ब्राह्मणके द्रोहसे उत्पन्न होनेवाला रोग चित्रानक्षत्रमें होताहै वह पीडा ११ रोज रहती है तद्दोपकी शांतिके वास्ते बुद्धिमान् रोगी दान करनेसे रोगसे छूट जाता है खाखी रंगका बैल मँगाके फिर १ मनभर गेंहूं तांबाके पात्रमें भरके लालवस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके उसपर ढकके ईशान दिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको

वृषभ सहित दान करके देदेवे मनुष्योंके रोग दूर होनेके वास्ते चित्राकी दानविधि यह कही है ॥ इति चित्राशांतिविधिः ॥ १४ ॥

अथस्वात्यांरोगसंभवेस्वातिदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंच वायुपुराणे ॥ स्वात्यांसंजायतेपीडावायुदोषसमुद्भवा ॥ मृत्युयोगःसमाख्यातस्तस्मिन्रोगीनजीवति ॥ ६७ ॥ शतौषधीकृतेवापिविना शांत्यानजीवति ॥ मृत्युयोगविनाशायशांतिदानं समाचरेत् ॥ ६८ ॥ सुंदरंवृषभंनीत्वासितश्यामंमहोज्ज्वलम् ॥ शतप्रस्थप्रमाणेनतंडुलंसितवस्त्रके ॥ ६९ ॥ वृषपृष्ठेसमाधायधूम्रवस्त्रपरिवृतम् ॥ वायुकोणेसमास्थायव्यजनेमंत्रमालिखेत् ॥ ॥ ७० ॥ मंत्रः ॥ अंजनीपतयेतुभ्यंवायवेस्वामिनेनमः ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयप्रसीदमे ॥ द्विजायचददेद्दानंपरमायुःसजीवति ॥ ७१ ॥ इति स्वातिदानशांतिविधिः ॥ १५ ॥

भाषा—स्वातिनक्षत्रमें रोग होनेसे स्वातिकी शांति लिखतेहैं ॥ वायुके दोषसे स्वातिमें पीडा होती है यह मृत्युयोग शास्त्रमें वर्णन कियाहै शत औषधीके करनेसेभी वगैर शांतिके स्वातिमें होनेवाली पीडा शमन नहीं होतीहै इसीवास्ते मृत्युयोग दूर करनेको शांतिदान करना चाहिये बहुत सुंदर कुछ श्याम कुछ सपेद ऐसा बैल मँगावे फिर २ ॥ अढाई मन चावल सपेद वस्त्रमें बांधके बैलकी पीठपे रखके खाखी वस्त्र उसपे और ढकदे

फिर १ बीजनापर मूलोक्त मंत्र लिखके वहभी वृषभपर रखके वायुकोणमें स्थित होके ब्राह्मणको दान दे देव यह दान देनेसे रोगी रोगसे छूटके बहुत दिनतक जीवताहै ॥

इति स्वातिशांति विधिः ॥ १५ ॥

अथविशाखायांरोगसंभवेविशाखादानशांतिर्लिख्यते। उक्तंचस्कंदपुराणे ॥ विशाखायांभवेद्रोगोदेवाग्न्यो-र्दोषसंभवः ॥ तिथिवासरजापीडातद्दोषशमनाय च ॥ ७२ ॥ शक्राग्न्योःकारयन्मूर्तिंकर्षमात्रसुवर्ण-जाम् ॥ चतुःप्रस्थप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ॥ ॥ ७३ ॥ पंचप्रस्थप्रमाणेनतिलश्वेतंनिधारयेत् ॥ मंत्रंतत्रलिखेद्धीमान्पीतरक्तेचवाससी ॥ पूर्वाभिमुख आविश्यदद्याद्दानंद्विजातये ॥७४॥ मंत्रः ॥ देवेन्द्रा-ग्नेनमस्तुभ्यमश्वयेब्रह्मसाक्षिणे ॥ पक्षवासरजांपीडां निवारयप्रसीदमे ॥ ७५ ॥ ऊर्द्धाधोमुखमास्थायनम स्कारद्वयंचरेत् ॥ रोगीनिर्मुक्ततांयातिविशाखादान शांतितः॥७६॥इतिविशाखादानशांतिविधिः॥१६॥

भाषा—विशाखामें रोगहोनेसे, विशाखाकी शांति लिखतेहैं ॥ स्कंदपुराणमें लिखाहै, इंद्रके और अग्निके दोपसे विशाखा-नक्षत्रमें रोग होताहै वह पीडा १५ दिनतक रहतीहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते १ एक तोला सुवर्णकी इंद्रकी और अग्नि-की मूर्ति बनवाके ४ सेर वजनका कांसेका पात्र लेके उसमें ५ सेर सपेद तिल घालके उसमें मूर्त्तियोंको स्थापन करके फिर

पीला और लाल वस्त्रपर मूलोक्तमंत्र लिखके मूर्त्तियोंको उठाके पूर्वको मुख करके ब्राह्मणको दे देवे तत्पश्चात् ऊपरको मुख करके और नीचेको मुख करके दो नमस्कारकरे ऐसे विशाखाकी शांति करानेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै।।इति विशाखाशांतिः॥ १६॥

अथानुराधायांरोगसंभवेऽनुराधादानशांतिर्लिख्यते॥ रोगःस्यादनुराधायांमित्रदेवस्यदोषतः ॥ षष्टिवा-सरजाबाधातद्दोषशमनायच ॥ ७७ ॥ कर्पार्द्धपरि-माणेनमूर्तिरुक्मेणकारयेत् ॥ विधिनामित्रदेवस्य रक्तवस्त्रेणछादितम् ॥ ७८ ॥ प्रस्थत्रयप्रमाणेनकां-स्यपात्रंचकारयेत् ॥ तत्रमंत्रंलिखित्वाचदधिप्रस्थं समावपेत् ॥ ७९ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वाब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥ मंत्रः ॥ मित्रदेवनमस्तुभ्यमनुराधाप-तयेनमः ॥ निवारयसिमेबाधांषष्टिवासरसंभवाम् ॥ ॥ ८० ॥ कुर्य्याच्छान्तिविधानेनरोगान्निर्मुक्ततांन-येत् ॥ ८१ ॥ इत्यनुराधादानशांतिविधिः ॥१७॥

भाषा–अनुराधानक्षत्रमें रोग होनेसे अनुराधाकी शांति लि-खते हैं मित्रदेवके दोषसे अनुराधामें रोग होताहै ६० दिनतक पीडा रहतीहै तद्दोषकी शमताके वास्ते ६ मासे सुवर्णकी मूर्ति मित्रदेवकी बनवाके लाल वस्त्रसे आच्छादित करके फिर तीनसेरके वजनमें लेके उसमें मूलोक्त मंत्र लिखके १ सेर दही घालके उत्तरकी तरफ मुखकरके ब्राह्मणको दे देवे विधान

पूर्वक शांति करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाता है ॥ इत्यनुराधा-शांतिविधिः ॥ १७ ॥

अथज्येष्ठायांरोगसंभवेज्येष्ठादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचशक्रयामले॥ज्येष्ठायांसंभवोरोगोमृत्युयोगस-माह्वयः ॥ नजीवतिकदारोगीदानशांत्यादिभिर्वि-ना ॥८२॥ तद्दोषशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत्॥ कर्षमात्रंसुवर्णंचपीतवस्त्रेनिवेशयेत् ॥ तन्म ध्येलेखयेन्मंत्रंपूर्वाभिमुखमाविशन् ॥ ८३ ॥ मंत्रः ॥ शक्रायदेवदेवायनमस्तुभ्यंप्रसीदमे ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयशचीपते ॥ ८४ ॥ इतिगुप्तकृतंदानंरोगान्मृत्योर्विमुंचाति ॥ दीर्घायुर्जी वतेलोकेदानशांतिप्रभावतः ॥ ८५ ॥

इतिज्येष्ठादानशांतिविधिः ॥ १८ ॥

भाषा–ज्येष्ठानक्षत्रमें रोग होनेसे ज्येष्ठाकी शांति लिखतेहैं शक्रयामलमें लिखाहै–ज्येष्ठानक्षत्रमें यदि रोग उत्पन्न होवे. वह मृत्युयोगकी माफिक होताहै. वगैर दानशांतिके रोगी अच्छा होना असंभवहै. इसवास्ते तद्दोषशमताके हेतु शांति कराना चाहिये. एक पीला कपडा लेके उसपर मूलोक्त मंत्र लिखके १ तोला सुवर्ण बांधके पूर्वको मुखकरके ब्राह्मणको दे देवे. यह गुप्तदान करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै और दीर्घायु होजातीहै ॥ इति ज्येष्ठादानशांतिविधिः ॥ १८ ॥

अथमूलेरोगसंभवेमूलदानशांतिर्लिख्यते ॥उक्तंचा-दिपुराणे ॥ मूलेसञ्जायतेरोगोह्यनाचारसमुद्भवः ॥

नववासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥ ८६ ॥ पलद्व-
यसुवर्णेननैर्ऋतप्रतिमाकृता ॥ श्यामवस्त्रेणसंछाद्य
दक्षिणाभिमुखोविशन् ॥ ८७ ॥ प्रस्थद्वयघृतंनी-
त्वालोहपात्रेनिधारय ॥ नवभिरुच्चरेन्मंत्रंमुखंतत्रवि
लोकयेत् ॥ ८८ ॥ मंत्रः ॥ नमस्तेदैत्यराजायनैर्ऋ
तायकृतार्थिने ॥ नववासरजांपीडांनिवारयचतुष्टि-
द ॥८९॥ दत्वादानञ्चविप्रायरोगनिर्मुक्ततांनयेत्॥

इति मूलदानशांतिविधिः ॥ १९ ॥

भाषा—मूलनक्षत्रमें रोग होनेसे मूलकी शांति लिखते हैं. आदि पुराणमें लिखाहै-आचाररहित रहनेसे मूलनक्षत्रमें रोग पैदा होता है नौरोजतक पीडा रहती है तद्दोषकी शांतिके वास्ते ८ तोले सुवर्णकी नैर्ऋत देवकी मूर्ति बनवाके कालेवस्त्रसे आच्छादित करदे फिर दोसेर घृत लोहके पात्रमें घालके दक्षिणकी तरफ मुख करके ९ नौवार मूलोक्त मंत्र पढके रोगी अपना मुख देखके मूर्तिसहित ब्राह्मणको दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥

इति मूलशांतिविधिः ॥ १९ ॥

अथपूर्वाषाढेरोगसंभवेपूर्वाषाढदानशांतिर्लिख्यते ॥
उक्तंचकौमें ॥ पूर्वाषाढेभवेद्रोगोजलदोषसमुद्भवः ॥
मृत्युयोगःसमाख्यातस्तद्दोषविनिवृत्तये ॥ पंचह-
स्तप्रमाणेनासितवस्त्रंसमाददेत् ॥ ९० ॥ पश्चि-
माभिमुखोभूत्वातंडुलंप्रस्थसप्तकम् ॥ तत्रैवले-
खयेन्मंत्रंजलमादौप्रपूज्यच ॥ ९१ ॥ मंत्रः ॥ नमः

पावनरूपायव्यापिनेपरमात्मने ॥ मृत्युयोगभवां वाधांनिवारयचकेशव ॥ ९२ ॥ दानंदत्वाब्राह्मणाय मृत्युबाधाद्विमुंचति ॥ मृत्युयोगकृताद्दानात्परमायुःसजीवति॥९३॥इति पूर्वाषाढदानशांतिविधिः॥२०॥

भाषा—पूर्वाषाढनक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाषाढकी शांति लिखतेहैं. कूर्म्मपुराणमें लिखाहै—जलके दोषसे पूर्वाषाढनक्षत्रमें रोग मृत्युयोगकी माफिक होताहै तद्दोषकी शमनताके वास्ते ५ पांच हाथका सपेद वस्त्र लेके उसपर मूलोक्त मंत्र लिखके ७ सात सेर चावल उसमें बांधके पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके प्रथम जलका पूजन करके ब्राह्मणको दान देनेसे मृत्युकी बाधासे रोगी छूटके बहुत दिनतक जीताहै ॥

इति पूर्वाषाढशांतिविधिः ॥ २० ॥

अथोत्तराषाढेरोगसंभवेरोगदानशांतिर्लिख्यते ॥ रोगःस्यादुत्तराषाढेश्राद्धलोपसमुद्भवः ॥ मासपीडा समुद्भूतातद्दोषशमनायच ॥ ९४ ॥ पलद्वयप्रमाणे नसुवर्णेनचकारयेत् ॥ प्रतिमांविश्वदेवस्यश्वेतवस्त्र परिवृताम् ॥ ९५ ॥ दशप्रस्थानुमानेनासिततंडुल मुत्क्षिपेत् ॥ लिखेन्मंत्रंचतत्रैवपश्चिमाभिमुखोवसन् ॥ ९६ ॥ मंत्रः ॥ नमोविश्वप्रबोधायविश्वदेवनमो स्तुते ॥ मासोद्भवमहापीडांनिवारयसनातन॥९७॥ ब्राह्मणायददेद्दानंरोगनिर्मुक्ततांनयेत् ॥ इत्युत्तराषाढदानशांतिविधिः ॥ २१ ॥

भाषा—उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराषाढकी शांति लिखतेहैं श्राद्धकर्म्मके लोप करनेसे उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग १ एक मासतक पीडा देनेवाला उत्पन्न होताहै तद्दोषके शमनके वास्ते विश्वेदेवकी मूर्त्ति ८ आठ तोले सुवर्णकी बनवाके सपेद वस्त्रमें मूलोक्तमंत्र लिखके मूर्तिको उठाके एक पात्रमें १० दश सेर चावल घालके ऊपर मूर्तिस्थापन करके पश्चिमकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥

इत्युत्तराषाढशांतिः ॥ २१ ॥

अथश्रवणेसंभवेरोगेश्रवणदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचवामनपुराणे ॥ श्रवणर्क्षेभवेद्रोगोमातृपित्रोस्तुदोषजः ॥ शिववासरजापीडाज्वरातिसारसंभवा ॥ ९८ ॥ तद्दोषशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ॥ निमंत्र्यब्राह्मणंश्रेष्ठंसितवस्त्रंमनोहरम् ॥ ॥ ९९ ॥ पंचहस्तमितंवस्त्रंमंत्रंतत्रलिखेद्बुधः ॥ सिततंडुलपूर्णंचघटंमृन्मयमुत्तमम् ॥ १०० ॥ दशपूगफलंमध्येदशमुद्रासमाकुलम् ॥ पूर्वाभिमुखआविश्यचंदनेनसमर्चयेत् ॥ १०१ ॥ मंत्रः ॥ विष्णवेश्रवणेशायगोविंदायनमोनमः ॥ रुद्रवासरजांपीडांविनाशायमहोत्कटाम् ॥ १०२ ॥ इति शांत्याददेद्दानंब्राह्मणायविशेषतः ॥ रोगानिर्मुक्ततां यातिपरमायुःसजीवति ॥ १०३ ॥ इति श्रवणदानशांतिविधिः ॥ २२ ॥

भाषा—श्रवणनक्षत्रमें रोग होनेसे श्रवणकी शांति लिखतेहैं वामनपुराणमें लिखाहै—माता पिताके दोषसे श्रवण नक्षत्रमें रोग होताहै ११ दिनतक ज्वरातिसारकी पीडा रहतीहै. तद्दोषकी शांतिके वास्ते दानविधि करानी चाहिये. ब्राह्मण निमंत्रित करके सपेद वस्त्र पहराने चाहिये. फिर ५ पांच हाथका सुपेद वस्त्र लेके उसपर मूलोक्त यंत्र लिखके फिर मृत्तिकाका कलश तंडुलोंसे पूर्ण करके १० सुपारी उसमें डालदे और १० रुपये डालदे फिर कलशपर वह वस्त्र ढकके पूर्वको मुख करके चंदनसे कलशका पूजन करके ब्राह्मणको दान देदेवे ऐसे दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाताहै और बहुत दिनतक जीताहै ॥ इति श्रवणशांतिः ॥ २२ ॥

अथधनिष्ठायांरोगसंभवेधनिष्ठादानशांतिर्लिख्यते॥ उक्तंचभविष्योत्तरे ॥ रोगःस्याच्चधनिष्ठायामपक्षान सम्रुद्भवः॥ पक्षवासरजापीडातद्दोषशमनायच १०४ प्रस्थत्रयप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ॥ विलिप्य चंदनेनैवशुष्कंकुर्य्याद्विधानतः ॥ १०५ ॥ तन्मध्ये लिख्यतेमंत्रंसुवर्णस्यशलाकया ॥ पंचप्रस्थप्रमाणे-नतंडुलंतत्रनिक्षिपेत् ॥ १०६ ॥ हरितवस्त्रेणसंछा-द्यपाश्चिमाभिमुखोभवन् ॥ रुक्ममुद्राद्वयंधृत्वादानं दद्याद्द्विजातये ॥ १०७ ॥ मंत्रः ॥ वासुदेवायदेवाय धनिष्ठेशायतेनमः ॥ पक्षवासरजांपीडांनिवारयवसु-प्रद ॥ १०८ ॥ शान्तिदानकृतेनापिरोगान्निर्मुक्ततां व्रजेत् ॥ इति धनिष्ठादानशांतिविधिः ॥ २३ ॥

भाषा--धनिष्ठानक्षत्रमें रोग होनेसे धनिष्ठाकी शांति लिखतेहैं. भविष्योत्तरपुराणमें लिखाहै—किसीका अपमान करनेसे धनिष्ठा-नक्षत्रमें रोग होताहै १५ पंद्रह रोजतक पीडा रहती है तद्दो-षकी शमताके वास्ते ३ तीनसेर वजनका कांसेका पात्र लेके उसका मध्य चंदनसे लेपन करके सुका लेवे फिर सुवर्णकी शला-कासे उस पात्रके मध्यमें मूलोक्त मंत्र लिखके पांच शेर चावल घालके हरे कपडेसे आच्छादन करके उसमें २ सुवर्णकी मुद्रा रखके पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इति धनिष्ठादानशांति-विधिः ॥ २३ ॥

अथशतभिषायांरोगसंभवेशतभिषादानशांतिर्लि-ख्यते ॥ शतभिषाभिधनक्षत्रेरोगःस्याज्जलदोषतः ॥ रुद्रवासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥१०९॥ रीत्या श्चपंचप्रस्थेनघटंकृत्वामनोहरम् ॥ प्रस्थत्रयंघृतंनी त्वाकर्षैस्वर्णैतुप्रक्षिपेत् ॥ ११० ॥ समंताच्चंदनेनैव लेपयेच्छुष्कमाचरेत् ॥ तत्रैवलेखयेन्मंत्रंसितवस्त्रेण छादयेत् ॥ १११ ॥ मंत्रः ॥ वरुणायनमस्तुभ्यंदे वायवरदायिने ॥ रुद्रवासरजांपीडांनिवारयकला धर ॥ ११२ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्विजा तये॥नैरोग्यतांव्रजेद्रोगीपरमायुःसजीवति ॥११३ ॥

इति शतभिषादानशांतिविधिः ॥ २४ ॥

भाषा—शतभिषानक्षत्रमें रोग होनेसे शतभिषाकी शांति

लिखतेहैं जलके दोषसे शतभिषानक्षत्रमें रोग होताहै ११ दिनतक पीडा रहतीहै तद्दोषकी शमताके वास्ते ५ सेर पीतलका कलश मनोहर करके ३ सेर घृत घालके १ तोला सुवर्ण उसमें डालदे फिर चारों तरफ चंदनसे लेप करकें सुकालेवे उसमें मूलोक्त मंत्र लिखके सफेदवस्त्रसे आच्छादन करके उत्तरकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान देवे यह दान देनेसे रोगी निरोगी होके बहुत दिनतक जीवताहै ॥ इति शतभिषा दानशांतिविधिः ॥ २४ ॥

अथपूर्वाभाद्रपदेरोगसंभवेपूर्वाभाद्रपददानशांतिर्लिख्यते॥ उक्तंचमार्कंडेये ॥ पूर्वाभाद्रपदरोगोजायते जीवघातजः ॥ मृत्युयोगस्ससाख्यातस्तद्दोषशमनायच ॥ ११४ ॥ लोहपात्रंसमानीयनवप्रस्थप्रमाणतः ॥ सप्तप्रस्थतिलंनीत्वाश्यामवर्णशवोपमम् ॥ ११५ ॥ कृष्णवर्णामजांनीत्वाऽसितवस्त्रेण छादयेत् ॥ ग्राह्यंप्रस्थद्वयंतैलंतस्मिन्दृष्ट्वामुखंशुभम् ॥ ११६ ॥ तत्रैवसप्तभिर्मंत्रंपठित्वामाषमुत्क्षिपन् ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्द्विजातये ॥ ११७ ॥ मंत्रः ॥ अजपादनमस्तुभ्यंमृत्युबाधाव्यपोहक ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयप्रसीदमे ॥ ॥११८॥ मृत्युयोगभवाद्रोगान्मुच्यतेनात्रसंशयः॥ इति पूर्वाभाद्रपददानशांतिविधिः ॥ २५ ॥

भाषा—पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाभाद्रपदकी शांति

लिखतेहैं मार्कंडेयपुराणमें लिखाहै जीवके घात करनेसे पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होताहै वह मृत्युयोगके माफिक मुनियोंने कहाहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते ९ सेर वजनमें लोहका पात्र लाके उसमें ७ सेर तिल काले भर देवै फिर एक काली बकरी लाके उसको काला कपडा उढाके दो सेरतिलोंका तेल एक पात्रमें घालके रोगी अपना मुख देखके ७ सात वार मूलोक्त मंत्र पढके ऊपरको उडद फेंके फिर उत्तरको मुख करके लोहपात्र, बकरी, तैल सब वस्तु दान करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाताहै इसमें कुछ संशय नहीं ॥ ॥ इति पूर्वाभाद्रपदशांतिः ॥ २५ ॥

अथोत्तराभाद्रपदरोगसंभवेतद्दानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचवायुपुराणे ॥ रोगःस्यादुत्तराभाद्रेदेवदोषसमुद्भवः ॥ सप्तवासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥ ॥११९॥ नीत्वाकर्षंसुवर्णंतुताम्रपात्रंचप्रस्थकम् ॥ चणकाद्विदलंप्रस्थंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ १२० ॥ रुक्ममुद्राद्वयंन्यस्यपश्चिमाभिमुखोभवन् ॥ पीतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंसप्तभिःप्रणतिं चरेत् ॥ १२१ ॥ मंत्रः ॥ अहिर्बुध्न्यनमस्तुभ्यमुग्रवेगनमोस्तुते ॥ सप्तवासरजांपीडांनिवारयप्रसीदमे ॥ १२२ ॥ ब्राह्मणायददौदानंरोगान्निर्मुक्ततांव्रजेत् ॥ इत्युत्तराभाद्रपददानशांतिविधिः ॥ २६ ॥

भाषा—उत्तराभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराभाद्रपदकी

ाते लिखतेहैं. वायुपुराणमें लिखाहै. देवके दोषसे उत्तराभाद्र-
द नक्षत्रमें सातदिनतक रहनेवाला रोग उत्पन्न होताहै.
तद्दोषके शमनके वास्ते १ सेर वजनका ताम्रपात्र लेके उसमें
चणोंकी दाल १ सेर भर घालके उसपर १ तोला सुवर्ण रखके
पीला वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके पात्र आच्छादन करदेवे. फिर
पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके सातवार नमस्कार करके वह
सब वस्तु और सुवर्णकी मुद्रा ब्राह्मणको दे देवे.यह दान देनेसे रोगी
रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इत्युत्तराभाद्रपदशांति विधिः ॥ २६ ॥

अथरेवत्यांरोगसंभवेरेवतीदानशान्तिर्लिख्यते ॥
उक्तंचब्रह्मयामले॥रेवत्यांजायतेरोगःपर्वदोषसमुद्भ-
वः ॥ षष्ठिवासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥१२३॥
रक्तवर्णमयींधेनुंपीतवस्त्रेणछादिताम् ॥ कांस्यपात्रं
शुभंकार्यंपंचप्रस्थप्रमाणकम् ॥ १२४ ॥ कर्षमात्र
सुवर्णस्यपूष्णोमूर्तिंसमाचरेत् ॥ मंत्रंपात्रसमंतात्तु
चंदनेनलिखेद्बुधः ॥ १२५ ॥ मंत्रः ॥ पूषणेरेवती-
शायदेवदेवायतेनमः ॥ षष्टिवासरजांबाधांनिवारय
कृपाकर ॥ १२६ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादद्याद्दानं
द्विजातये ॥ रोगीनिर्मुक्ततांयातिपरमायुःसजीव-
ति॥१२७॥नक्षत्रसप्तविंशत्यांरोगेचशांतिमाचरेत्॥
दानंदद्याद्विधानेनरोगान्निर्मुक्ततांययौ॥१२८॥ऋक्षे
षुवर्तमानेषुनित्यंदानंकरोतियः ॥ रोगंकदापिनो
पश्येन्नीरोगःसर्वदाभवेत् ॥ १२९ ॥ आयुरारो-

ग्यतांयातिकुटुम्बःसौख्यमाप्नुयात् ॥ १२० ॥ इति सप्तविंशातिनक्षत्रेपुरोगसंभवेसप्तविंशातिनक्षत्रदानशांतिविधिःसमाप्तोऽभूत् ॥ २७ ॥

भाषा—रेवती नक्षत्रमें रोग होनेसे रेवतीकी शांति लिखते हैं. ब्रह्म यामलमें लिखा है. पर्वदोषसे रेवती नक्षत्रमें होनेवाला रोग ६० दिनतक तकलीफ देनेवाला होता है. तद्दोषकी शांतिके वास्ते लालरंगकी गौ लाके पीला वस्त्रसे उसको आच्छादित करके ५ पांचसेर वजनका कांसीका पात्र लेके उसमें १ तोला सुवर्णकी मूर्ति पूषा देवकी बनवाके स्थापन करदेवे फिर उस पात्रके चारों तरफ चंदनसे मंत्र लिखके उत्तरको मुख करके ब्राह्मणको दान दे देवे। यह दान करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होके बहुत दिनतक जीताहै इन सप्तविंशति २७ नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें रोग हो उसी नक्षत्रकी शांति करनेसे रोगी तत्काल रोगसे मुक्त होजाता है और जो पुरुष नित्य नक्षत्रोंका दान करता रहता है उसके किसी समयमें रोग नहीं होता है उसकी आयु नीरोग होती है कुटुंबमें सुख रहता है ॥ २७ ॥

इति सप्तविंशतिनक्षत्राणां शांतिविधिःसमाप्तोऽयम् ॥

समाप्तोऽयंग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—खेतवाड़ी—बंबई.